झारखण्ड सरकार

IFAD
Investing in rural people

स्वयं सहायता समूह

आओ बहनों मिलायें हाथ
सफलता की ओर बढ़ें मिलकर साथ

शीर्षक/कार्य : किराना दुकान एवं बकरी पालन

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
मनोती मुर्मू (गुलाबबाहा स्वयं सहायता समूह)	गोलपुर	गोलबंधा	मसलिया	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

मनोती मुर्मू समूह से जुड़ने से पहले प्रतिदिन की मजदुरी कर 125/– रूपये का अर्जन करती थी। रोजगार के अभाव में पश्चिम बंगाल पलायन कर जाती थी। बच्चे नियमित रूप से विद्यालय भी नहीं जा पाते थे। शिक्षा का स्तर अत्यंत निम्न कोटी का था। कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य सभी क्षेत्रों में जीवन स्तर काफी दुखःदायी था। समूह में नहीं बैठने से मनोती मुर्मू में नेतृत्व क्षमता का विकास नहीं हो पाया था। विकास की विचारधारा में आने के लिए JTDS के तत्वाधान में बनाये गये समूह से छोटे–छोटे ऋण लेकर अपना कार्य संपादित करना एवं एकता का विकास हुआ ।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

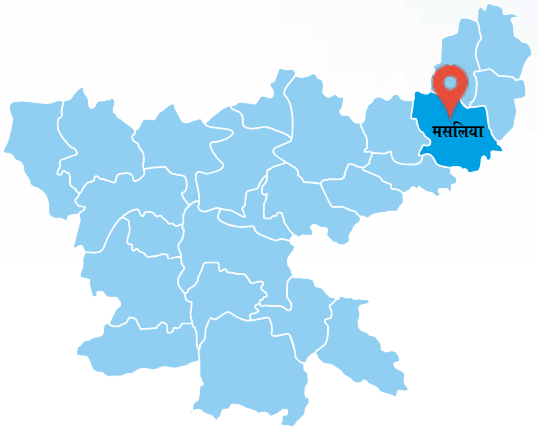

JTDS के द्वारा बनाये गये समूह से जुड़ने के बाद मनोती मुर्मू ने 4,000 रूपये ऋण लेकर एक किराना दुकान खोला है। इसके साथ 5,000 रूपये में तीन बकरियों का क्रय कर के सभी बकरियों का भली–भांति पालन–पोषण करने लगी। एक वर्ष के भीतर ही दो बकरी एवं तीन बकरे का बच्चा प्राप्त हुआ । त्योहार के समय इनका विक्रय करके कुल 9,000 रूपये का आय प्राप्त कर आत्मविश्वास बढ़ा। JTELP परियोजना के अंर्तगत बकरी शेड के साथ–साथ 5 बकरी एवं 1 बकरा उपलब्ध करवाया गया। बकरियों की जानलेवा बिमारियों से बचने के लिए पूरे मनोयोग के साथ चिकित्सा करवाकर बकरियों को जीवित रखा गया ।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

JTDS के द्वारा बनाये गये समूह से जुड़ने के बाद मनोती मुर्मू ने 4,000 रूपये ऋण लेकर एक किराना दुकान खोला है। इसके साथ 5,000 रूपये में तीन बकरियों का क्रय कर के सभी बकरियों का भली–भांति पालन–पोषण करने लगी। एक वर्ष के भीतर ही दो बकरी एवं तीन बकरे का बच्चा प्राप्त हुआ । त्योहार के समय इनका विक्रय करके कुल 9,000 रूपये का आय प्राप्त कर आत्मविश्वास बढ़ा। श्रज्म्स्च परियोजना के अंर्तगत बकरी शेड के साथ–साथ 5 बकरी एवं 1 बकरा उपलब्ध करवाया गया। बकरियों की जानलेवा बिमारियों से बचने के लिए पूरे मनोयोग के साथ चिकित्सा करवाकर बकरियों को जीवित रखा गया ।

शीर्षक/कार्य : बकरी पालन

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
जोबाबाहा स्वयं सहायता समूह	भिलाईघाटी	टेन्जोर	गोपीकांदर	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

समुह से जुड़ने से पूर्व सभी दीदियां के आय का स्त्रोत नहीं होने के कारण सोचती थी कि किस प्रकार अपने जीवन में सुधार किया जाए। बच्चे का भविष्य किस प्रकार बनेगा। कुल मिला कर आर्थिक, मानसिक एवं सामाजिक परिस्थितियां काफी विपन्न थी। समुह बनने के बाद जीवन परिवर्तित हो गया। सोचने समझने एवं विचार का स्तर काफी निम्न था। समूह में जाने के बाद बचत के साथ–साथ आपसी एकता में बढ़ोतरी हुई।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

समुह से जुड़ाव के बाद जीवन में आष्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। JTDS कर्मियों ने ग्राम में पहुचंने के बाद समूह निर्माण कार्य पर जोड़ दिया। समूह बनने के बाद बचत की आदत ने काफी योगदान किया। श्रज्वै के द्वारा व्यवसाय कर आय सृजन के लिए 20,000 रूपये की बीजपूंजी प्रदान की गई। बचत एवं बीज पूंजी के रूपयों से बकरियों का क्रय किया गया। JTDS के द्वारा सही प्रकार से बकरियों के पालन–पोषण के लिए बकरी–पालन का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। प्रशिक्षण से समूह के लोग बकरी–पालन में दक्ष होते गये। इस प्रकार आय सृजन होता चला गया।

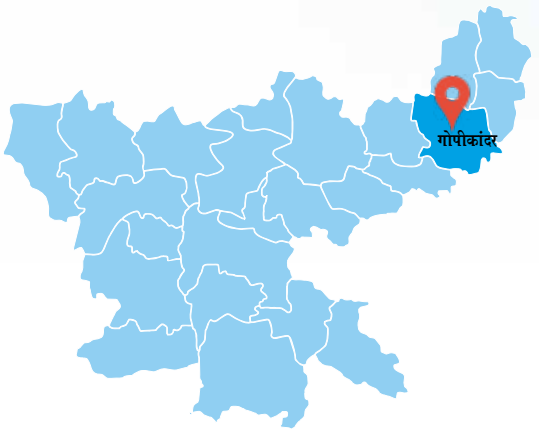

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

समुह से जुड़ाव के बाद जीवन में आष्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। JTDS कर्मियों ने ग्राम में पहुचंने के बाद समूह निर्माण कार्य पर जोड़ दिया। समूह बनने के बाद बचत की आदत ने काफी योगदान किया। JTDS के द्वारा व्यवसाय कर आय सृजन के लिए 20,000 रूपये की बीजपूंजी प्रदान की गई। बचत एवं बीज पूंजी के रूपयों से बकरियों का क्रय किया गया। JTDS के द्वारा सही प्रकार से बकरियों के पालन–पोषण के लिए बकरी–पालन का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। प्रशिक्षण से समूह के लोग बकरी–पालन में दक्ष होते गये। इस प्रकार आय सृजन होता चला गया।

शीर्षक/कार्य : सुकर पालन एवं खेती

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
लिबंती सोरेन (अपुलबाहा स्वयं सहायता समूह)	दतियारपुर	हथियापाथर	मसलिया	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

भोजन, वस्त्र एवं आवास की मुलभूत सुविधाओं का घोर अभाव था। जीवन की स्थिति इतनी विकट थी कि रोजगार के अभाव में प्रवास कर मजदुरी करना पड़ता था। किसी प्रकार 1,500 रूपये प्रतिमाह कमाकर अपने एवं अपने बच्चों का भरण–पोषण करती थी । JTDS से जुड़ कर समूह बना कर अर्थोपार्जन करने का सफल प्रयास बाद में किया गया। आपस में विचार–विमर्श, बचत, लेन–देन एवं जानकारी को बताने का कोई प्रयास नहीं होता था। समूह बनने के बाद इन सभी गुणों का सर्पूण मात्रा में विकास हुआ।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

समूह से जुड़ाव के बाद खाद, बीज इत्यादि के क्रय के लिए लिबंती सोरेन के लिए अपुल बाहा स्वयं सहायता समूह से 4,500 रूपये का कर्ज लेकर खरीफ के मौसम में स्वयं खाद, बीज खरीद कर 41 क्विंटल धान का उपज प्राप्त किया गया । 10 क्विटल बेच कर 12,600 रूपये का आय प्राप्त किया गया । श्रज्वै के द्वारा प्राप्त कृषि प्रशिक्षणों ने भी धान एवं अन्य बीजों के रोपण कर अधिकाधिक आय सृजन करने में महत्वपुर्ण योगदान दिया ।

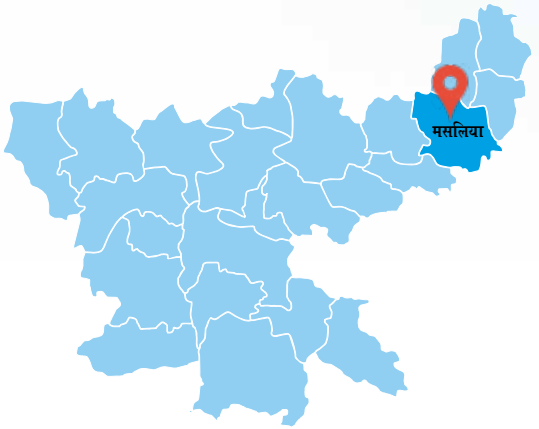

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

खरीफ मौसम में धान की उपज उपजा कर एवं प्राप्त कृषि प्रशिक्षणों से मकई का बीज एवं खाद प्राप्त कर अपने पति के साथ पूर्ण मनौयोग से खेती कर, उपज उपजा कर, उनका विक्रय कर अधिक से अधिक आय प्राप्त किया गया। जीवन स्तर में आश्चर्यजनक सुधार आया। प्राप्त आय से एक किराना दुकान खोल कर 6,000 रूपये प्रतिमाह आय सृजन किया जा रहा है।

शीर्षक/कार्य : किराना दुकान

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सोनाली मुर्मू (चांद-भैरव स्वयं सहायता समूह)	सिगारी	कोलारकोन्दा	मसलिया	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

समुह से जुड़ने से पूर्व आर्थिक स्थिति खराब थी। कृषि कार्य कर किसी प्रकार भोजन, वस्त्र, आवास की व्यवस्था करने का अथक प्रयास करती थी, उसमें भी सफलता प्राप्ति नहीं हो पाती थी। जीवन–यापन साधनो का घोर अभाव था। कुछ सदस्य पूर्ण रूप से खेती–बाड़ी छोड़ कर कुछ भी नही करते थे। समूह से जुड़ने से पुर्व दीदी लोग आपस में बैठ कर विचार–विमर्श भी नहीं करती थी। बचत की आदत भी नहीं थी। समूह बनने के बाद बचत के साथ आपसी लेनदेन एवं एकता में वृद्धि हुई। जीवन में एक नई आशा संचार हुआ।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

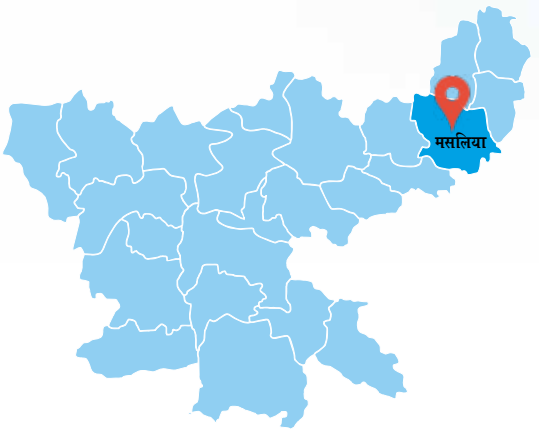

समूह से जुड़ कर नियमित बैठक प्रारंभ हुई। नियमित बचत एवं आपसी लेन–देन से महाजनों से मुक्ति मिली। समूह के प्रयास से समूह के खाते में शौचालय की राशि दी गई, जिससे सभी दीदियों के घर का शौचालय का निर्माण में काफी योगदान रहा। साथ ही 5,000 रूपये ऋण लेकर और निजी जमा पुंजी 6,000 रूपये जोड़ कर अपने ग्राम में किराने का दुकान दीदी द्वारा खोला गया। आज प्रतिमाह 3,500 रूपये की आय प्रारंभ हो चुकी है एवं छः माह पुर्व लिए गये ऋण को हटा कर ब्याज एवं ऋणमुक्त हो चुकी है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

बचत एवं ऋण लेकर किए गये किराना दुकान से होने वाली 3,500 रूपये की प्रतिमाह की आमदनी भी सोनाली मुर्मू को एक नई पहचान बना कर गांव में एक मिसाल के रूप में प्रतिष्ठित की है। इस प्रकार आगे भी नये–नये समान को दुकान में लाकर एवं उनका भली–भांती विक्रय कर अधिकाधिक धनोपार्जन कर जीवन के क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास है।

शीर्षक/कार्य : पत्तल निर्माण एवं मुर्गी पालन

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
गुलाबबाहा स्वयं सहायता समूह	अमरपानी	टेन्जोर	गोपीकांदर	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

समुह से जुड़ने से पूर्व आर्थिक स्थिति दयनीय थी। सभी सदस्यों की पत्थर तोड़ कर किसी प्रकार भोजन, वस्त्र, आवास की व्यवस्था करने का अथक प्रयास करती थी, उसमें भी सफलता प्राप्ति नहीं हो पाती थी। जीवन–यापन साधनो का घोर अभाव था। समूह से जुड़ने से पूर्व दीदी लोग एक साथ नहीं बैठती थी। आपस में सुख–दुख नहीं बांटा करती थी। बचत कर किस प्रकार छोटे–छोटे कष्टों से निवारण कर मुक्ति प्राप्त की जाए, यह नहीं समझ पाती थी। समूह बनाने के उपरांत इस विषय पर विचार कर आगे बढ़ने का प्रयास किया गया।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

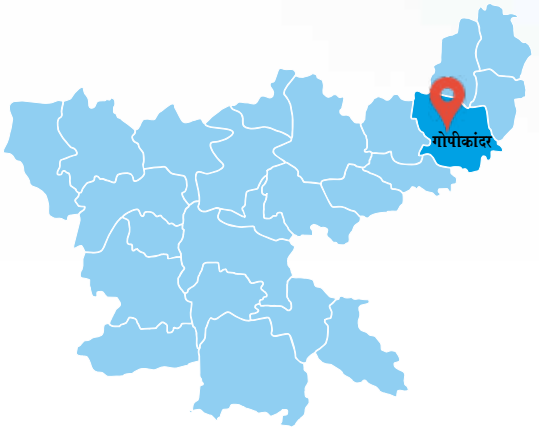

समुह बनने के बाद लोग बचत करने लगे। Internal-Loaning से आय का सृजन होने लगा। बीज–पुंजी 20,000 रूपये एवं प्रतिमाह किए गये बचत को मिला कर 5,100 रूपये अर्थात 25,100 रूपये से पत्तल का निर्माण एवं मुर्गी पालन प्रारंभ किया गया। दोनो गतिविधियों से आय का सृजन कर आत्मनिर्भरता में मदद मिली।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

बचत एवं बीज–पुंजी मिला कर जमा किए गये कुल 25,100 रूपये से जो पत्तल निर्माण एवं मुर्गी पालन का व्यवसाय शुरू किया गया। उससे प्रति सदस्य 200 रूपये प्रतिमाह की आमदनी हो रही है। सब्जी का उत्पादन कर उसका सही जगह विक्रय कर आय सृजन कर आगे भी ज्यादा से ज्यादा मुद्रा अर्जन करने का प्रयास निरंतर जारी है।

शीर्षक/कार्य : कृषि-उत्पादन

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
बसंती हेम्ब्रम (जोबाबाहा सपोर्ट स्वयं सहायता समूह)	आनंदपहाड़ी	हारोरायडीह	मसलिया	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

समुह से जुड़ने से पूर्व सभी दीदीयाँ पूर्ण रूप से खेती–बाड़ी पर ही आश्रित थी, जिससे उनका कुछ भी धन का अर्जन नहीं हो पाता था। पढ़ाई–लिखाई का स्तर भी इतना निम्न था कि जिसका वर्णन कर पाना भी मुश्किल है। जैसे–तैसे जीवन–यापन करते थे। मानसिक, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन काफी बुरा था। सही प्रकार से हिन्दी भी नहीं बोल पाते थे। स्थितियां इतनी विकट थी कि लोग आगे बढ़ने का प्रयास नहीं कर पाते थे। बचत एवं नेतृत्व क्षमता का घोर अभाव था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

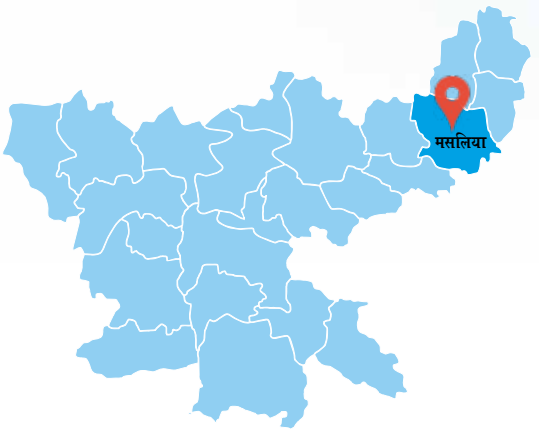

समुह बनने के बाद दीदीयों के द्वारा आय–सृजन के लिए सुकर–पालन कर धनोपार्जन का प्रयास किया गया। सुकर–पालन से आर्थिक स्तर काफी उच्च स्तर का होता चला गया। समूह में प्रतिमाह बचत करने से एक मिनी बैंक की परिकल्पना को भी आकार मिला। आपस में बचत कर 10,000 रूपये एवं श्रज्यै से बीज–पूंजी के रूप में 10,000 रूपये अर्थात कुल 20,000 रूपये से पांच सुकर क्रय करके आगे भी सुकर के बच्चो को बेच कर काफी आय का सृजन किया गया। इस प्रकार आय में लगातार वृद्धि होते चली गई।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

सुकर पालन, आर्थिक बचत, कई प्रकार के कृषि कार्य आदि कर अधिकाधिक आय का सृजन सभी दीदीयां करने लगी। इससे वे सब अपने जीवन में काफी खुशहाल जीवन व्यतीत करने लगी। बच्चे की पढ़ाई तथा दवा का खर्च स्वयं उठाने लगी, जिसके लिए उसे पहले महाजन के पास जाना पड़ता था। भविष्य में एक टेंट हॉउस खोल कर ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाना उनका लक्ष्य है।

शीर्षक/कार्य : समूह ने सिखया आत्मनिर्भर बनने का तरीका

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
किरण ज्योति	डुंम्बो	डुंम्बो	भरना	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

किरण स्वयं सहायता समूह डुम्बो गांव में है जो प्रखण्ड मुख्ययलय से 8 किलोमीटर कीदूरी पर स्थित है जहां अधिकतर आदिवासी लोग निवास करते है। इससे पहले इन लोगों को मालूम नहीं था कि इस तरह से कोई समूह बनाकर कार्य किया जा सकता है। SHG के गठन से पहले ये महिलाएँ अपने तरिके से खेती–बारी एवं दूसरे राज्य पलायन कर अपना जीवन यापन करती थी। इस समूह की महिलाओं का शैक्षणिक योग्यता नही के बराबर है। समूह में जूड़ कर अधिकतर सदस्य हस्ताक्षर करने सिखी हैं। इनकी परिवारिक खाना–पीना किसी तरह जुगाड़ हो पाता था। अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई भी नहीं हो पाता था क्योंकि उन्हें पता ही नहीं था कि शिक्षा का क्या महत्व है और बच्चों को गाय–बैल, बकरी चराने का काम में व्यस्त कर देते थे।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

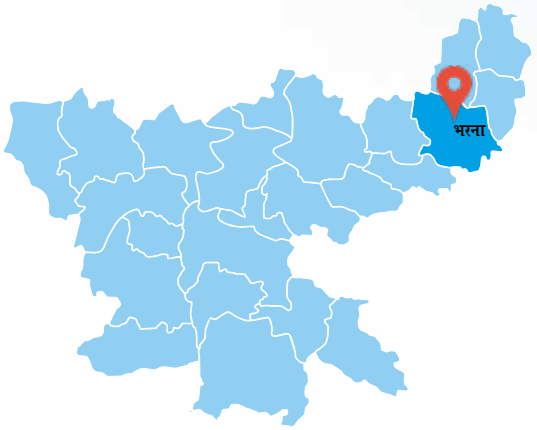

वर्ष 2015 में JTDS परियोजना जब भरनो प्रखण्ड में कार्य करने लगा तो इन महिलाओं को समूह – (महिला मंडल) के बारे एवं फायदे के बारे में जानकारी दिया और इनका गठन कर तमाम जरूरत का सामान मुहैया करवाया जैसे – समय–समय पर विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण देकर जानकारी दी गई। बैठक रजिस्टर, कैश–लेजर, व्यक्तिगत पासबुक इत्यादि के बारे में जानकारी दिया गया। किरण ज्योति स्वयं सहायता समूह में 14 सदस्य हैं। इनका गठन 2015 ई. मे JTDS के माध्यम से किया गया। गठन के प्रश्चात् महिलाएँ सप्ताहिक बैठक में 10 रूपया करके प्रत्येक सप्ताह जमा करने लगी जो आज स्वयं का रूपया जमा पूँजी बन कर तैयार है। इस जमा रूपया को आपस में तथा गांव वालों को जरूरत के अनुसार ऋण बांटती है जिससे व्याज के तौर पर आय प्राप्त होता है। समूह समय से ऋण लेकर बड़े पैमाने पर व्यवसायिक खेती करने लगे हैं। JTDS की ओर से GSPEC को सुकर शेड निर्माण एवं 10 सुकर खरीदने हेतु राशि भी दिया गया था जिसमें से 6 सुकर मर गया, 4 बचा हुआ सुकर मर गया, 4 बचा हुआ सुकर को इन्होने मिलकर सेवा की और 15 सुकर अभी तक बेची । जिससे लगभग 65,000/– रू. की इनकम ले चुकी है। अभी इनके पास 3 मादा, 1 नर और 18 बच्चे यानी कुल 22 सुकर है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

JTELP के सहयोग से प्राप्त मार्ग दर्शन एवं प्रशिक्षण से महिलाओं में आत्म विश्वास, मनोबल, एवं आर्थिक निर्भरता में बद्धि हुई है। आपसी ताल–मेल एवं एकता समूह सदस्यों के बीच है। इनमें समूह को आगे ले जाना इनका मुख्य उद्धेश्य है। समूह का भविष्य की कार्ययोजना कृषि कार्य को वैज्ञानिक तरीके से आगे बढ़ाने एवं धान मिल खोलने के लिये कल्याण विभाग से मिलने वाले सस्ते दर पर व्याज का लोन हेतू आवेदन जमा की हुई है।

शीर्षक/कार्य : टेन्ट व्यसाय

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
चंचल स्वयं सहायता समूह	डुम्बो	डुम्बो	भरनो	गुमला

01 पुर्व की स्थिति

चंचल स्वयं सहायता समूह में कुल 12 सदस्य हैं, इस समूह का गठन 2015 ई. में हुआ है। समूह गठन से पहले यह समूह की महिलाओं की स्थिति काफी दयनिय बताया जाता है। आज से चार साल पहले ये महिलाएँ अपने तरिका से खेती–बारी करके अपना जीवन यापन करती थी। साल के 6 महिने ये अपने परिवार एवं बच्चों को साथ लेकर दूसरे राज्य ईटा–भटठा पलायन कर जाती थी, वहाँ इनको इनके मेहनत के अनुसार काफी कम रकम दिया जाता था और मनमाना काम लिया जाता था। सरदार भट्ठा मालिक से पहले ही 1 से 2 लाख रूपया एडवांस (अग्रीम)लिया होता था जिसके एवज में इनकी मेहनत की कमाई काट ली जाती थी। जानकारी के आभाव में सही तरीके से खेती नहीं कर पाते थे। पूँजी एवं सिंचाई के साधन का भी अभाव था। गरीब एवं असहाय जीवन यापन करते थे।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

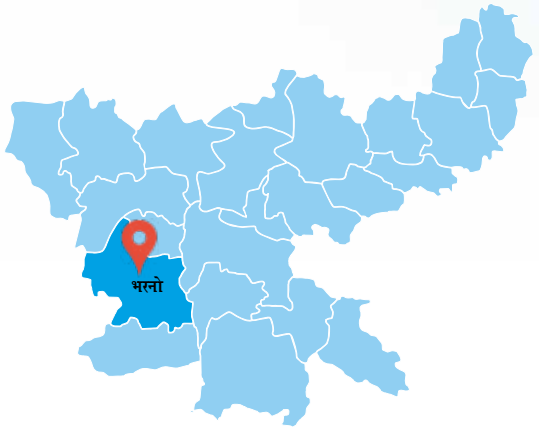

2015 ई0 में झारखण्ड ट्राईबल डवलपमेंट सोसाईटी की JTELP परियोजना को लेकर इनके गांव में कदम रखा और इन्हें संगठित होने की बात बताई। श्रज्वै के कथनानुसार ये महिलाएँ एक समूह बनाई जिसका नाम चंचल स्वयं सहायता समूह है। श्रज्वै की सहयोगी संस्था ैटच इनकी शुरूवाती बैठक से इनकी गाईडिंग किया और सहयोग भी किया समूह के सभी लेखा संधारण एवं नियमित बैठ करना सिखाया गया। विभिन्न तरह के प्रशिक्षण दिये गये। समूह की कुल हिसाब –किताब के लिए कैश–लेजर पुस्तिका भी उपलब्ध कराया गया। JTDS इस समूह को बीज पूँजी के रूप में 10,000/–रू एवं बचत राशि 40,000/– रू0 दोनों को मिलाकर इन लोगों ने टेंट का समान खरीदी जैसे–बाल्टी, कुर्सी, डेग, ड्रम, एवं गांव में होने वाले कार्यक्रम भड़ा में देकर व्यवसाय कर रहे हैं।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

आज यह समूह गांव की चर्चित समूह बन गयी है अपना जमा पूँजी का उपयोग ऋण वितरण के तौर पर करके व्याज तो कमाती है लेकिन लोगों की काफी भलाई भी कर रही है। लोगों को यहां से कृषि कार्य, शादी–विवाह, बच्चों की पढ़ाई–. लिखाई इस तरह की अन्य कामों में समूह से कम व्याज–दरों में ऋण मिल जाता है और अपना काम असानी से कर लेते हैं। सदस्यों मे जागरूकता एवं जानकारी बढ़ी है सक्षम हो गई है। आने वाले निकट भविष्य में ये अपना टेन्ट हाउस को बड़ा करने का कार्य योजना है इसके लिए कल्याण विभाग से दिये जाने वाले सस्ते व्याज–दर वाली लोग के लिए भी आवेदन जमा की गई है। सुखन्ती उराँव : 7070366199

शीर्षक/कार्य : समूह ने दिखाया जीने का रास्ता

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
चाहत स्वयं सहायता समूह	डोम्बा	डोम्बा	भरनो	गुमला

01 पुर्व की स्थिति

चाहत स्वयं सहायता समूह डोम्बा गांव में है जो प्रखण्ड मुख्यलय से 18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जहां मिश्रित जाति के लोग निवास करते है। चाहत SHG का गठन 17.01.2016 को हुआ है। इस समूह में 12 सदस्य हैं। इस समूह के सभी सदस्य ST और SC गरीब से आते हैं। समूह की सदस्यों का कोई अपना रोजगार नहीं था। इस समूह स्थिति समूह में जुड़ने से पहले बहुत ही दैयनीय थी एवं एक मात्र कृषि पर आधारित थे। खाली समय में रोजगार के लिये बाहर पलायन करना पड़ता था। कुछ भी परिस्थिति में हमेशा दूसरों के आगे हाथ फैलाना पड़ता था। समूह के कुछ दीदी का जीवन बहुत ही खराब था उन्हें हमेशा साहुकारों ठेकेदारों से ज्यादा व्याज पर ऋण लेकर अपना आवयश्कताओं को पूरा करते थे।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

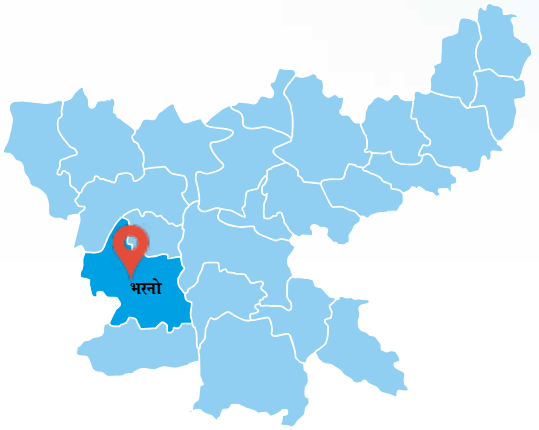

डोम्बा गांव में JTELP योजना के तहत ग्राम सभा कर समूह संगठन एवं बचत की जानकारी दी गई, समूह के नियम एवं लेखा–संधारण के बारे में JTDS द्वारा प्रशिक्षण दिया गया एवं प्रदान के कार्यक्षेत्र में शैक्षणिक भ्रमण करवाया गया। इसके पश्चात कई दीदीयों में जागरूकता एवं बदलाव आने से समूह में जुड़ने लगे। समूह में जुड़कर आपसी लेन–देन की शुरूआत हुई, संगठन से फायदा लेने लगे जैसे – 1. संगीता देवी समूह से 26000 रू. लॉन लेकर अपना और अपने पति का खुद का बिजनेस। संगीता देवी मछली का बिजनेस बाजार–बाजार जाकर बेचने लगी। उसका पति मुर्गी का व्यपार शुरू किया। लॉन में ऑटो खरीद कर ऑटो में ही दोनों ने अपना बिजनेस को आगे बढ़ाया।

2. संतरी देवी : समूह से लॉन लेकर अपने बेटे को बजार में मुर्गी का बिजनेस करवाई। 30,000/–रू. लॉन ली है।

3. सीलो देवी : समूह से 40,000/– लॉन लेकर बकरी खरीद–बिक्री तथा सुकर पालन का बिजनेस कर अपना अजीविका को बढ़ा रही है।

4. सारो देवी : समूह से 26,0027/– रू. लॉन लेकर बेटी की शादी कराई, और धीरे –धीरे चुकता कर रही है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस तरह समूह से जुड़कर समूह सदस्यों में एकता एवं संगठन में मजबूती हुई। परिवार की स्थिति में सुधार हुआ, आत्मनिर्भरता एवं आय में वृद्धि हुई है। गांव में रहकर रोजगार का सृजण कर रहे है उन्हें अब किसी के आगे झुकना नहीं पड़ता है। अपना खर्च क लिए दूसरों पर अश्रित नहीं रहती हैं। अपना और अपने परिवार का आजीविका अच्छी तरह से चला रही है। भविष्य के कार्य योजना व्यक्तिगत रूप से बड़े पैमाने पर आयसृजण करने का निर्णय समूह ने लिया है ताकि बच्चों की पढ़ाई, परिवार की आय दुगुणी कर समूह के माध्यम से गांव में एक मॉडल तैयार करना है।

शीर्षक/कार्य : सफलता की ओर बढ़ते कदम

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
चांदनी स्वयं सहायता समूह	डीम्बो	डीम्बो	भरनो	गुमला

01 पुर्व की स्थिति

JTDS द्वारा समूह का गठन 11.10.2015 में हुआ । इस समूह में 10 सदस्य है ST,SC & OBC हैं। जिसमें समूह की सदस्यों की स्थिति बहुत ही खराब थी। समूह मे जुड़ने से पहले समूह, क्या होता है, बचत एवं बैठक की जानकारी नहीं थी। आपस में मेल–मिलाप नहीं थी। ये महिलाएं अपने घर तक ही सीमित थी। घर से बाहर आना–जाना नहीं करती थी। पैसे की कमी थी। गांव एवं परिवार में विकास की बातों से अनभिज्ञ थी। लेकिन जब से संस्था आई। समूह बनाने के लिए प्रेरित किये, अपना परेषानी को खुद दूर के लिये समूह के माध्यम से बचत करने एवं उसके उपयोग की जानकारी दी गई क्योंकि वे पहले कोई साहुकार, ठेकेदार से अधिक व्याज में कर्ज लेकर समस्या का हल करते थे। कई बार उन्हे समय से ऋण नहीं मिलता था। शिक्षा, जागरूकता एवं एकता का आभाव था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

वर्ष 2015 में समूह गठन के बाद सदस्यों को समूह से संबंधित नियम एवं आयसृजन कार्यों का प्रशिक्षण दिया गया, नियमित रूप से बैठक एवं बचत करवाया गया। आपसी तालमेल हिसाब–किताब एवं जागरूकता किया गया। समूह सदस्यों को संगठन एवं एकता से रहने के लिये सिखाया गया। बाहर चल रहे सरकारी योजनाओं एवं कार्यों का शैक्षणिक भ्रमण करवाया गया। दूसरे जगह किये गये कार्यों की जानकारी मिलने के बाद सदस्य आपसी लेन–देन शुरू किये। जिस कारण उनमें क्षमता विकास होने लगा। जागरूकता बढ़ने लगी। आपसी लेन–देन से आर्थिक समस्याओं का समाधान स्वयं करने लगे। कर्ज के लिये बनिया, ठेकेदारों, साहुकारों से छुटकारा मिलने लगा।

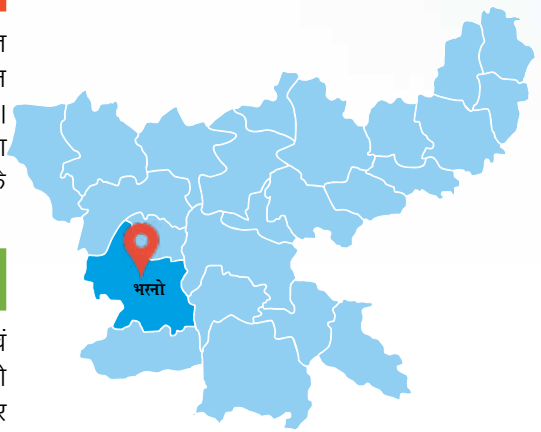

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

समूह सदस्यों के बीच आपसी ताल–मेल बढ़ने लगा। एक–दूसरे का सहायता करने लगे। उनके बीच में एकता एवं जागरूकता बढ़ी। समूह के द्वारा परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रही है। समूह से कम व्याज दर पर आपसी लेन–देन में बृद्धि हुई है जिससे समूह कोश में बृद्धि हुई है। समूह के माध्यम से निम्न सदस्यों को रोजगार का अवसर मिला। जो इस प्रकार है–

1. निरज देवी हमेशा ठिकेदार साहुकार से लॉन लेकर अपना बिजनेस करती थी। लेकिन समूह में जुड़ने के बाद ये सभी परेशानी दूर हो गई।समूह से ऋण लेकर 25000 रू. से अपने बिजनेस को बढ़ा रही है।
2. सोमारी देवी : ये घर की मुख्या है। पति मर गए है। समूह से लॉन लेकर 20,000/'– रू. का महुंआ लेकर अपने घर में ही खरीद–बिक्री और महुंआ का बिजनस कर रही है। समूह में 2 प्रतिषत व्याज लॉन ली है।
   मैजून खातुन : समूह से 30,000/–रू. लॉन लेकर कपड़ा का बिजनेस कर रही है।
3. सोनिया खातुन : समूह से 20,000/–रू. लॉन लेकर कपड़ा का दुकान को और बढ़ा ली है।
4. अखतरी खातुन :समूह से 30,000/–रू. लॉन लेकर कपड़ का बिजनेस कर रही है और एक ऑटो भी खरीद ली है।
5. सावित्री देवी – 20,000/–रू. लॉन लेकर अपने घर को बनवाई और अपना परेशानी को दूर की।
6. सावित्री देवी – 20,000/–रू. लॉन लेकर अपने घर को बनवाई और अपना परेशानी को दूर की।

शीर्षक/कार्य : महिलाओं की व्यवसायिक सफलता का कहानी

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
श्रीमति महिला समिति	बादलकोचा	केन्दुआ	डुमरिया	पूर्वी सिंहभूम

01 पुर्व की स्थिति

ग्राम बादलकोचा के लोगों की आय का एकमात्र जरिया कृषि रहा है। उक्त ग्राम में बिजली और सड़क का अभाव भी उनके आय बढाने में बाधा ही रही है। महिलायें कृषि कार्य के उपरांत ज्यादातर बेकार ही बैठी रहती थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

JTELP अन्तर्गत गठित श्रीमति महिला समिति का गठन 06.07.2015 में किया गया। जिसमें 13 सदस्य है। शुरुआती दौर पर उनके द्वारा बचत की गई और उससे ऋण लेन देन का कार्य किया। फिर वर्ष 2018 में JTELP सहयोग से सूकर प्रजनन केन्द्र स्थापित की गई। जिस अन्तर्गत समूह को सूकर पालन पर प्रशिक्षण दिया गया तथा उनका परिभ्रमण (मगचवेनतम)पास के प्रखंड राजनगर के अन्य महिला समितियों के द्वारा किए गए कार्य का अवलोकन कराया गया।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

राजनगर से लौटने के उपरान्त उनके द्वारा फिर पीछे मोड़कर नहीं देखा। सभी सदस्य बारी –बारी से सूकर प्रजनन केन्द्र को सफल बनाने में जुड़ गए, परियोजना से उन्हें 5 सूकरी एवं 1 समूह प्रदान किया गया था , जिससे छः माह बाद उनका लालन पोषण उपरांत एक सूकरी 11 बच्चे जन्म दिए। इस तरह हरेक सूकरी से बच्चे प्राप्त हुए जिसे वे लोग आस–पास के ग्राम तथा बगल राज्य उड़ीसा से भी क्रयदार आकर बच्चे क्रय करते है। आजकत उनके द्वारा कुल 26 बच्चे ⁄3000 = 78000 रु0 कमाये है। जिसमें से लगभग 15000रु0 चारा एवं दवाई में लगाए। इस तरह उनके द्वारा कुल.63000 शुद्व लाभ प्राप्त हुआ। आगे उनकी सोच है कि वे इसको बढाएगें और जो पुराने सुकर सुकरी है उन्हें बेचकर और नए बच्चे है उससे फिर नई तरीके से प्रजनन केन्द्र को सफल बनाएगें। जिस अन्तर्गत के JTDS के सहयोग से चारा बनाने प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। इस कार्य को एक साथ मिलकर करने से समूह में एक अजब से एकता कायम हुई जिसकी निशानी है कि समूह के तीनो पदाधिकारियों द्वारा प्रखंड विकास पदाधिकारी के पास जाकर गाँव में बिजली लाने की कार्य में सफलता प्राप्त की गई हैं।

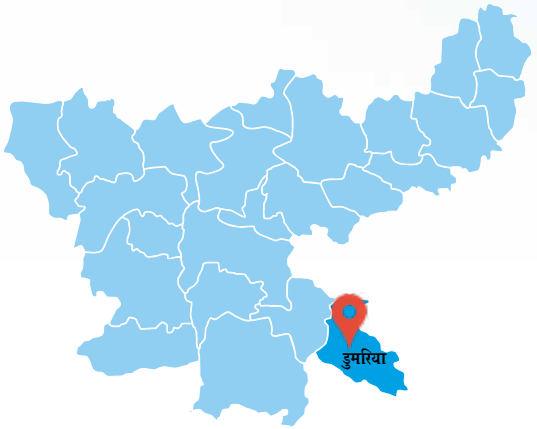

शीर्षक/कार्य : बकरी पालन से महिलाओं की आर्थिक सुदृढ़ समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सारी सरना धरम महिला समिति	रोहड़जोडी	नारदा	पोटका	पूर्वी सिंहभूम

01 पुर्व की स्थिति

गाँव में महिला अलग अलग रहती थी, एक दूसरे को जरूरत पड़ने पर पर भी मदद नही करते थे। पैसा की जरूरत पड़ने पर बाहरी लोगों से पैसा का लेन देन करते थे। महिलाओं के बीच आत्मविश्वास एवं दूरदर्शिता की कमी दिखाई देती थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

पूर्वी सिंहभुम जिला अन्तर्गत पोटका प्रखंड में गाँव रोहड़जोडी में JTDS JTELP परियोजना के अन्तर्गत आदिवासी महिलाओं द्वारा एक महिला समिति का गठन दिनांक 1.10.2015 को किया गया। महिला समिति का नाम सारी सरना धरम महिला समिति रखा गया। सारी सरना धरम महिला समिति में कुल 14 सदस्य है और प्रत्येक सदस्य 10 रु० प्रति सप्ताह की हिसाब से अब तक का कुल बचत 26880 रु0 तथा कुल आंतरिक ऋण लेन देन 18420 रुपया है। वित्तिय वर्ष 2015–16 में IGA योजना के तहत समिति को JTDS के द्वारा 1 युनिट बकरी शेड प्रदान किया गया। जिसमें बकरी 8 तथा बकरा 02 GSPEC द्वारा क्रय करके समिति को दिया गया था। समिति के सभी सदस्यों द्वारा नियमित बैठक एवं JTDS से प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर बकरी का देख–रेख एवं पालन किया गया।

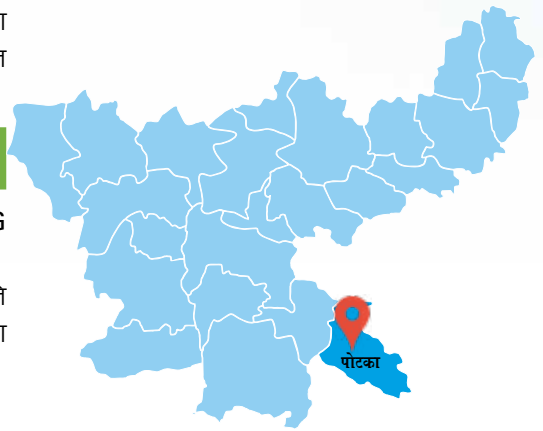

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

अभी तक 5 बकरा बेचा गया 11500/–रु0 तथा 3 बकरी 7900 कुल 19400/– रुपया बेचा गया। अभी वर्त्तमान SHG के पास 32 बकरी है। उस प्रकार बकरी पालन से अभी तक 19400/–रुपया आय हुआ है। इस प्रकार से सारी सरना धरम महिला समिति द्वारा JTDS से प्राप्त बीज पुँजी 10,000 का भी आंतरिक ऋण लेन–देन करते हुए अपना आर्थिक स्थिति सुधर रही है। उक्त महिला समिति अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणादायक है।उसे प्रेरित होकर अन्य महिलाओं भी अब अपना आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए आगे आ रहे है।

शीर्षक/कार्य : गाँव में जागी आशा की किरण

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
किया डांडी स्वंय सहायता समुह (SHG)	नितायडीह	लाधना	जामताडा	जामताड़ा

01 पुर्व की स्थिति

जामताड़ा जिले के लाधना पंचायत के नितायडीह गाँव में श्रज्म्स्च परियोजना के माध्यम आशा की किरण जगी। यह सफलता की कहानी नितायडीह गाँव के स्वंय सहायता समुह में जुड़ी महिलाओं की है। जिसमें 12 सदस्य है, यह महिलाएँ अपने परिवार का पालन–पोशण केवल घरों के काम–काज अथवा मजदूरी करके चलाती थी। खेती के अलावा इनके पास किसी अन्य प्रकार का आय श्रोत नहीं था। पलायन की स्थिति भी गांव में गंभीर थी तथा युवा और पुरूष वर्ग नशा से ग्रसित थे। ऐसी अवस्था से उपर उठकर नितायडीह गाँव की महिला समूह ''किया डांडी स्वयं सहायता समूह'' का गठन किया और जेटेल्प परियोजना से जुड़ी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

जेटेल्प परियोजना से जुड़ने के उपरांत वर्ष 2017 के अंत तक समूह के द्वारा नियमित बैठक कर आपसी लेन–देन के कर 8000 रू0 बचा लिये थे। परियोजना के क्रियान्वयन के उपरांत उन्हें यह जानकारी प्राप्त हुई की वह अपने आय श्रोतों को बढ़ाकर आय में वृद्धि कर सकते है। परिणाम स्वरूप महिला समूह ने यह निर्णय लिया कि वह अपने नियमित बचत से समूह के द्वारा बकरी पालन को बढ़ावा देंगे और जनसंख्या वृद्धि होने पर उसे निकट बाजार में बेचकर आय अर्जित करेंगे। इन महिलाओं ने सच्ची निष्ठा, लगन तथा मेहनत से 16 बकरियों का क्रय किया। क्रय करने के लिए महिला समूह को जेटेल्प के माध्यम से बीज पूंजी मुहैया कराया गया था जिसका उपयोग कर महिला समूह ने 16 बकरियों को खरीदा। 16 बकरियों से इन बकरियों की जनसंख्या में वृद्धि हुई और नवजातों की संख्या 10 हो गयी। कुछ अवधि के उपरांत जब नवजातों का वनज बढ़ गया तब महिला समूह ने यह संज्ञान लिया कि उसमें से 4 बकरे को निकटतम हाट–बाजार में बेचा जाय। फलस्वरूप प्रथम प्रयास में ही उन्हें कुल 7000 रू0 का आय हुआ। इस राशि का कुछ भाग समूह ने अपने पास रखा और 3500 रू0 बैंक खाते में जमा करवाया।

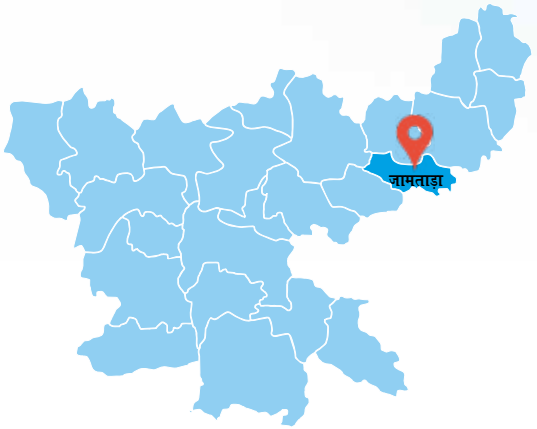

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

महिला समूह ने अपने इस प्रयास से कुछ बातें सिखीं जो समूह के दीदीयों के द्वारा साझा किया। सबसे पहले महिलाओं को यह समझ में आ गया कि बकरी पालन में पोषण एक मुख्य आयाम है। जिसे पूरा करने के लिए समूह के दीदीयों के द्वारा यह निर्णय लिया गया कि वह बचत राशि में से अजोला पीट का निर्माण करेंगे। जिसके लिए तकनीकी सहायता जेटेल्प परियोजना से संबंधित ऐसेट डब्ल्यू के कर्मीयों द्वारा उन्हें बैठक के दौरान बताया गया था। इसके अलावा ऐसे फसलों को भी लेने की बात समूह ने की जो चारा–भूसा का काम करे। वजन वृद्धि के लिए महिलाओं ने नवजातो को कुछ और दिन अपने पास रखकर बड़ा करने की बात भी साझा की। समूह ने यह भी निर्णय लिया की बकरियों की देख–भाल के लिए आस–पास की जगह को साफ रखना और समय–समय पर पशु चिक्तिस्क से विचार–विमर्श करना एक अहम बिंदु है, ताकि बकरी पालन को पारंपरिक तरीके से थोड़ा भिन्न करते हुए बाजार के मांग अनुसार आय को बढ़ाया जा सके।

शीर्षक/कार्य : बदलाव की ओर

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
माँ काली स्वयं सहायता समूह (SHG)	मिरगापहाड़ी	बानरनाचा	फतेहपुर	जामताड़ा

01 पुर्व की स्थिति

गाँव मिरगापहाड़ी एक राजस्व ग्राम है। यह फतेहपुर प्रखण्ड के बानरनाचा पंचायत के अंतर्गत पड़ता है। मिरगापहारी के तत्काल प्रधान श्री नारायण चंद्र गोस्वामी है। प्रधानी पद परंपरागत है।

कहा जाता है पुराने समय में इस गांव की पहाड़ी में हिरण रहते थे। इसी कारण इस गांव का नाम मिरगापहारी पड़ा।

इस गांव के पूर्वी सीमा पर दुम्मा उत्तर में बानरनाचा पश्चिम मे अगैया अंगुठिया एवं दक्षिण मे बाघमारा है।

मिर्गापहाड़ी एवं बानरनाचा की सीमा को एक नदी अलग करता है। गांव के बीच मे एक पहाड़ी है। मिर्गापहाड़ी चारो तरफ से घने पेड़– पोधों से घिरा हुआ है। गांव के लोगो का मुख्य पेशा कृषि है, जिससे यहाँ के लोगो का आमदनी सालभर नहीं हो पाता है।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

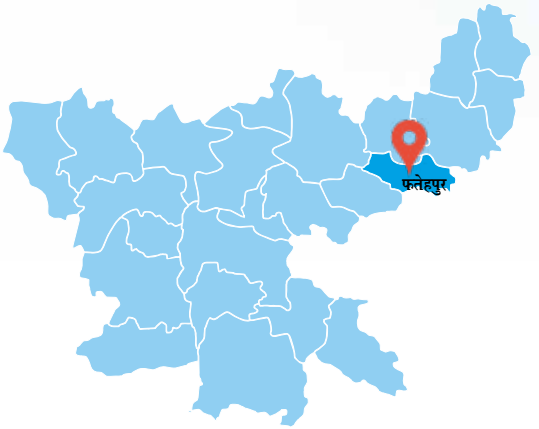

जेटीडीएस आने के पूर्व इस गांव की आर्थिक स्थिति दयनीय थी। लोग कमाने के लिए पश्चिम बंगाल जाते थे, उनके पास कोई रोजगार के वैकल्पिक साधन नहीं था। जेटीडीएस आने के बाद इस गांव में कुल आठ स्वयं सहायता समूह बनाया गया। जिसमें माँ काली स्वयं सहायता समूह बनाया गया जिसमें कुल 10 महिलाओं के साथ यह समूह की शुरूआत की। कुछ स्वयं सहायता समूह को 5000 रू एवं कुछ को 10000 दिया गया था। यह स्वयं सहायता समूह बीज पूंजी से बत्तख पालन किए, जिससे अंडा एवं बतख के बच्चे को निकट्स्थ ग्राम में बेचकर 6000–8000 रू0 का मुनाफा कमाया। फिर पुंजी बढने के बाद बकरी पालन भी करने लगे। बीज पुंजी को सही उपयोग कर दोगना तिगुना भी कर दिये हैं। पिछले एक दो सालों से धान बीज एवं अन्य फसल के बीज देकर फसलों से भी मुनाफा कमाते है और खाद्य सुरक्षा भी हुआ है। इस साल तो खरीफ फसल के समय बीज देने के कारण सभी खुश है, फसल भी अच्छा हुआ है। सहभागी धान की पैदावार बंपर हुई है साथ ही मक्का अरहर और एस एस–1 भी अच्छा हुआ है। फसलों मे अच्छी पैदावार के कारण उनकी आय बढ़ रही है और गांव के कुछ किसानों कोपानी की व्यवस्था कर के सालों भर खेती करने के लियें प्रोत्साहित कर रहे है। जेटीडीएस के कोशिश से आज गाँव के किसान खुश हैं और पलायन नहीं कर रहे है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

परियोजना से जुड़ने के पश्चात् गाँव में खाद्य सुरक्षा बढ़ी है, वैज्ञानिक तकनीक के माध्यम से खेती की जानकारी मिली जिससे उन्हें अपने फसल की पैदावार दोगिनी वृद्धि हुई, उन्नत बीज, रासायनिक खाद, समय–समय पर कोड़नी–निकोनी आदि के माध्यम से एवं पशुपालन के तरीको को भी अपना रही है और भविष्य में पशुपालन के व्यवसाय को मिलकर करना चाहती है। वही महिलाओं को भी स्वंय सहायता समूह में जुड़कर लाभ मिल रहा है। जिससे सभी स्वरोजगार जुड़ गए है और अपना जीवन स्तर सुधार रहे है। जेटेल्प और जे0टी0डी0एस के साथ सहयोगी संस्था का मेहनत रंग ला रहा है और लोग बदलाव महसूस कर रहे है।

शीर्षक/कार्य : सब्जी की खेती से जीवन में हरियाली

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
महिला सभा जीतपुर, मारीडीह	जीतपुर	चन्द्रदीपा	जामताड़ा	जामताड़ा

01 पुर्व की स्थिति

यह कहानी आलोका मुर्मू नामक महिला की है, जो जामताड़ा जिले के चन्द्रदीपा पंचायत के एक छोटे से गॉव जीतपुर नामक गॉव में रहती है। इनके परिवार में पॉच सदस्य है। यह लोग खेती पुराने ढंग से करती थी एवं इसमें ज्यादा फायदा नहीं होता था। बीज और खाद के लिये पैसा भी नहीं होता था। आलोका मुर्मू का गॉव जीतपुर जो जामताड़ा प्रखण्ड के अत्यन्त ही पिछडा गॉव है। इस गॉव में रहने वाले अधिकांश लोग आदिवासी है। इनकी आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। दो वक्त की रोटी के लिये भी उन्हे मोहताज रहना पडता था। गॉव में खेती की स्थिति ठीक नहीं थी साथ ही आसपास के गॉव या निकटवर्ती शहर में काम भी नहीं था। लोगो को काम की तालाश में दुसरे शहर जाना पडता था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

आलोका मुर्मू के जीवन में बदलाव की शुरूआत तब हुई जब उन्हें एक दिन जे0टी.डी0एस0 के पदाधिकारी तथा गैर सरकारी संस्था के कर्मी से गॉव के ग्राम सभा में मुलाकात हुई। उपस्थित पदाधिकारियों ने गॉव वालों को जेटेल्प परियोजना एवं समूह निर्माण कर पोषण वाटिका के बारे में बताया। इससे प्रभावित होकर आलोका मुर्मू ने समूह बनाकर कुछ करने का मन बना लिया। उन्होने गॉव आकर महिलाओं के साथ बैठक की और समूह निर्माण कर पोषण वाटिका करने के लिए प्रेरित किया और इसके फायदे के बारे में अन्य दीदी को बताया। वर्ष 2016 में आलोका मुर्मू के नेतृत्व में ''महिला सभा जीतपुर मारीडीह'' का गठन किया गया। जिसमें 12 महिला सदस्य थी। इस समूह की परिवार में कुल लगभग 60 सदस्य है। ये महिलायें साप्ताहिक 10 रूपये जमा करती है। समूह निमार्ण के बाद जेटेल्प परियोजना के तहत उन्हें समूह के सफल संचालन एवं रख–रखाव के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में उन्होंने बैठक का संचालन कैसे किया जाता है यह बखूबी से सीखा इसके अलावे खाता–बही में लेन देन तथा बचत का हिसाब लिखना सीखा। आज समूह की महिला स्वंय बैठक कर उसकी प्रस्तावना तथा रूपय पैसो का हिसाब लिख रहीं है।

आलोका मूर्मु जी ने बताया कि पहले हमलोग गैर पुरूष से बात करने में डरते थे किंतु समूह निर्माण और प्रशिक्षण के बाद प्रखण्ड कार्यालय जाकर गॉव के हितकर योजना के बारे में जानकारी लेते है। अब उन्हें मुखिया या बाहरी आदमी के साथ बात चित करने में संकोच नहीं होती। उन्होंने बताया कि कुछ दिनों के बाद जे0टी0डी0एस0 से रूपये 10000/– का बीज पूजीं (सीड कैपिटल) मिला। इस पूजी एवं स्वंय की बचत व परिवार के सहयोग से टमाटर और सब्जी का खेती करने की शुरूआत की, जिससे उन्हें 12000 हजार रूपये का मुनाफा हुआ आज भी आलोका मूर्मू सब्जी की खेती कर रही है तथा अपने परिवार के साथ हँसी– खुशी से जीवन व्यतित कर रही है।

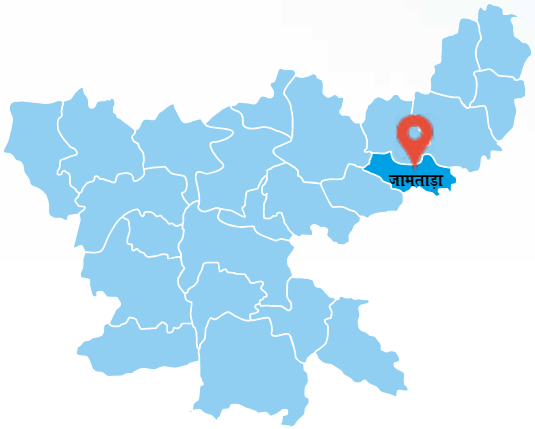

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

परियोजना के सहयोग से अलोका मुर्मू एवं उन जैसी जितनी भी महिलायें है व काफी सशक्त हो चुकी है। अब वे पोषण वाटिका वृहद् तौर पर करना चाहती है। उन्हें उत्तम कोटि की बीज, खाद एवं रसायनिक की जानकारी जे0टी0डी0एस0 के कृषि विशेषज्ञ के माध्यम से जानकारी मिल रही है। उन्होनें अपने बाडत्रें में टमाटर, मटर, मिर्ची, कद्दु, भिंडी, बरबट्टी, लसहुन एवं प्याज आदि तरफ की फसल उगा रही है। जिसे वह नित्यदिन अपने आहार में शामिल भी कर रही है एवं गॉव में ही सब्जी की बिक्री कर रही है जिससे उन्हें नित्यदिन 200–300 रू0 का फायदा हो रहा है। जिसे वह अपने ग्रूप में जमा कर रही है एवं जरूरत अनुरूप खर्च भी कर रही है। अब वे सब्जी खेती ही नहीं वरन् भविष्य की योजना को मद्देनजर रखती हुई पशुपालन एवं क्षमतावर्द्धन जैसे अन्य कार्यों में भी रूची ले रही है।

शीर्षक/कार्य : जागरूक स्वयं सहायता समूह.....एक कदम स्वच्छता की ओर

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
चांदनी स्वयं सहायता समूह	जेरूआ	कोपे	मनिका	लातेहार

01 पुर्व की स्थिति

गांव में महिलाओ का किसी प्रकार का कोई संगठन नहीं था। जिस कारण गांव की महिलाएं एकजुट होकर कोई कार्य नहीं कर पाती थी। उन्हें गांव की समस्याओं के बारे में पता नहीं चल पाता था। यह महिलाओ की आर्थिक एवं समाजिक विकास में एक बड़ी बाधा थी। इसके साथ–साथ गांव में बहुत सारी समस्याएं थी उन में से एक शौचालय की समस्या थी। शौच की समस्या से जुझती हुई इस गांव की महिलाओं को भी बहुत सारी दिक्कतो का सामना करना पड़ता था। गांव की महिलाएं इस समस्या से उबरना चाहती थी पर उनके पास कोई साधन नहीं था जिससे वे इस समस्या का समाधान कर पाती। किसी भी कार्य को करने के लिए उन्हें एकजुट होना था जिससे वह मिलकर कार्य को कर पाती परंतु वो असक्षम थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

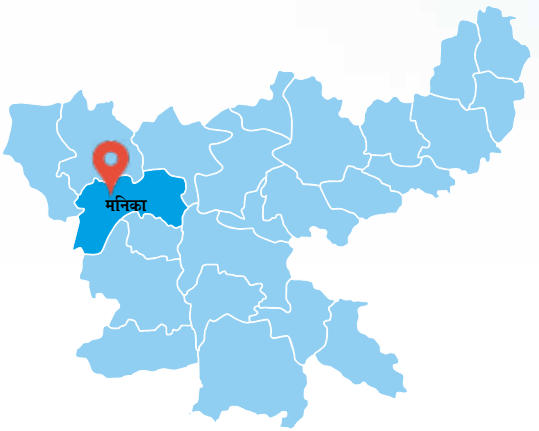

वर्ष 2015–16 में झारखण्ड आदिवासी सशक्तिकरण एवं आजीविका परियोजना के अंतर्गत जेरूआ ग्राम में कुल 12 स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। उनमें से एक समूह है – चांदनी स्वयं सहायता समूह। जिसका गठन दिन. ांक–04.12.2016 को किया गया। जिसमें कुल 10 सदस्य हैं। जिनमें रबिना बीबी अध्यक्ष, खदीजा बीबी सचीव एवं बानो बीबी कोषाध्यक्ष पद पर कार्यरत है। परियोजना के अंतर्गत समूह को दो किस्तो में 10,000 रूपए बीज पूंजी (5000रू0/किस्त) के रूप में दी गयी है।

समूह द्वारा पंच सूत्रों का पालन करते हुए नियमित सप्ताहिक बैठक, बचत एवं ऋण लेन–देन की जाती है समूह द्वारा कुल 30,000रू0 जमा किया गया है। समूह की महिलाओं द्वारा गांव में शौचालय बनाने की योजना तैयार की गई जिसमें उन्हें प्रखण्ड स्तर से स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत शौचालय निमार्ण का कार्य दिया गया।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत समूह की महिलाओं द्वारा कदम बढ़ाते हुए कुल 45 शौचालय निर्माण का कार्य प्रखण्ड स्तर पर स्वीकृत कराया गया एवं महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से पूर्ण भी किया गया। समूह की महिलाओं ने शौचालय निमार्ण एवं इसके उपयोगिता के विषय पर लोगों के बीच जागरूकता फैलाई। ये महिलाएं ना केवल अपने समूह में बल्कि अपने पुरे गांव में घूमकर स्वच्छता के विषय पर चर्चा किया एवं लोगों को स्वच्छ वातावरण में रहने हेतु प्रेरित किया। यह सब उनके समूह में एकजुट होकर कार्य करने का परिणाम है। ये महिलाएं समूह के माध्यम से अपनी सामाजिक एवं आर्थिक परेशानीओ को सुलझाने में सक्षम है।

समूह द्वारा वर्त्तमान में पुनः 45 शौचालय हेतु प्रखण्ड कार्यालय में आवेदन जमा किया गया है। इस समूह की मदद से गांव में शौचालय निर्माण का कार्य संभव हो पाया है।

शीर्षक/कार्य : जीवन रक्षक महिला स्वयं सहायता समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
जीवन रक्षक महिला स्वयं सहायता समूह	अमडीहा	मंगरा	बरवाडीह	लातेहार

01 पुर्व की स्थिति

अमडीहा गांव बरवाडीह प्रखण्ड के पिछड़े ग्रामो मे से एक है क्योंकि यहां खेती करने के अलावा लोगो के पास जीविकोपा. र्जन का अन्य कोई साधन नहीं था। गांव की महिलाएं भी घर की खेती में ही हाथ बटाती थी। कुछ घरों में बकरी, मुर्गी आदि पालन किया जाता था। गांव में ज्यादातर घर के लोग सिंचाई की कमी के कारण सालो भर खेती नहीं कर पाते थे। महिलाओं के पास भी आजीविका के अन्य श्रोत नहीं थे। जिससे खाली समय में वे चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाती थी। साल में कभी–कभी घरो में खाने के लिए भोजन भी नहीं होता था एवं इसकी पूर्ति के लिए लोगो को महाजन से ऊँचे ब्याज दर पर कर्ज लेना पड़ता था जिसकी भरपाई लोगो के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती होती थी।

बच्चो की पढ़ाई, रोगो के इलाज आदि कारणो से भी लोगो को कर्ज में डूबा रहना पड़ता था जिससे जिंदगी चुनौतीपूर्ण हो गई थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

झारखण्ड आदिवासी सशक्तिकरण एवं आजीविका परियोजना के आने से गांव में खुशी की लहर दौड़ गई। पहली बार गांव में वर्ष 2015–16 में कुल 11 स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया जिसमें लगभग 150 महिलाओं को जोड़ा गया। इन स्वयं सहायता समूहों मे एक समुह है जीवन रक्षक महिला स्वयं सहायता समूह। झारखण्ड आदिवासी सशक्तिकरण एवं आ. जिविका परियोजना के तहत इस समूह को बीज पूंजी के रूप में दो किस्तों में 10,000 रू0 (5,000/किस्त) में दी गई है। अब तक समूह द्वारा कुल 61,920 रू0 बचत की गई है जिसमें 43,077 रू0 ऋण में लगाई गयी है।

JTDS द्वारा समुह को वर्ष 2016 में 3 बकरी शेड दिया गया जिसमें 24 की संख्या में बकरी एवं 6 बकरा उपलब्ध कराया गया। सभी सदस्यों द्वारा मिलकर बकरी पालन किया गया और सदस्यों द्वारा बकरी पालन को व्यापार के नजरिए से विस्. तारित किया जा रहा है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

बकरी पालन कर के समूह द्वारा अब तक कुल 52450रू0 की कमाई की गई है। वर्त्तमान में समूह के पास 22 बकरी शेष है। कमाई गई राशि का उपयोग करके समूह की महिलाएं और बकरी खरीदने की योजना बना रही है।

समूह की महिलाओ को अब कर्ज लेने के लिए महाजन के पास नहीं जाना पड़ता है क्योंकि उनकी छोटी–छोटी जरूरतें जैसे बच्चों की पढ़ाई, दवा इत्यादि जरूरी चीजों के लिए उन्हें उनके समूह से बहुत ही निम्न दर पर ऋण उपलब्ध हो जाता है। परियोजना की ओर से प्राप्त विभिन्न प्रशिक्षण से महिलाओ का क्षमता विकास हुआ है। अब वे अपने समूह के लेखा–जोखा एवं लेन–देन का हिसाब खुद रखती है और ये महिलाएं जागरूक एवं सशक्त हो गई है। अपनी आर्थिक जरूरतो के सा. थ–साथ व्यक्तिगत परेशानियों का हल भी उन्हें समूह में मिल जाता है। समूह के माध्यम से संगठित होकर ये एक दूसरे की शक्ति साबित हो रही है।

शीर्षक/कार्य : एक कदम स्वावलंबन की ओर.....

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
महालक्ष्मी स्वयं सहायता समूह	माईल	मटलोंग	मनिका	लातेहार

01 पुर्व की स्थिति

माईल गांव में महिलाओं का समूह गठन के पूर्व समूह की महिलाएं कृषि पर निर्भर रहती थी या फिर चंद पैसे कमाने के लिए गांव से दूर ईट भठ्ठो में जाकर मेहनत मजदूरी कर अपने परिवार का भरण–पोषण करती थी। खेती और मजदूरी करने के अलावा उनके पास जीविकोपार्जन का अन्य कोई साधन नहीं था। कृषि से कम उत्पादन होने पर उन्हें पूरे वर्ष अपने परिवार का भरण–पोषण, बच्चो की शिक्षा एवं उनकी जरूरतों से संबंधित साधन जुटाने में कठिनाईयो का सामना करना पड़ता था। जिस कारण उनके परिवार का सही तरीके से जीवनयापन नहीं हो पाता था और उन्हे मजबूर होकर अपनी छोटी–छोटी जरूरतो के लिए अपने जमीन एवं खेतो को गिरवी रख ऋण लेने की आवश्यकता होती थी जिससे उनका परिवार और भी गरीबी के दलदल में फंस के रह जाता था और पैसों की कमी के कारण उनके लिए इस गरीबी से निकल पाना बहुत मुश्किल था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

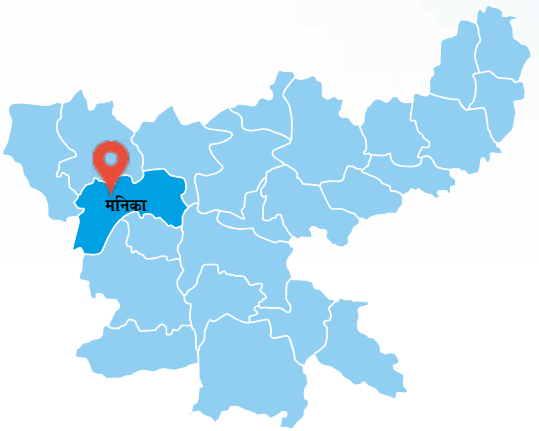

वर्ष 2015 में झारखण्ड आदिवासी सशक्तिकरण एवं आजीविका परियोजना के अंतर्गत माईल ग्राम में दिनांक–13.12.2015 को महालक्ष्मी स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। जिसमें कुल 10 सदस्याएं हैं। महालक्ष्मी स्वयं सहायता समूह को JTDS द्वारा 10,000रूपए (5000रू0/किस्त) दो किस्तो में परियोजना की तरफ से उपलब्ध करायी गई। समूह के महिलाओ के सक्रिय भागीदारी के अनुरूप नियमित बैठक, बचत एवं ऋण लेन–देन की जा रही है। समूह के अपने नियम बनाए गए है ताकि समूह सुचारू रूप से चलता रहे। समूह द्वारा अब तक कुल 40,830रू0 बचत राशि जमा किए गए है। विभिन्न प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओ का सर्वांगीन विकास हुआ है। वे अपनी आर्थिक व सामाजिक परेशानियों को साझा कर उनका समाधान कर रही है। समूह की महिलाओं द्वारा व्यापार करने हेतु योजना बनाई गई एवं मछली पालन करने पर सभी सदस्यों द्वारा सहमति जताई गई।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

समूह की महिलाओ द्वारा अब तक कुल 35000 रूपए की कमाई मछली बेचकर की गई है। ये महिलाएं बताती है स्वयं सहायता समूह के माध्यम से हम महिलाएं ना सिर्फ मिलकर काम करते है बल्कि एक दूसरे की व्यक्तिगत आर्थिक अथवा समाजिक परेषानीओ को भी हल करते है।

इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण के माध्यम से हुए क्षमता विकास से उनका आत्मविश्वास बढ़ा है। घर के विभिन्न फैसलो में अब उनकी भी भागीदारी होती है। घर और समाज मे उनकी इज्जत और भी बढ़ गई है। भविष्य मे अपने इस कार्य को और विस्तारित करने की योजना तैयार कर रही है एवं बैंक से ऋण लेकर पत्तल प्लेट बनाने का कार्य करने को तैयार है।

झारखण्ड आदिवासी सशक्तिकरण एवं आजीविका परियोजना के उपरांत आयी खुशहाली का पुरा श्रेय इस परियोजना को देती है।

शीर्षक/कार्य : पपीते की खेती कर खुशहाल सोनामती

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
पार्वती महिला स्वयं सहायता समूह	सेमरी	कोपे	मनिका	लातेहार

01 पुर्व की स्थिति

सोनीमती देवी एक संयुक्त परिवार में रहकर अपना जीवनयापन करती है। उनके परिवार में उनके पति, सास–ससुर एवं दो बच्चे है। उनके परिवार का जीविकोपार्जन कृषि पर आधारित है जिससे वे अपनी और अपने बच्चों की जरूरतो को पूरा करती है। जो कि पुरे परिवार के लिए पर्याप्त नहीं होता था जिस वजह से उनके पति को कमाने के लिए घर से दूर दूसरे राज्यो में पलायन कर जाना पड़ता था। जिस कारण साल के कुछ महीने उनके पति अपने परिवार से दूर रहते थे। यह समय सोनामती देवी के लिए काफी कठिन होता था क्योंकि पति के ना रहने से घर की सारी जिम्मेदारीयां उन्हें अकेले निभानी पड़ती थी। घर की छोटी–छोटी जरूरतो के लिए उन्हें दूसरो से उधार या ऋण लेना पड़ता था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

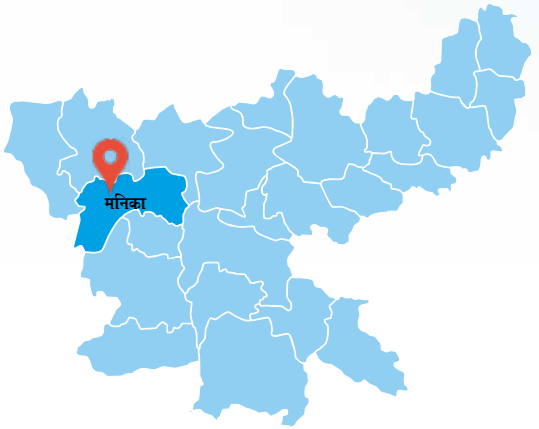

वर्ष 2015 में झारखण्ड आदिवासी सशक्तिकरण एवं आजीविका परियोजना के अंतर्गत सेमरी ग्राम में दिनांक–15.11.2015 को पार्वती महिला स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। जिसमें कुल 11सदस्याए हैं। उनमें से एक सदस्या सोनामती देवी भी है। इस समूह को बीज पूंजी के अंतर्गत कुल 10000रूपए 5000रू0/किस्त) दो किस्तो में परियोजना की तरफ से उपलब्ध करायी गई। प्राप्त बीज पूंजी एवं जमा की गई राशि में से ऋण लेकर सोनामती देवी ने पपीते का बीज क्रय किया एवं नर्सरी तैयार कर पपीता का पौधा तैयार किया और उनकी सही देखभाल की। देखते–देखते पौधों में पपीता का फल बेचने योग्य तैयार हो गया। ऐसे ऋण लेकर समूह की अन्य सदस्यों ने भी छोटे–छोटे कार्य करके आमदनी करना शुरू किया।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

पपीते की खेती से सोनामती देवी अब तक 3000रूपए का पपीता बेच चुकी है और 5000–6000रू0 का पपीता बेचने को तैयार है। वे बताती है कि वे पपीते की खेती के क्षेत्र को और बढ़ाना चाहती है ताकि उनके पति भी गांव में ही रहकर पपीते की खेती करे। जिससे उनकी आमदनी दोगुनी हो जाए एवं अपनी परिवार की आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ करें ताकि वे अपने पति के पलायन को रोक सके।

इस तरह के कार्य करके समूह की सभी सदस्य अपने–अपने घरो की छोटी–छोटी जरूरतो को आसानी से पूरा कर पा रही है तथा बाहर से ऋण लेने से मुक्त है। वे झारखण्ड आदिवासी सशक्तिकरण एवं आजीविका परियोजना के प्रति आभार व्यक्त करते है।

शीर्षक/कार्य : तुलसी की खेती बना वरदान

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
चेतना स्वयं सहायता समूह	मटलौंग	मटलौंग	मनिका	लातेहार

01 पुर्व की स्थिति

सोनी देवी, पति का नाम– चन्द्रदेव सिंह मुख्यतः खेती कर अपने परिवार का जीवनयापन करते थे। घर में उनके पति और दो बच्चे है। खेती करने के अलावा उनके पास जीविकोपार्जन के अन्य कोई साधन नहीं था। कृषि से कम उत्पादन होने पर उन्हें दूसरो से ऋण लेकर अपने परिवार का भरण–पोषण करना पड़ता था जिससे उन्हे ऋण चुकाने में भी कठिनाईयो का सामना करना पड़ता था। जिस कारण उनके परिवार का सही तरीके से जीवनयापन नहीं हो पाता था और उन्हे ऋण चुकाने की चिंता हर वक्त लगी रहती थी। कभी–कभी ऋण सही समय पर नहीं चुकाने से उन्हे अपने जमीन इत्यादि बहुमूल्य चींजे गिरवी रखना पड़ता था इस वजह से उनका परिवार मानसिक परेशानी से ग्रसित रहता था। गांव मे किसी प्रकार का कोई समूह नहीं था एवं लोगो के बीच स्वयं सहायता समूह के प्रति किसी प्रकार की कोई जागरूकता नहीं थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

वर्ष 2015 में झारखण्ड आदिवासी सशक्तिकरण एवं आजीविका परियोजना के अंतर्गत मटलौंग ग्राम में दिनांक–13.12.2015 को चेतना स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। जिसमें कुल 11 सदस्याएं हैं। उनमें से एक सदस्या सोनी देवी भी है। परियोजना के तरफ से समूह का गठन कर बैंक खाता खोला गया। जिससे समूह की महिलाओ को अपनी जमा राशि को रखने में सुविधा हुई। इस समूह को बीज पूंजी के अंतर्गत कुल 10000रूपए (5000रू0/किस्त) दो किस्तो में परियोजना की तरफ से उपलब्ध करायी गई। इसके साथ–साथ समूह के सफल संचालन हेतु प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया। सोनी देवी ने समूह से ऋण लेकर तुलसी के पौधे की खेती की। जिसका उपयोग तेल तैयार कर आयुर्वेदिक उपायो के लिए किया जाता है। अन्य सदस्य भी स्वरोजगार की तरफ कदम बढ़ाते हुए छोटे–छोटे कार्य कर आमदनी कमाने लगे।

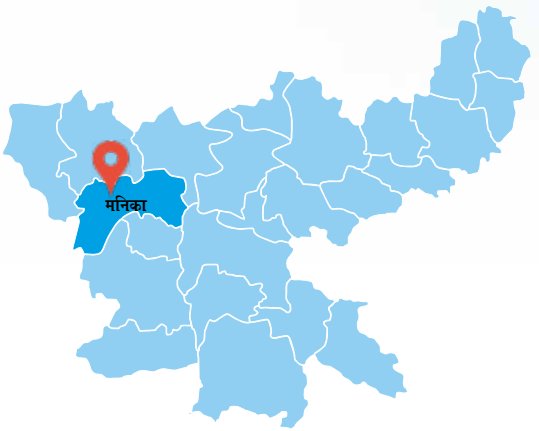

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

तुलसी की खेती से सोनी देवी अब तक 10000रूपए मुनाफा कमा चुकी है। वो बताती है कि जे0टी0डी0एस0 द्वारा गठित समूह से जुड़कर अपने आप को बदलाव की तरफ ले जा रही है जिससे उनके और उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने की ओर अग्रसर है। वे आज अपने ऋण को चुकाने में सक्षम है और कमाए गये मुनाफा और समूह से अतिरिक्त ऋण लेकर सोनी देवी अपनी तुलसी की खेती को बढ़ाना चाहती है और अधिक मुनाफा कमाना चाहती है जिससे उन्हें भविष्य में किसी महाजन से ऋण ना लेना पड़े। समूह के सदस्य जागरूक होकर अपनी जरूरतो के अनुसार काम कर मुनाफा काम रहे है। प्रशिक्षण के माध्यम से समूह के सदस्यों का क्षमता विकास हुआ है। सरकारी योजनाओ, उनके फायदे एवं अपने अधिकारों के बारे में अब ये महिलाएं जागरूक हो चुकी है एवं अन्य महिलाओ के लिए प्रेरणा का श्रोत बन चुकी है।

शीर्षक/कार्य : सफलता की कहानी

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
जागृति झारखण्ड महिला समिति	मुरपा	पेराईडीह	तमाड़	राँची

01 पुर्व की स्थिति

ग्राम–मुरपा जो कि पेड़ाइडीह पंचायत, प्रखण्ड – तमाड़ से 8 कि.मी. दूरी पर स्थित है। JTDS-JTELP परियोजना का आगाज से पहले महिलायें दिनभर जंगल में घुम–घुम कर सुखा लकड़ी इकट्ठा कर बाजार में बेचने एवं घर में जलावन के काम करती थी। जिससे उनलोगों ने अपने घर को ठीक ढंग से देखभाल नहीं कर पाती थी। और घर में किसी भी सदस्य बिमार पड़ जाता तो महिलायें और भी परेषानी में पड़ जाते थे। जिससे गाँव के ही महाजनों से ऋण लेना पड़ता था और वे मनमाना ब्याज वसूलते थे। असंगठित होने के कारण गाँव की महिलाओं में आत्म विश्वास की कमी तथा दुरदर्शिता की कमी थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

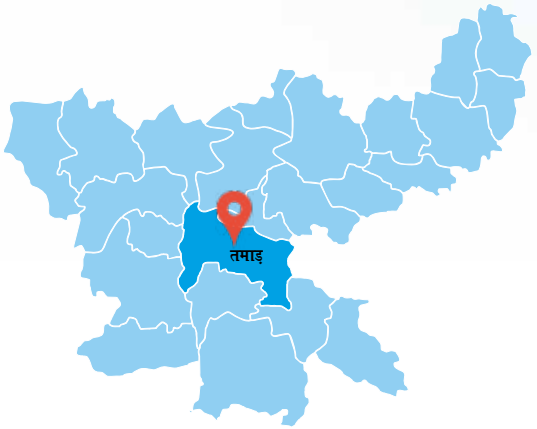

JTDS-JTELP परियोजना का आगाज वर्ष 2015 में हुई। इसी क्रम में एक समूह जो कि दिनांक 05.08.2015 में गठित हुआ जिसका नाम – जागृति झारखण्ड महिला समिति है, जिसमें कुल 13 सदस्यों का समूह है जो उत्साहपूर्णता से बैठकी, सप्ताहिक बचत, उसके साथ गाँव में सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सेदारी लेती रही है। चाहे वो कार्य एक दूसरे सदस्यों के मुश्किल समय में काम आना, चाहे गाँव एवं आस–पास किसी सामाजिक मूद्दे पर कार्य हो यह समूह निरंतर अपनी जिम्मेदारी समझ कर सहभगिता दिखाया है। JTDS के सहयोग से इस समूह ने बीज पूँजी भी रू.10,000/- प्राप्त किया और कार्य की दक्षता एवं रूची अनुरूप इस समूह को सुकर पालन योजना अन्तर्गत सुकर घर निर्माण में 10 सुकर एवं सुकरी पालन एवं आय अर्जन हेतु प्राप्त हुआ। वर्ष 2016 में इस समूह का सुकर निर्माण शेड को स्वीकृति प्राप्त हुई। सुकर शेड निर्माण में उपरोक्त 8 सुकरी एवं 2 सुकर का पालन समूह ने तय नियमानुसार कि साप्ताहिक रूप से सुकर का देख–रेख, खिलाना–पिलाना आदि समूह के सभी सदस्यों ने बहुत अच्छे प्रकार से मिलजूलकर किया। अच्छी प्रकार से देख–रेख द्वारा कुल 45 सुकर (29 नर : 16 मादा) का जन्म हआ।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस समूह ने सुकरों का क्रय कर रू.78,000/- मुनाफा कमाया और आज भी सुकर पालन को वृहत रूप से संचालित करने की योजना तैयार किया है। जिसमें सभी सदस्य सहभागिता दे रहें है। यह समूह कुशल भविष्य की कामना के साथ सुकर व्यवसाय को बृहद स्तर तक ले जाना चाहतें हैं। यह समूह संगठित हैं, और पूर्व में महिलाओं में जो आत्मविश्वास की कमी थीं वे आज खत्म होती हुई दिख रही है। यह समूह महिला सशक्तिकरण परिभाषा को भी परिदर्षित करती हैं। समूह को एक राह दिखाने के बाद अब ये उठ खड़ी हुई है और निरंतर आगे बढ़ने की चाह लिए सुकर पालन व्यवसाय के अलावा गाँव में ही लीज लिये हुए जमीन पर बृहत रूप से खेती–बाड़ी करना चाहती है।

शीर्षक/कार्य : सशक्तिकरण की चाह में एक समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
जीवन ज्योति महिला समिति	कसमबुरूडीह	पेराईडीह	तमाड़	राँची

01 पुर्व की स्थिति

कसमबुरूडीह ग्राम, प्रखण्ड तमाड़ अन्तर्गत एक ग्राम जो प्राकृतिक छटा बिखरे हैं, यह गाँव प्रखण्ड कार्यालय से 10 km पर स्थित है। कसमबुरूडीह गाँव आदिवासी बहुल गाँव है एवं कृशि, पशुपालन द्वारा इस गाँव के आदिवासी अपना जीवन यापन करते हैं। महिलायों का कोई संगठन नहीं था और वे उद्देश्यहीन थे। किसी भी प्रकार के विपदा पर उन्हें छोटी रकम के लिए दर–दर भटकना पड़ता था एवं महाजनों द्वारा शोषण का शिकार होना पड़ता था। गाँव में पहले कोई महिला समूह भी नही था ओर ना ही कोई महिला समूह के विषय में जानती थी। महिलायें असंगठित थीं एवं किसी भी तरह का व्यतिगत बचत नहीं था। किसी परिवार में संकट एवं विपद परिस्थिति में मदद की चाहत रखते हुए भी आर्थिक रूप से मदद नहीं कर पाती थीं। और छोटी–छोटी चिजों की क्रय के लिए उन्हें घर के पुरूष के आगे हर समय हाथ फैलाना पड़ता था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

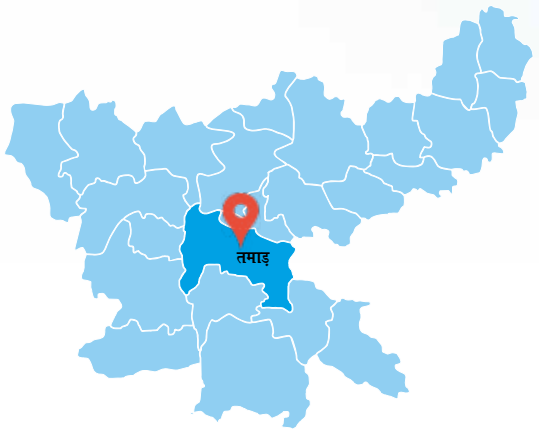

महिलाओं को सशक्त करने हेतु और राह दिखाने के लिए जीवन ज्योति (प्रकाश) महिला समिति जिसमें 10 सदस्य है का गठन हुआ। उत्साहित समूह की दिदियों ने साप्ताहिक रू.10/- बचत के निर्णय के साथ प्रति सप्ताह प्रति सदस्य ''एक मुट्ठी'' चावल समूह मे जमा करतीं है। बचत से इस समूह ने गाँव की अति गरीब परिवार को चावल से मदद भी किया है। क्योंकि परिवार को साल भर परिवार को खिलाने हेतु अनाज अप्राप्त था। इस समूह ने रू.4,03,050/- ऋण वितरण अब तक किया है और ऋण वापसी रू.3,78,450/- हो चुका है एवं यह समूह लेखा–जोखा का कई बार जे.टी.डी.एस. से प्रशिक्षण प्राप्त कर पूरी बुलंदी के साथ एक जूट होकर आगे बढ़ रही है। जे.टी.डी.एस. की तरफ से ग्राम सभा के द्वारा एक बकरी शेड भी पारित हुआ एवं बीज पूँजी के रूप में रू.10,000/- समूह को प्राप्त हुई है। समूह द्वारा बीज पूँजी की राषि को बकरी क्रय कर बकरी पालन योजना को आगे बढ़ाने का मार्ग प्रषस्त किया। जे.टी.डी.एस. से कुल 8 बकरी एवं 2 बकरा प्राप्त हुआ था, लेकिन समूह ने निर्णय कर बकरी क्रय किया और बकरी पालन से लगभग रू.18,820/– अब तक अर्जित किया है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

जीवन ज्योति समूह अपने नाम की तरह ही लोगों में ज्योति प्रकाशित किया है, यह समूह जमा की हुई चावल एवं बचत राशि सें ग्राम में चार परिवार में बेटी की शादी में मदद किया है। एक लाचार माँ श्रीमती कर्मी देवी को यह समूह 80 किलो चावल और रू.800/- से लालसिंह मुण्डा शादी में सहयोग, इसी प्रकार विमला देवी दीदी को बच्चे जन्म उपरांत, त्योहार, छठ्ठी आदि में सहयोग किया। इसी प्रकार यह जीवन ज्योति समूह सामाजिक कार्य कर अन्य लोगों में भी सामाजिक भाव/संवेदना, मानवीय भावना की सीख दे रहीं हैं। समूह ने शौचालय निर्माण का कार्य वर्ष 2017 में शुरू किया है एवं अब तक इन्हें रू.18,000/- लाभ हुआ है। इस समूह की दिदियाँ अन्य लोगों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बनी है और अगर चाह है और आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता, इसी प्रण से यह समूह निरंतर प्रयत्नशील है। आज यह समूह स्वलंबी रूप से सशक्त हैं एवं आज समूह द्वारा पुरूषों को भी ऋण दिया जा रहा है जो कि पूर्व में महिलायें छोटी–छोटी अपनी जरूरतों के लिए उनके सामने हाथ फैलाती थीं। भविष्य में पशुपालन द्वारा आय अर्जन गतिविधि को साथ करते हुए अपने अपने घरों की आर्थिक स्थिति को मजबुत करना चाहतीं हैं।

शीर्षक/कार्य : सफलता की कहानी

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
राईबा महिला समिति, पोडाडीह	पोड़ाडीह	पेराईडीह	तमाड़	राँची

01 पुर्व की स्थिति

ग्राम–पोड़ाडीह प्रखण्ड तमाड़, जिला राँची, सुदूर जंगल में बसा एक छोटा सा गाँव। यह आदिवासी जनजाति बहल गाँव है, जो कि अत्यन्त पिछड़ा गाँव है। जंगल से चुने हुए वन उपज को बेच कर अपनी छोटी कमाई महिलाओं द्वारा की जाती थी। समूह के बारे में यहाँ किसी भी प्रकार की जानकारी नहीं थी एवं इससे एक व्यक्ति को एवं पूरे ग्राम को क्या लाभ हो सकता है इस विषय पर महिलाओं में किसी भी प्रकार का सोच नहीं थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

समूह राईबा महिला समिति ग्राम पोड़ाडीह में गठित समूह जो वर्श 2015 में एकत्रित महिलाएँ कुछ करने आर्थिक विकास, समाज में नवनिर्माण हेतु जे.टी.डी.एस. के बेनर के तहत गठित किया गया। समूह में कुल 12 सदस्य प्रति सप्ताह शनिवार को रू.10/– बचत करते हैं और इस समूह के द्वारा गठन उपरांत निरंतर बैठकी और नये विषयों पर चर्चा होती रही है। इस समूह के द्वारा कुल ऋण वितरण रू.55,900/– कुल ऋण वापसी रू.20,800/– कुल समूह का ऋण बकाया रू.35,100/– है। जे.टी.डी.एस. से प्राप्त बीज पूँजी रू.10,000/– इस समूह को प्राप्त है एवं महिला समूह को खता–बही एवं नेतृत्व क्षमता विकास के उपर समय समय पर प्रशिक्षण दिया गया है। ताकि महिलायें में आत्मविश्वास एवं दूरदर्शिता में बढ़त्तरी हुई है।

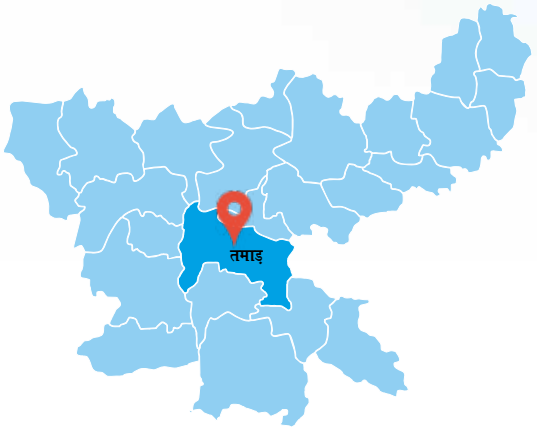

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

बीज पूँजी का राशि का उपयोग यह समूह ऋण वितरण विशेष रूप से कृषि, शादी–ब्याह , पढ़ाई–लिखाई बच्चों के टयूशन आदि में मदद किया गया। जिससे समूह के दिदियों को काफी मदद मिली। इस समूह के द्वारा राशन खर्च आदि में भी मदद किया गया है। अगर किसी सदस्य या गाँव में जरूरतमंद जिसका घर में राशन की कमी हो जाती है, वैसे में ये समूह उन्हें कई बार मदद किया है।समूह की सदस्यगण के द्वारा बताया गया कि जब समूह का गठन नहीं हुआ था तब गाँव में पैसे की बहुत किल्लत थी। लेकिन समूह गठित होने के उपरांत एक दिशा मिली और मेहनत से ये समूह अपने सदस्यों के साथ–साथ गाँव के अन्य जरूरतमंद की भी आर्थिक सहायता प्रदान कर रही है।आज यह समूह खुशी के साथ ये बताने संकोच नहीं करती है कि, पहले अपने घरों के बच्चों की अच्छी शिक्षा के बारे में हम सोचते भी नहीं थें, लेकिन आज सभी दिदियाँ अपने बच्चों को प्राईवेट शिक्षा और बेहतर शिक्षा का सपना देखती है।

राईबा महिला समिति शिक्षा जो कि प्रगतिशील समिति के रूप में समाज में जागरूकता जैसे बाल विवाह, पढ़ाई–लिखाई, मानवता आदि पर शिक्षा का संचार भी कर रही है। इस समूह के अच्छे कार्य को देख कर प्रखण्ड द्वारा इस समूह को शौचालय निर्माण का कार्य दिया गया है। एवं इससे यह समूह रू.16,600/- का आमदनी प्राप्त किये हैं। यह समूह खेती–बाड़ी एवं पशुपालन योजना बनाई है और इसे आय अर्जन कर अपना और अपने गाँव का विकास करना चाहती है।

शीर्षक/कार्य : बकरी पालन (गुरूवारी मुंडा की सफलता)

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
महिला विकास समिति	छोटाबांडी	छोटासेगोय	कुचाई	सरायकेला - खरसावाँ

01 पुर्व की स्थिति

महिला विकास समिति महिला समूह, छोटाबांडी गाँव में है जो प्रखण्ड मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यह प्रखण्ड दुर्गम क्षेणी क्षेत्र में आता है। यह एक आदिवारी बहुल गाँव हैं। गाँव में पहले कोई महिला समूह नही था ओर ना ही कोई महिला समूह के विषय में जानती थी। महिलायें असंगठित थीं। कोई व्यतिगत बचत नहीं था। व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए रिश्तेदारों या अन्य व्यक्तियों से उधार या लोन लेना पडता था। आय अर्जन के लिए खेती कार्य छोड़ कर कोई आर्थिक कार्य नही करती थीं। आत्मविश्वास की कमी तथा दुरदर्शिता की कमी थी। महिलाए कृषि मजदूरी पर निर्भर रहती थी, दैनिक मजदूरी के अलावे आय का कोई अन्य साधन नही था। अपनी जरूरतों के लिए परिवार पर निर्भर रहती थीं। बकरी पालन पारंपरिक ढंग से करतें थै जिससे कम लाभ होता था एवं कभी कभी बहुत नुकसान हो जाता था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

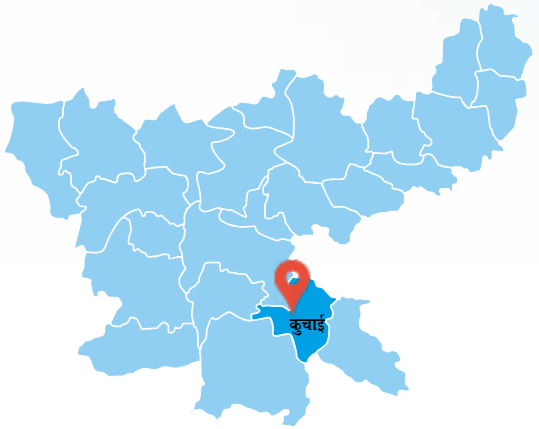

समूह के सदस्यों की कुल संख्या 10 है। जिसका गठन JTELP के तहत् वित्तीय वर्ष 2015–16 में किया गया है। समूह के गठन के उपरान्त सभी सदस्य नियमित बैठक करती हैं। बही–खाता का संधारण भी अद्यतन रखती हैं। बचत से आपसी लेन–देन भी नियमित रूप से करती हैं। उनकी आकस्मिक जरूरतों में सहायता होने लगी। फलस्वरूप उन्हें अब ऋण के लिए किसी अन्य के पास जाना नही पडता है। JTELP के तहत् रूपये 10000 का बीज पूँजी भी समूह को प्रदान किया गया है। वित्तीय वर्ष 2018–19 में समूह के सदस्यों को बकरी क्लस्टर योजना के तहत् बकरी शेड प्रदान किया गया। बकरा एवं बकरियों की नियमित देखभाल के लिए JTELP द्वारा 02 पशु–सखी का चयन हुआ। पशु–सखी द्वारा घर –घर भ्रमण कर बकरियों के स्वास्थ्य की देख–भाल एवं आवश्यक चिकित्सा डॉक्टर की परामर्श से की जा रही है। चयनित महिला लाभुकों को JTELP योजना द्वारा 4 बकरी एवं 1 बकरा प्रदान किया गया है। क्लस्टर योजना के तहत् श्रीमति गुरूवारी मुंडा को लाभुक के रूप में चयन किया गया। समूह के सदस्यों को बकरी पालन एवं उसके बेहतर रखरखाव का विभिन्न चरणों में प्रशिक्षण दिया गया। सभी बकरा एवं बकरी को उचित देखभाल, नियमित टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवा दिया गया है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

JTELP के तहत् गुरूवारी मुंडा को प्रषिक्षण उपरांत 4 बकरी एवं 1 बकरा प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में बताएँ अनुसार उसने अच्छी तरह से देखभाल की। फलस्वरूप वर्त्तमान में बकरियों द्वारा बच्चा दिया जाने उपरांत 11 बकरा–बकरियाँ हो गई है। श्रीमति गुरूवारी मुंडा द्वारा 2 बकरा को बेच गया है एवं जिससे उसे रूपये 7200 की आय हुई है। श्रीमति गुरूवारी मुण्डा अभी बहुत खुश है क्योंकि वे कहती है कि पहले बकरा–बकरियों में मरने की संख्या ज्यादा थी परन्तु प्रशिक्षण एवं JTELP के तहत् नियमित जाँच, टीकाकरण से इसमें बहुत कमी आई है। बकरी पालन योजना श्रीमति मुंडा के पारिवारिक आय का एक वैकल्पिक साधन बन चुका है। और वह इससे बहुत, खुश है।

वर्त्तमान में श्रीमति मुंडा द्वारा बकरी पालन किया जा रहा है । इस कार्य को वे लगातार करतें रहना चाहती है क्योंकि इसने उसे आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने में बहुत सहायता दी है एवं कृषि कार्य के अलावे एक नया रोजगार दिया है।

शीर्षक/कार्य : मुर्गी पालन (संगीता मुंडा की सफलता)

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सरस्वती महिला समूह	अरूवाँ	अरूवाँ	कुचाई	सरायकेला - खरसावाँ

01 पुर्व की स्थिति

सरस्वती महिला समूह, अरूवाँ गाँव में है जो प्रखण्ड मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यह प्रखण्ड दुर्गम श्रेणी क्षेत्र में आता है। यह एक आदिवासी बहुल गाँव हैं। गाँव में पहले कोई महिला समूह नही था ओर ना ही कोई महिला समूह के विषय में जानती थी। महिलायें असंगठित थीं। कोई व्यक्तिगत बचत नहीं था। व्यतिगत आवश्यकताओं के लिए रिश्तेदारों या अन्य व्यक्तियों से उधार या लोन लेना पडता था। आय अर्जन के लिए खेती कार्य छोड़ कर कोई आर्थिक कार्य नही करती थीं। आत्मविश्वास की कमी तथा दुरदर्शिता की कमी थी। महिलाए कृषि मजदूरी पर निर्भर रहती थी, दैनिक मजदूरी के अलावे आय का कोई अन्य साधन नही था। देशी तरीके से मुर्गीपालन का कार्य घरेलू एवं पारम्पारिक जरूरतों के लिए करते थे। किसी तरह का कोई टीकाकरण मुर्गियों को नही करते थे। कोई लक्ष्य निर्धारित नही था। मुर्गी को हमेशा खुला छोड़ देते थे। मुर्गीयाँ बहुत कम 10–15 अंडे मात्र दंती थी। अपनी जरूरतों के लिए परिवार पर निर्भर रहती थीं।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

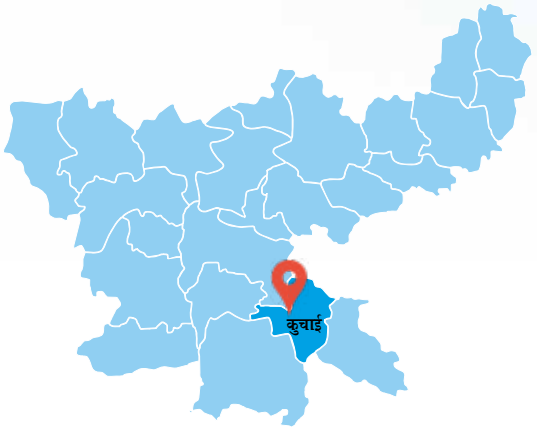

समूह के सदस्यों की कुल संख्या 12 है। जिसका गठन JTELP के तहत् वित्तीय वर्ष 2015–16 में किया गया है। समूह के गठन के उपरान्त सभी सदस्य नियमित बैठक करती हैं। बही–खाता का संधारण भी अद्यतन रखती हैं। बचत से आपसी लेन–देन भी नियमित रूप से करती हैं। उनकी आकस्मिक जरूरतों में सहायता होने लगी। फलस्वरूप उन्हें अब ऋण के लिए किसी अन्य के पास जाना नही पडता है। JTELP के तहत् रूपये 10000 का बीज पूँजी भी समूह को प्रदान किया गया है। वित्तीय वर्ष 2017–18 में समूह के सदस्यों को मुर्गी क्लस्टर योजना के तहत् मुर्गी शेड प्रदान किया गया। मुर्गियों की नियमित देखभाल के लिए JTELP द्वारा 02 पशु–सखी का चयन हुआ। पशु–सखी द्वारा घर –घर भ्रमण कर मुर्गीयों के स्वास्थ्य की देख–भाल एवं आवश्यक चिकित्सा डॉक्टर की परामर्श से की जा रही है। मुर्गीयों के साथ–साथ ड्रिंकर – फीडर भी दिया गया हैं। महिलाओं को दो किस्तों में 50–50 करके कुल 100 मुर्गा–मुर्गियाँ प्रदान किया गया है, साथ शुरूआती मुर्गी–चारा भी JTELP योजना द्वारा 04 किश्तों मे प्राप्त हुआ है। अभी प्रतिदिन मुर्गी को पीने का पानी बदलते है। मुर्गीयों को अतिरिक्त आहार खिलाते है, जिससें मुर्गीयों को पोषण मिलता है अैर स्वस्थ्य रहती है। क्लस्टर योजना के तहत् श्रीमति संगीता मुंडा को लाभुक के रूप में चयन किया गया। समूह के सदस्यों को मुर्गी पालन एवं उसके बेहतर रखरखाव का विभिन्न चरणों में प्रशिक्षण दिया गया।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

JTELP के तहत् संगीता मुंडा को दो किस्तों में 50–50 कुल 100 मुर्गा –मुर्गियाँ प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में बताएँ अनुसार उसने अच्छी तरह से देखभाल की। फलस्वरूप छः माह में मुर्गियों द्वारा अंडा दिया जाने लगा। श्रीमति मुंडा द्वारा प्रत्येक अंडा को 5–6 रूप्ये करे बेचा गया एवं मुर्गों को प्रति मुर्गा 200–250 रूपये किलो के हिसाब से बंचा गया। वर्त्तमान तक श्रीमति संगीता मुंडा द्वारा कुल रूपये 28000 का व्यक्तिगत मुनाफा कमा चुकी है। मुर्गी पालन योजना श्रीमति मुंडा के पारिवारिक आय का एक वैकल्पिक साधन बन चुका है। और वह इससे बहुत, खुश है।

वर्त्तमान में श्रीमति मुंडा द्वारा चुजों का क्रय करके मुर्गी पालन किया जा रहा है । इस कार्य को वे लगातार करतें रहना चाहती है क्योंकि इसने उसे आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने में बहुत सहायता दी है एवं कृषि कार्य के अलावे एक नया रोजगार दिया है।

शीर्षक/कार्य : कम लागत वाले मुर्गी शेड

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सागेन महिला समूह	धोलाडीह	कटंगा	राजनगर	सरायकेला - खरसावाँ

01 पुर्व की स्थिति

सागेन महिला समूह, धोलाडीह गाँव में है जो प्रखण्ड मुख्यालय से 10 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यह एक आदिवासी बहुल गाँव हैं। गाँव में पहले कोई महिला समूह नही था ओर ना ही कोई महिला समूह के विषय में जानती थी। महिलायें असंगठित थीं। कोई व्यतिगत बचत नहीं था। व्यतिगत अवश्यकताओं के लिए रिश्तेदारों या अन्य व्यतियों से उधार या लोन लेना पडता था। आय अर्जन के लिए खेती कार्य छोड कर कोई आर्थिक कार्य नही करती थीं। आत्म विश्वास की कमी तथा दुरदर्शिता की कमी थी। महिलाए कृषि मजदूरी पर निर्भर रहती थी, दैनिक मजदूरी के अलावे आय का कोई अन्य साध न नही था। देशी तरीके से मुर्गीपालन का कार्य घरेलू एवं पारम्पारिक जरूरतों के लिए करते थे। किसी तरह का कोई टीकाकरण मुर्गियों को नही करते थे। कोई लक्ष्य निर्धारित नही था। मुर्गी को हमेशा खुला छोड़ देते थे। मुर्गीयाँ बहुत कम 10–15 अंडे मात्र दंती थी। अपनी जरूरतों के लिए परिवार पर निर्भर रहती थीं।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

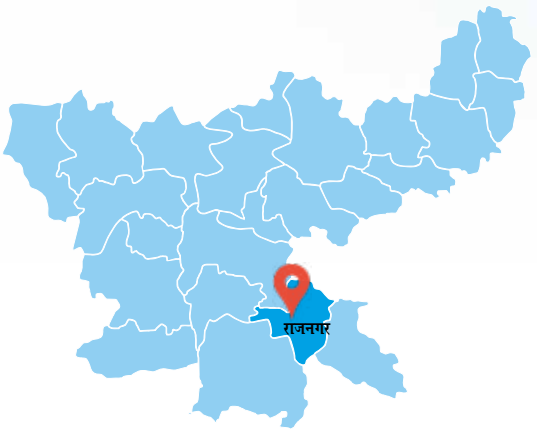

समूह के सदस्यों की कुल संख्या 14 है। जिसका गठन JTELP के तहत् वर्ष 2015 में किया गया है। समूह के गठन के उपरान्त सभी सदस्य नियमित बैठक करती हैं। बही–खाता का संधारण भी अद्यतन रखती हैं। बचत से आपसी लेन–देन भी नियमित रूप से करती हैं। उनकी आकस्मिक जरूरतों में सहायता होने लगी। फलस्वरूप उन्हें अब ऋण के लिए किसी अन्य के पास जाना नही पडता है। श्रज्स्च् के तहत् रूपये 10000 का बीज पूँजी भी समूह को प्रदान किया गया है। वित्तीय वर्ष 2018–19 में समूह के सदस्यों को मुर्गी क्लस्टर योजना के तहत् मुर्गी शेड प्रदान किया गया। मुर्गियों की नियमित देखभाल के लिए ग्राम सभा द्वारा 02 पशु–सखी का चयन हुआ। पशु–सखी द्वारा घर –घर भ्रमण कर मुर्गीयों के स्वास्थ्य की देख–भाल एवं आवश्यक चिकित्सा डॉक्टर की परामर्श से की जा रही है। मुर्गीयों के साथ–साथ ड्रिंकर – फीडर भी दिया गया हैं। महिलाओं को दो किस्तों में 40–40 करके कुल 80 मुर्गा–मुर्गियाँ प्रदान किया गया है, साथ शुरूआती मुर्गी–चारा भी JTELP योजना द्वारा 04 किश्तों मे प्राप्त हुआ है। अभी प्रतिदिन मुर्गी को पीने का पानी बदलते है। मुर्गीयों को अजोला खिलाते है, जिससें मुर्गीयों को पोषण मिलता है और स्वस्थ्य रहती है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

महिलायें अब संगठित हैं , श्रमदान के द्वारा तथा हर कार्यो मे मिलजुल कर काम करतीं हैं। महिलाएँ संगठित है। समूह का वर्त्तमान कुल बचत 10980 रूपये है एवं आपसी लेन देन 13560 रूपये है। समूह के सदस्यगण मुर्गी एवं अंड़ा से नियमित आमदनी प्राप्त कर रही है। समूह के सदस्यों की आय 8–10 हजार हो चुकी है। समूह महिलाओं की पारिवारिक आजीविका मे सुधार हुआ है। मुर्गीयों के चारा की जरूरतों को पूरा करने के लिए रबी कृषि योजना से जुड़ कर तीसी, खेसारी, सरसो, एवं गेहूँ खेती का आरम्भ कर चुकी है। अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए कोचिंग पढ़ रहे है। समूह में मुर्गी चारा निर्माण की योजना है ताकि उत्पादन लागत कम हो और लाभांश में बढ़ोतरी हो।

शीर्षक/कार्य : एसएचजी दवारा आय सृजन गतिविधि

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सरजामबा महिला समूह	बलाधबाँध	पठान्मारा	सरायकेला	सरायकेला - खरसावाँ

01 पुर्व की स्थिति

सरजामबा महिला समूह, बलाधबाँध गाँव में है जो प्रखण्ड मुख्यालय से 8 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यह एक आदिवासी बहुल गाँव हैं। गाँव में पहले कोई महिला समूह नही था ओर ना ही कोई महिला समूह के विषय में जानती थी। महिलायें असंगठित थीं। कोई व्यतिगत बचत नहीं था। व्यतिगत आवश्यकताओं के लिए रिश्तेदारों या अन्य व्यतियों से उधार या लोन लेना पडता था। आय अर्जन के लिए खेती कार्य छोड़ कर कोई आर्थिक कार्य नही करती थीं। आत्म विश्वास की कमी तथा दुरदर्शिता की कमी थी। महिलाए कृषि मजदूरी पर निर्भर रहती थी, दैनिक मजदूरी के अलावे आय का कोई अन्य साध न नही था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

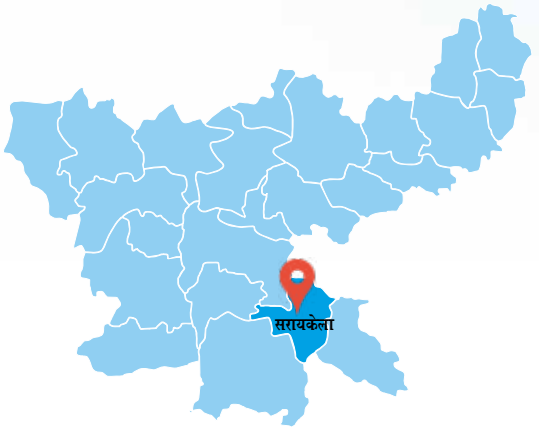

समूह के सदस्यों की कुल संख्या 12 है। जिसका गठन श्रज्म्स्च के तहत् वित्तीय वर्ष 2015–16 में किया गया है। समूह के गठन के उपरान्त सभी सदस्य नियमित बैठक करती हैं। बही–खाता का संधारण भी अद्यतन रखती हैं। बचत से आपसी लेन–देन भी नियमित रूप से करती हैं। वर्त्तमान में समूह का बचत रूपये 30260, आपसी लेन–देन रूपये 114000 एवं ऋण वापसी रूपये 55800 है। उनकी आकस्मिक जरूरतों में सहायता होने लगी। फलस्वरूप उन्हें अब ऋण के लिए किसी अन्य के पास जाना नही पडता है। JTELP के तहत् रूपये 10000 का बीज पूँजी भी समूह को प्रदान किया गया है। व्यवसाय करने और आपसी लोन पर कई बार प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण पाकर महिलाओं में कुछ कर दिखाने की सोच आयी और पहले व्यवसाय करना शुरू किये। समूह की सदस्यों ने सिलाई कटाई का कार्य सीखकर समूह से ऋण लेकर सिलाई मशीन खरीद कर सिंलाई सेंटर खोलकर स्वरोजगार कर रहीं है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

जेटीडीएस के इस तरह मार्गदर्शन पाकर समूह की महिलाएँ सिलाई कटाई सीखी। इसके शुरूआत में मुक्ता हाईबुरू, बिरंग हाईबुरू और जेमा हाईबुरू नें समूह से ऋण लेकर सिलाई मशीन खरीदी और अपना अपना व्यवसाय शुरू किया।
धीरे धीरे इन तीनों महिलाओं के व्यवसाय सें परिवार में आय की वृद्वि आने लगी। महिना में इन तीनों सदस्यों को 5000 से लेकर 6000 की कमाई होती है। महिलाओं के आर्थिक स्थिति में काफी बदलाव आया है, परिवार में खुशहाली आई है। अपने अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा रहे हैं। इतना ही नही इन महिलाओं ने समूह के अन्य महिलाओं एवं गाँव के युवातियों प्रशिक्षण भी दे रहे हैं।
समूहों द्वारा एक चेन सिस्टम बनाने की योजना है जिससे समूहों के सदस्यगण अन्य दुसरे आसपास के गाँवों से भी आर्डर प्राप्त कर सके, जिससे उनका व्यवसाय धीरे–धरे फैले।

शीर्षक/कार्य : स्वयं सहायता समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
लक्ष्मी महिला समिति	सुंडीसुरनीया	नीमडीह	टोन्टो	पश्चिमी सिंहभूम

01 पुर्व की स्थिति

हीरामती टुंटी, 42 वर्षीया हो आदिवासी महिला। श्रकोई व्यतिगत बचत नहीं था। व्यतिगत अवश्यकताओं के लिए रिश्तेदारों या अन्य व्यतियों से उधार या लोन लेना पडता था। आय अर्जन के लिए परम्पारिक खेती के अलावे कोई आर्थिक कार्य नही करती थीं। परिवार के लिए कोई आर्थिक योजना नहीं थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

'' लक्ष्मी महिला समिति'' की ये सदस्या । वह समूह की बैठक में नियमित भाग लेती हैं एंव जरुरत के अनुसार श्रमदान भी करती हैं। साथ ही नियमित बचत भी सूमह में देती हैं। वर्त्तमान में समूह में हीरामती का व्यक्तिगत बचत 1650 रू है। विभिन्न मुर्गी पालन एंव SHG प्राप्त प्रशिक्षणों के कारण आत्मविश्वासी महिला। वर्ष 2017 में जे0टी0डी0एस0 द्वारा ग्राम सभा के माध्यम से मुर्गी पालन हेतु शेड निर्माण के लिये लाभुक के रूप में उनका चयन किया गया। शेड निर्माण के उपरांत उन्हें 50 चुजा एवं दाना प्रदान किया गया। चुजों की देखभाल उन्होंने अच्छी तरह से की।

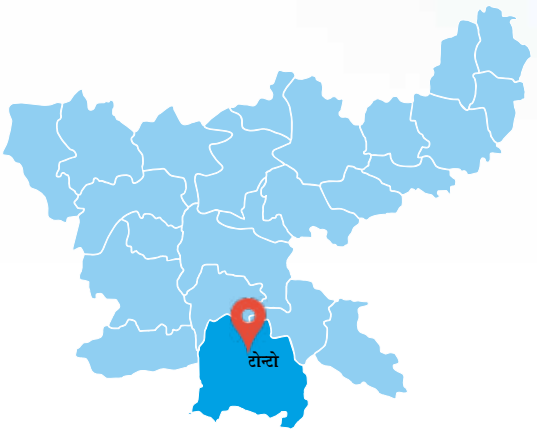

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

3 माह बाद जब चुजे बड़े होकर मुर्गे बने तब हीरामती ने 22 मुर्गों को बेचकर उसने 8800/– रूपया कमाये। शेष मुर्गियों से उन्हें अब तक 360 अन्डे प्राप्त हुए हैं। जिन्हें बेचकर उन्हें कुल 1800/– रूपये की आमदनी हुई है। हीरामती के पास अभी भी उनके मुर्गी शेड में 28 मुर्गा/मुर्गियां हैं। वह कहती हैं कि मुर्गे एवं अण्डों की बिक्री से उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी हुई है। स्कूल जाने वाले अपने बच्चों की अवश्कताओं को पुरा करने के कारण अबतक नियमित रुप से जातें हैं। अब उनका परिवार दानों सांझ भरपेट भोजन करता है। उनके खानपान एवं रहन सहन के स्तर में सुधार हुआ है। हीरामती उसके गाँव के लिए एक मिशाल है जिनके घर की देशी मुर्गियां भी अब किसी मौसमी प्रकोप से नहीं मरतीं। JTDS से प्राप्त मुर्गी शेड को देशी मुर्गियों से भर देना और कभी खाली नहीं रखना ही उसके भविष्य की योजना है।

शीर्षक/कार्य : स्वयं सहायता समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
बाले सिंगी महिला समिति	कैन्वा	नीमडीह	टोन्टो	पश्चिमी सिंहभूम

01 पुर्व की स्थिति

लक्ष्मी सुन्डी, उम्र 62 वर्षीया विधवा महिला। परिवार के 5 सदस्यों के भरण पोषण की अकेली जिम्मेवार। परम्परागत खेती ही एकमात्र आय अर्जन का मुख्य स्रोत। परम्परागत खेती से औसत उपज जो परिवार के जरुरतों को पुरा नहीं कर पाती।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

''बाले सिंगी महिला समिति'' की ये अध्यक्ष है। जोश आत्मविश्वास एंव नेतृत्व क्षमता से भरी महिला। वर्ष 2019 में खरीफ फसल अन्तर्गत लक्ष्मी ने जे0टी0डी0एस0 के सहयोग से 80 डीसमील जमीन पर उरद की खेती की। जे0टी0डी0एस0 की ओर से लक्ष्मी को बीज एवं खाद साथ में कृषि संबंधित प्रशिक्षण मिला।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस वर्ष पिछले वर्ष की तुलना में उरद का 3 गुणा ज्यादा फसल उत्पादन हुआ है। उरद की खेती से लक्ष्मी को कुल 250 किलो ग्राम उरद प्राप्त हुआ। जो उसके इस वर्ष के जरूरतों के लिये पर्याप्त है। लक्ष्मी ने 60 रूपया प्रति किलो की दर से स्थानीय हाट में कुल 100 किलो उरद की बिक्री कर 6000/– रुपया कमाई। JTDS के द्वारा समुह सदस्य बनने एंव खरीफ फसल में सहयोग से परिवार की निजी जरूरतों को पुरा किया जाता है। अब अकेलापन व विधवापन की बेचारगी का अहसास नहीं होता। जे0टी0डी0एस0 द्वारा रबी फसल 2019 में भी मटर, मसुर, तिसी एवं खेसारी का बीज खाद एवं कीटनाशक उपलब्ध कराई गई है। उसके भविष्य की यही योजना है कि वह अपने खेतों में अच्छे फसल का उत्पादन कर अपने परिवार की आर्थिक व रहन सहन के स्तर को बेहतर बनाना।

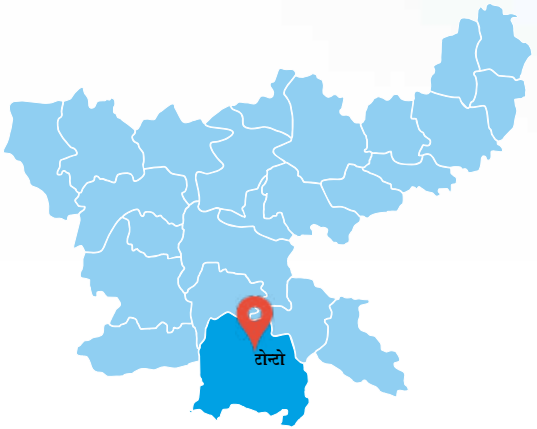

शीर्षक/कार्य : बकरी प्रजनन केंद्र

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
माँ लक्ष्मी महिला मंडल	बधोंडीह	देबांदीर	सोनुआ	पश्चिमी सिंहभूम

01 पुर्व की स्थिति

गाँव में पहले कोई महिला समूह नही था ओर ना ही कोई महिला समूह के विषय में जानती थी। महिलायें असंगठित थीं।कोई व्यतिगत बचत नहीं था। व्यतिगत अवश्यकताओं के लिए रिश्तेदारों या अन्य व्यतियों से उधार या लोन लेना पड़ता था। आय अर्जन के लिए खेती कार्य छोड़ कर कोई आर्थिक कार्य नही करती थीं। आत्म विश्वास की कमी तथा दुरदर्शिता की कमी थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

समूह के गठन के उपरान्त सभी सदस्य नियमित बैठक करती हैं। बही–खाता का संधारण भी अद्यतन रखती हैं। बचत से आपसी लेन–देन भी नियमित रूप से करती हैं। उनकी आकस्मिक जरूरतों में सहायता होने लगी। फलस्वरूप उन्हें अब ऋण के लिए किसी अन्य के पास जाना नही पडता है। जे0 टी0 डी0 एस0 की आरे से समूह को बीज पूँजी के रूप में राषि 10000 रू प्राप्त हुआ है। इस राशि का उपयोग समूह के सदस्य ऋण लेकर हर मौसमी व्यवसाय करते हैं। परियोजना की ओर से महिला समूह को आय अर्जन गतिविधि के लिए बकरी प्रजनन केन्द्र योजना दिया गया। प्रजनन केन्द्र के बनने में समूह की दीदीओं ने अपना श्रमदान भी किया। बकरी प्रजनन केन्द्र में जे0 टी0 डी0 एस0 की ओर से 40 बकरी प्रदान किया गया है। प्रजनन केन्द्र की देखभाल एवं बकरियों का चराने का कार्य बारी–बारी से समूह की दीदी करती हैं।

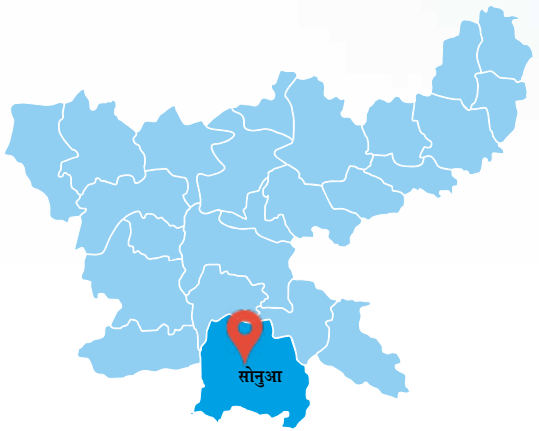

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

महिलायें अब संगठित हैं , श्रमदान के द्वारा तथा हर कार्यो मे मिलजुल कर काम करतीं हैं। कुल बचत 23650 रुपये है तथा आपसी लेन देन 14580 रुपये है। प्रजनन केन्द्र में 12 नये बकरियों का जन्म हुआ है। अब कुल 52 बकरियां इनके पास हैं। प्रजनन केन्द्र से सभी दीदी को एक स्थाई आमदनी का साधन प्राप्त हुआ है। समूह की महिलाओं ने मिलकर कुल 1 एकड़ जमीऩ में आलू की खेती पहली बार किया है, आलू की खेती से उन्हें अच्छी आमदनी होने की उम्मीद है। आस–पास के क्षेत्र में समूह की दीदीयों की लगन एवं मेहनत की चर्चा है। समाज में सम्मान है। इनके द्वारा उठाया गया यह कदम अनुकरण ीय है। भविष्य में हर आय अर्जन गतिविधि को साथ करते हुए अपने अपने घरों की आर्थिक स्थिति को मजबुत करना है।

शीर्षक/कार्य : स्वयं सहायता समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सेंया मसकल महिला समूह	रामपोसी	नीमडीह	टोन्टो	पश्चिमी सिंहभूम

01 पुर्व की स्थिति

गाँव – रामपोसी, पंचायत – नीमडीह, प्रखण्ड – टोन्टो अन्तर्गत एक आदिवासी ''हो'' जनजाति का गाँव है। जिसमें कुल 55 परिवार रहते हैं। जिसमें से 3 परिवार पिछड़े वर्ग से हैं। जे0टी0डी0एस0 से जुड़ने के पूर्व यहाँ के महिलाओं की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इन्हे काम करने की ललक तो थी, किन्तु आवश्यक सहयोग न मिलने के कारण कोई भी आर्थिक गतिविधि आरंभ कर पाना इनके बूते की बात नहीं थी। गाँव का मुख्य आजीविका धान की खेती एवं मजदूरी है। महिलायें असंगठित तो थीं ही कोई व्यतिगत बचत भी नहीं था। व्यतिगत अवश्यकताओं के लिए रिश्तेदारों या अन्य व्यतियों से उधार या लोन लेना पडता था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

जे0टी0डी0एस0 द्वारा इस गाँव में गठित स्वयं सहायता समूह सेंया मसकल महिला समूह को 2 इकाई सूकर शेड दिया गया। जिसमें समूह की महिलाओं ने मिलकर 10 मादा सूकर एवं 4 नर सूकर का क्रय किया। शेडों की साफ सफाई एवं सूकरों का देखभाल चारा–पानी की व्यवस्था हेतु समूह की महिलाओं ने बारी–बारी से जिम्मेदारी ली। जिसके फलस्वरूप सभी सूकर बड़े हो गये। सुकर पालन प्रशिक्षणों में सभी समुह सदस्यों ने भाग लिया।

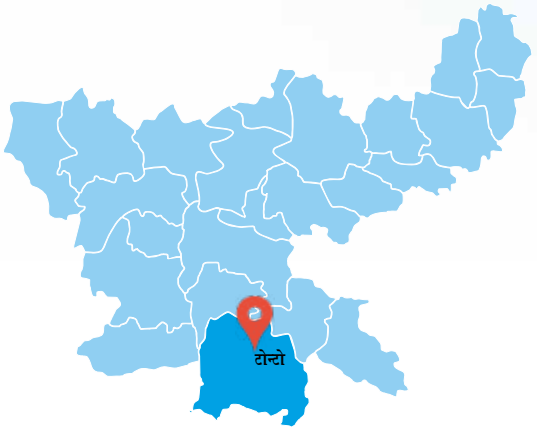

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

वर्त्तमान समय तक दोनों शेडों में कुल 23 बच्चों का जन्म हुआ (08 मादा एवं 15 नर)। 12 बड़े सूकरों को बेच कर दोनों समूह ने कुल 125500/– रूपया कमाया। समूह की अध्यक्ष बालेमा सुन्डी कहती है कि सूकर बिक्री से प्राप्त बंटवारे की राशि से उसने अपने लिये एक मोबाईल एवं घर के लिये एक साईकल खरीदा। सदस्या मंजूश्री सुन्डी ने अपने हिस्से की राशि से घर के लिये 6 कुर्सियां एवं 1 बकरी खरीदी हैं। सभी सदस्यों ने अपने अपने हिस्से की राशि से परिवार के संसाधनों के क्रय में व्यय किया है। आज भी इनके दो शेडों में 18 सूकर हैं जिनकी देखभाल वे पारी पारी से व मिलजुल कर किया जाता है। समूह की सदस्यों को अब पैसे के लिये किसी अन्य के पास हाथ नही फैलाना पडता है। इस सुकर पालन के आय अर्जन गतिविधि को समुह में करते हुए अपने अपने घरों के संसाधनों को बढाना व आर्थिक स्थिति को मजबुत करना ही इनके भविष्य की कार्ययोजना है।

शीर्षक/कार्य : किराना दुकान

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
जीवन ज्योती समूह (डोमनी पहरिन)	छोटा सिन्नी	डुमरिया	बोआरीजोर	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

सुदुर गांव प्रकृति की गोद मे पहाड़ो के बीच मे है एक गांव छोटा सिन्नी जो कि पंचायत डुमरिया प्रखण्ड बोआरीजोर मे आता है। यह गांव मोहनपुर चौक से करीब 22 से 23 किलोमीटर दुर है। पुर्व मे कोई भी कार्यकर्ता इस गांव मे नही आते थे जिसके कारण इस गांव मे विकास थम गया था। शहर से बहुत दुर होने के कारण उनका कोई सोच नही था और उनका कहना है कि पहले वहां पर कोई नही आता था और हमलोगों को व्यवसाय का कोई सोच नही था और कोई भी आने से उनको लगता था कि कोई मेरा शोषण करेगा और हमलोग इसी गरीबी मे रहेगें जैसे जीवित रह रहे है वैसे ही मर जाएगें और कोई भी मेरा मदद नही कता है।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

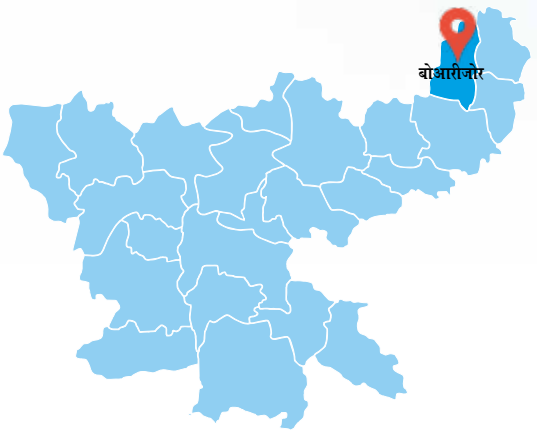

जे.टी.डी.एस के समूह मे गठन होने पर इसके समूह मे जुड़ गयी और उसके बाद उसे समझ मे आया कि SHG समूह मे जुड़ने से बचत क्या होता है सीखा और बैठक मे बचत मे आय बढाने की सोच बदल गयी। समूह मे जुड़ने के बाद तीसरा माह से बचत जमा करना शुरू की। समूह की सभी सदस्य शुरू मे 5 रूपये ही बचत जमा करती थी बाद 6 माह के बाद 10 रूपये साप्ताहिक जमा करना शुरू की उसके बाद धीरे धीरे जमा करने के बाद समूह चलना शुरू हुआ छोटा सिन्नी गांव मे एक बाहर के आदमी सप्ताह मे दो दिन जरूरत के समान का दुकान लगता था मात्र दो दिन लेकिन बाकी दिनों मे जब जरूरत पड़ता था तो काफी दिक्कत होती थी डोमनी पहाड़िया ने निर्णय किया भ्ळ समूह से 5,000 रूपये कर्ज लिया और अपना बरबट्टी खेती से दस हजार रूपया लेकर किराना का दुकान की है जिसमे पुरे गांव के लोगों को सुविधा हो गया कि हर समय उनको जरूरत का सभी सामान मिल गया और पहले जो आदमी आकर गांव मे समान बेच रहा था सो आज नही आ रहा है। अब समूह के डोमनी पहाड़िन की गांव के लोगो का जरूरत पुरा कर रही है। समूह मे लोन की राशि 5,000 लेने के बाद कुल राशि 10,000 की आय हुई है, साथ ही बाजार आने जाने मे उन्हे साफी समय और श्रम लगता था।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस काम से SHG समूह का सोच बदल गया और व्यवसाय बढ़ रहा है। जो व्यवसाय हुआ है इसके कारण महिलाओं मे बचत की आदत बढ़ गयी है पहले समूह मे 5 रूपये बचत करते थे लेकिन अब 10 रूपये की बचत हो रही है साथ ही महिलाओं मे व्यवसाय बढ़ाने की सोच बदल गयी है और दुकान की आय प्रगति मे है। डोमनी का कहना है कि खुद ही मैं समूह को संगठित होकर काम करने का फायदा बताती है जिससे पुरे गांवों को सेवा कर रही है। डोमनी की सोच बदल गयी कि बाहर से आकर कोई मदद करेगा उससे बेहतर है कि खुद की मदद खुद करें।

शीर्षक/कार्य : बाँस का काम

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
जोबा बाहा समूह	बसडन्डा	डुमरिया	बोआरीजोर	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

मोहनपुर से करीब 21 किलोमीटर की दुरी मे ग्राम बसडन्डा पंचायत डुमरिया प्रखण्ड बोआरीजोर मे आता है। उस गांव मे बहुत सारे बाँस के पेड़ है ऐसा प्रतित होता है जैसे की वहां पर बाँस की खेती होती है। इस गांव मे JTDS आने के आने से पहले वहां पर कोई भी एफ.एन.जी.ओ और कोई भी आदमी नही आते थे जिसके कारण महिलाएं संगठित नही थे। वो लोग बांस की टोकरी बनाते थे उसे अलग अलग प्रत्येक सप्ताह दो हटिया मे बांस की टोकरी बेचते थे और इनका आय प्रत्येक हटिया मे 600 रूपये ही आय होता था। इस कम राशि से उनका परिवार चलाना बहुत मुश्किल हो रहा था और वो हमेशा गरीब से गरीब होते जा रहे थे और उनका परिवार भी बढ़ता जा रहा था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

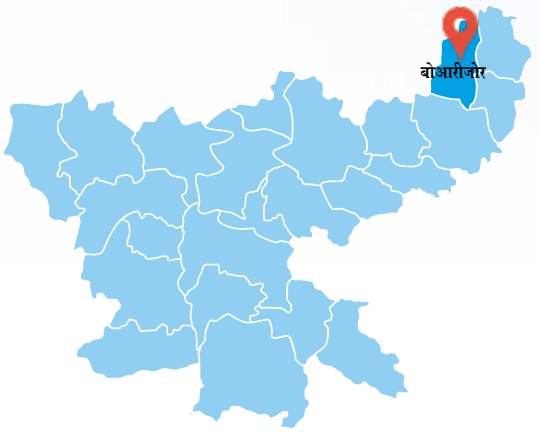

जे.टी.डी.एस आने के बाद इसका समूह जोबा बाहा समूह का गठन दिनांक 10.09.2016 को हुआ जिसमे समूह का सप्ताहिक मिटिंग हुआ जिसमे वो लोग 10 रूपये बचत करना शुरू किये। पुंजी के अभाव मे सदस्य के लोग काम नही कर पा रही थी लेकिन समूह मे बैठक मे निर्णय किया गया कि गावो मे बहुत बांस है लेकिन गरीबी के कारण पुंजी नही लगा पाते है लेकिन जे.टी.डी.एस से बीज पंजी हेतु 10,000 की राशि मिली तो महिलाओं से निर्णय किया कि इस पुंजी को बांस की टोकरी ज्यादा मात्रा मे बनायेंगें और सभी परिवार इस कार्य मे शामिल करने और समूह मे मिल करके टोकरी बनायेंगें और उसकी मार्कैटिंग हटिया मे करेंगें। और सभी पुरूष को शामिल किया गया इस निर्णय मे महिलओं ने 16,000 की पुंजी लगायी और 30,000 की बिक्री एक हटिया मे किया और व्यवसाय बढ़ाने का निर्णय लिया। महिलाओं ने मिल करके जो कार्य किये उसमे से उनकी टोकरी ज्यादा हो गया और एक महिना मे आठ हटिया मे उनके सदस्यों को प्रतिमाह 2,400 की आय हो रही है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस रोजगार से महिलाएं व्यस्त हो गयी है और उनका सोच बदल गया है कि अकेले नही मिल करके संगठित होकर काम करने मे उनका समय हटिया मे बैठने मे उनका समय बच रहा है और गांव मे बैठ कर ही वो लोग टोकर बना रहे है। परिवार मे आय आ रहा है और परिवार की स्थिति थोड़ी ठीक हो रही है। आगे की योजना है कि केवल इमलीटांड के हटिया के लिए ही नही बल्कि और भी हटिया आस पास के जैसे मोहनपुर हटिया मे भी ज्यादा मात्रा मे इस रोजगार को बढ़ायेंगें और परिवार की स्थिति का भी सुधार होगा।

शीर्षक/कार्य : कृषि

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
कमल (SHG)	तिलाबाद	बड़ा सिन्दरी	सुन्दरपहाड़ी	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

गांव तिलाबाद पंचायत बड़ा सिन्दरी सुन्दरपहाड़ी प्रखण्ड के अन्तर्गत स्थित है। इस गांव के समूह का नाम कमल स्वयं सहायता समूह है इसका गठन दिनांक 11.12.2015 को हुआ था। इस गांव मे एक दीदी जिसका नाम देवी पहाड़िन है उसके पति का नाम धरमा पहाड़िया है वो इस गांव के स्थायी निवासी है। इस परिवार का भरण पोषण पुर्णतः खेती बारी पर ही आश्रित है। इसके पास 3 एकड़ जमीन है जिससे उसको सालाना आमदनी 60,000 रूपये की होती है। इसके अलावा इनके पास 2 बैल एवं 2 बकरी है।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

इस गांव मे जे.टी.डी.एस के परियोजना आने के बाद गांव मे खरीफ की खेती का योजना कियान्वित किया गया है। जिसमे देवी पहाड़िन का भी नाम सामिल किया गया है। इसके तहत परियोजना से तरफ से एक दिवसीय प्रशिक्षण का भी आयोजन किया गया। और समूह के सभी सदस्य आपस मे चर्चा करके खरीफ की खेती करने का निर्णय लिया गया। उसके बाद इस परियोजना के तरफ से 1.5 एकड़ जमीन पर खरीफ की खेती पर बल दिया गया। समूह मे मकई की खेती के लिए 3.30 एकड़ जमीन 2.640 किलोग्राम लगाया गया।

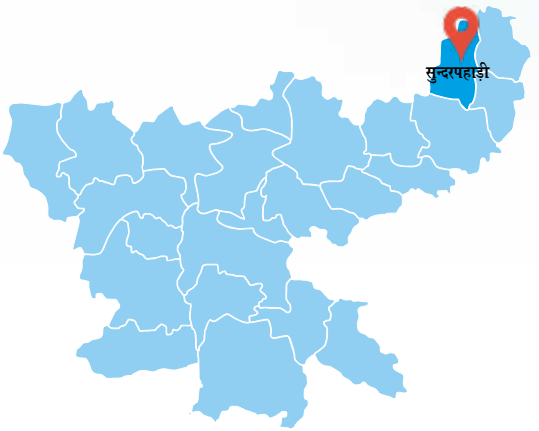

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस समूह के सदस्यों द्वारा बताया गया विधि से खेती करने पर अच्छी फसल उपजाऊ होने लगी पिछले वर्ष के मुताबिक इस वर्ष अच्छी फसल होने लगा । कुल उपज 72.6 kg हुआ और 50 kg, नजदिकी बाजार में बेचने पर लगभग कुल 1000/– रू0 आमदानी हुआ। इस तरह उनलोगों ने इस फसल को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया साथ ही इससे उन समूहों को अच्छी आमदनी भी हो रही है।

शीर्षक/कार्य : महुआ खरिद/बिक्री और खाद्य पैकिंग

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सिरमा एपिल महिला समूह	तिलाबाद	तिलाबाद	सुन्दरपहाड़ी	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

गोड्डा से 15 किलोमीटर दुर मे गांव तीलाबाद बसा हुआ है। यह गांव बहुत बड़ा है गांव की थोड़ी दुरी पर जंगल है जिसके कारण वहां पर बहुत सारे महुआ के पेड़ है जिससे सभी परिवार की महिलाएं महुआ चुनते है और अपने अपने गांव के हटिया मे बेच करके अपने परिवार को मदद करते है। लेकिन इसमे इनका इस काम मे ज्यादा आय नही मिलता था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

जे.टी.डी.एस आने के बाद गांव तीलाबाद मे सीरमा ईपील महिला का गठन हुआ। इस समूह में कुल 12 सदस्य है सप्ताहिक बचत होती है सभी सदस्य नियमित बचत एवं आपसी लेन–देन भी करते है सिरमा ईपील महिला समूह में जे टी डी एस से बीज पुँजी राशि भी प्राप्त किया गया उस राशि से सभी सदस्य मिलकर 10000/–रू0 का महूँआ 20/–रू0 के दर से क्रय किया गया। जिसमें 35/–रू0 के दर से विक्रय करने पर 17500/–रू0 हुआ और 7500/–रू0 का लाभ प्राप्त हुआ उसके बाद हमारे समूह के सदस्य माह नवम्बर से Food Packing का कार्य करने लगे जिसे शुरू में अपना पुँजी 10000/–रू0 लगया गया । समूह का कहना है कि मौसम के अनुसार महुआ की बिक्री नही होती है इसलिए स्टौक मे इसे रखकर सुखाकर उसे पैकेट मे तैयार का औफ सिजन मे बेचने पर ज्यादा फायदा होगा।

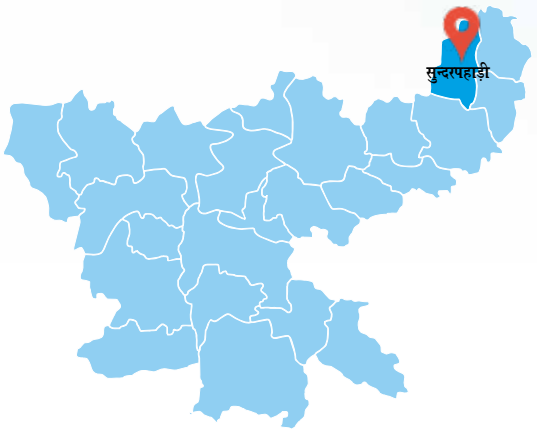

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

महिला समूह का कहना है कि हमलोगों को महुआ से जो फायदा हुआ है। साथ ही समूह का निर्णय है कि आगे की जो प्लान है उसमे समूह को पुंजी हो गया है उस गांव मे सभी पेड़ को खरीद लेंगें और जो बाहर से बेचने आता है उससे हमलोग नही लेंगें और खुद ही चुन करके साथ ही सुखा करके उसका मार्केटिंग खुद ही करेगें।

शीर्षक/कार्य : बकरी पालन

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सुरजमुखी बाहा समुह (मकलू सोरेन)	मोहनपुर	तिलाबाद	सुन्दरपहाड़ी	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

मकलू सोरेन गांव मोहन पुर मे रहती है उनका जिवन मुख्य कार्य खेती है। खेती से ही उनके परिवार मे कुल 6 सदस्य है जिसमे वो मिलकर खेती करती है लेकिन अगर मानसुन नही आता है तो उनको काम करने के लिए बाहर जाना पड़ता था और कर्ज के लिए चन्दना हटिया मे कर्ज लेना पड़ता था जिसके कारण परिवार का धर चलाना मुश्किल हो रहा था और कर्ज मे वो डुब गयी थी। उसके धर की स्थिति ठीक नही थी, उसके पास थोड़ा बहुत खेत, दो बैल एवं दो सुकर थे जिसके सहारे उनका जीवन यापन चल रहा था जिससे उसकी मासिक आय लगभग 800 रूपये प्रतिमाह थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

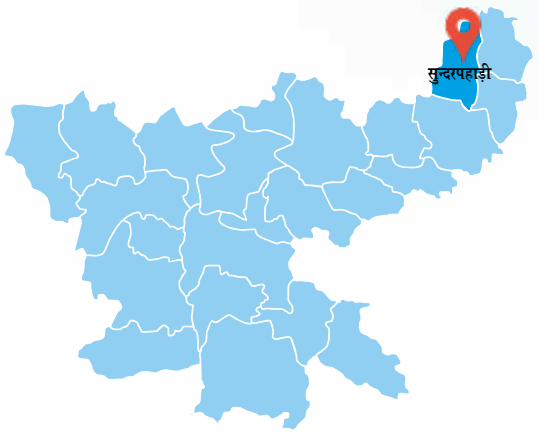

इस समूह का गठन दिनांक 28.11.2015 को हुआ। समूह से जुड़ने के बाद उसने समूह से 1,000 रूपये का ऋण लिया और उसमे कुछ राशि जोड़कर एक गाभीण बकरी क्रय किया जिसने कुछ समय बाद दो बकरी एवं दो बकरे को जन्म दिया जिसका पालन पोषण कर बड़ा कर उसने दो बकरा लगभग 9,000 रूपये मे बेचा और एक बकरी लगभग 3,000 मे विक्रय किया। उसके बाद उसने तीन बकरी और क्रय किया। उसने कुछ पुंजी लगाकर अपने ग्राम मे एक छोटा सा किराना स्टोर भी प्रारंभ किया जिससे उसके आय मे बढोतरी हुई साथ ही जब भी जरूरत होती है जो बकरी एवं सुकर को बेचकर ही अपना परिवार चला रही है और जो कर्ज था उसे वो धीरे धीरे पुरा कर रही है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

मकलू सोरेन का कहना है कि समूह के गठन करने से मेरा सोच बदल गयी है और कर्ज मे हमलोग नही फंसेगें। उसकी सोच है कि अपनी बकरी एवं सुकर को अपना व्यवसाय बनाने की सोच आयी है उनका सोच है कि भविष्य मे और ज्यादा सुकर एवं बकरी का अपना व्यवसाय बनाकर उसे बढाने की प्रयासरत रहेगें।

शीर्षक/कार्य : स्वयं सहायता समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सूरजमुखी स्वयं सहायता समूह	बड़ाचटकम	जोरडीहा	लिटटीपाड़ा	पाकुड़

01 पुर्व की स्थिति

पहले हमारे गांव के सभी लोगों की बहुत ही दयनीय स्थिति थी क्योंकि भोजन व पानी की व्यवस्था में लगे रहते थे। हमारे गांव में सरकार की योजना बहुत–सी आयी, परंतु, किसी भी योजना से हम ग्रामीणवासी को आगे बढ़ने की राह नहीं मिली। हमारे गांव के लोग बारिश के मौसम पर ही निहित थे जिससे धान, बाजरा, मकई आदि की खेती कर 4 से 8 महीने का भोजन प्रबन्ध कर पाते थे और रोजगार की तलाश में बाहर दूसरे राज्यों में जाया करते थे। हमारे गांव में किसी प्रकार का कोई संगठन नहीं था और न ही कोई एकजुट थे व जागरूक थे, गांव के पुरूष व कुछ महिला लोग हमेशा नशे में रहा करते थे । हमलोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण रिश्तेदार–व–साथी तथा महाजन से उधार लेने के लिए जेवर तथा अनाज आदि वस्तु गिरवी रखना होता था और डेढ़ गुणा उधार चुकता करना पड़ता था और न ही कोई प्रकार का बचत का तरीका जानते थे।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

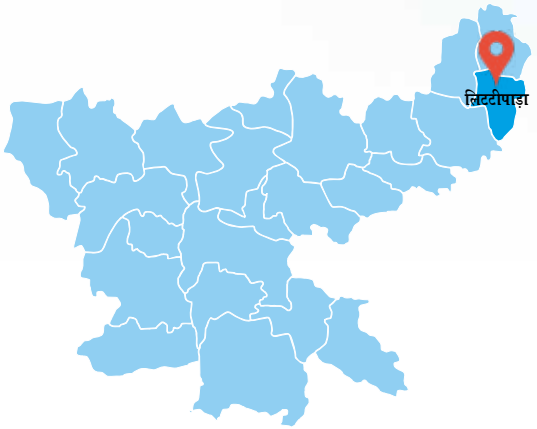

वर्ष 2015 में झारखण्ड ट्राईबल डेवलपमेंट सोसाईटी (JTDS) हमारे गांव में आने के बाद सबसे पहले ग्रामसभा कर GSPEC का गठन किया तथा ग्रामीण विकास कोष बनाया गया, महिला समूह, युवा समूह तथा पुरूष वर्ग के लोगों को JTELP के विषय में चर्चा कर पूर्ण रूप से बताया गया और महिला स्वयं सहायता समूह एवं युवा समूह का गठन किया गया। हमारे सूरजमुखी स्वयं सहायता समूह नामक महिला समूह है, जो JTDS के माध्यम से जानकारी के आधार पर साप्ताहिक बैठक कर 10–10 रूपये बचत करते है एवं आपस में लेन–देन भी करते है एवं JTDS के द्वारा सीड केपिटल 10000 रूपये भी प्राप्त हुआ है। इस समूह के सदस्य लिखना भी सीखा है और अपनी विचार को प्रकट भली भांती कर पाती है। हमारे स्वयं सहायता समूह के द्वारा रोजमर्रा की आवश्यकता से संबंधित एक दूकान खोला, जिससे लोग छोटी–सी भी वस्तु खरीदने के लिए लगभग 2 किलोमीटर दूरी तय किया करते थे जो अब नहीं करते है। जिससे हमारे समूह को आय अर्जन का साधन बना और हमारे समूह के सदस्यों ने महुआ खरीद कर उसका व्यापार भी किया, जिससे मुनाफा भी कमाये और अब हमलोग अपने बच्चे को स्कूल भी भेजते है एवं साफ–सफाई का ध्यान भी रखते है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

हमारे सूरजमुखी स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने मिलकर अच्छे कार्य कर रहे है, जिससे महिलाओं में संगठित रहकर किसी भी कार्य को करने में सक्षम होते जा रहे है एवं हमसब व गांव के लोग धीरे–धीरे जागरूक हो रहे है। यदि सरकार की योजना के बारे में जानकारी होती है तो अपने समूह व गांव में भी चर्चा व विचार विमर्श किया करते है। हमलोग अप. ने–अपने परिवार के आर्थिक स्थिति को और मजबूत बनाने के लिए गांव के उपजे धानों की खरीद करेंगे एवं दूकान को और बड़ा बनायेंगे तथा समृद्ध बनेंगे।

शीर्षक/कार्य : स्वयं सहायता समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
बदोली स्वयं सहायता समूह	पिपरजोरिया	जराकी	अमड़ापाड़ा	पाकुड़

01 पुर्व की स्थिति

पहले हमारे गांव के सभी लोगों की बहुत ही दयनीय स्थिति थी क्योंकि भोजन व पानी की व्यवस्था में लगे रहते थे। हमारे गांव में सरकार की योजना बहुत–सी आयी, परंतु, किसी भी योजना से हम ग्रामीणवासी को आगे बढ़ने की राह नहीं मिली। हमारे गांव के लोग बारिश के मौसम पर ही निहित थे जिससे धान, बाजरा, मकई आदि की खेती कर 5 से 8 महीने का भोजन प्रबन्ध कर पाते थे और रोजगार की तलाश में बाहर दूसरे राज्यों में जाया करते थे। हमारे गांव में किसी प्रकार का कोई संगठन नहीं था और न ही कोई एकजुट थे व न जागरूक भी, गांव के पुरूष व कुछ महिला लोग हमेशा नशे में रहा करते थे । हमलोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण रिश्तेदार–व–साथी तथा महाजन से उधार लेने के लिए जेवर तथा अनाज आदि वस्तु गिरवी रखना होता था और डेढ़ गुणा उधार व अनाज चुकता करना पड़ता था और हमसब गरीबी रेखा से उपर उठ नहीं पाते थे, न ही कोई प्रकार का बचत का तरीका जानते थे।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

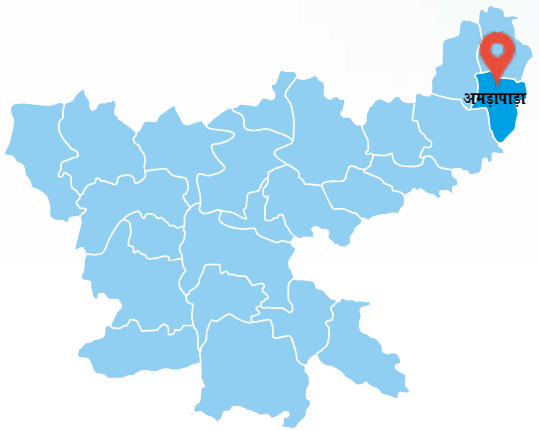

वर्ष 2015 में झारखण्ड ट्राईबल डेवलपमेंट सोसाईटी (श्रज्वै) हमारे गांव में आने के बाद सबसे पहले ग्रामसभा कर GSPEC का गठन किया तथा ग्रामीण विकास कोष बनाया गया, महिला समूह, युवा समूह तथा पुरूष वर्ग के लोगों को JTELP के विषय में चर्चा कर पूर्ण रूप से बताया गया और महिला स्वयं सहायता समूह एवं युवा समूह का गठन किया गया। हमारे बदोली स्वयं सहायता समूह नामक महिला समूह है, जो श्रज्वै के माध्यम से जानकारी के आधार पर साप्ताहिक बैठक कर 10–10 रूपये बचत करते है एवं आपस में लेन–देन भी करते है एवं JTDS के द्वारा सीड केपिटल 20000 रूपये भी प्राप्त हुआ है। हमारे महिला समूह सदस्यों को पैसों की जरूरत होने 2 रूपये ब्याज पर लोन लेते है व वापस करते है तथा खाता में संधारण करते है। इस समूह के सदस्य हस्ताक्षर करना भी सीखा है और अपने विचार को प्रकट भली भांती कर पाते है। हमारे स्वयं सहायता समूह ने धान व चावल, चटाई और पत्तल व्यवसाय कर सलाना 15000 रूपये कमाते है और आपस में लाभ बंटवारा करते है, जिससे हमारे समूह को आय अर्जन का साधन बना है और हमसब अब धीरे–धीरे महाजन से भी छूटकारा पा रहे है । हमसब साफ–सफाई का ध्यान भी रखने लगे तथा बच्चे को स्कूल भी भेजते है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

हमारे बदोली स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने मिलकर अच्छे कार्य कर रहे है, जिसके कारण हमसब महिलाओं के कार्य को देखते हुए पुरूष साथी भी साथ दे रहे है। जिससे की हमारे समूह व दूसरे समूह के भी सदस्य मिलकर बड़े कार्य करने में सक्षम हो रहे है एवं हम सब व गांव के लोग धीरे–धीरे जागरूक हो रहे है। यदि सरकार की योजना के बारे में जानकारी होती है तो अपने समूह व गांव में भी चर्चा व विचार विमर्श किया करते है। हमलोग अपने–अपने परिवार के आर्थिक स्थिति को और मजबूत बनाने के लिए अपने इस चावल, चटाई बनाना, पत्तल बनाना व अन्य व्यवसाय करने की योजना बनाये है जिससे आय में वृद्धि हो और हमसब स्वयं सहायता समूह एवं गांववासी समृद्ध और मजबूत बने तथा बच्चों की शिक्षा ग्रहण, साफ–सफाई एवं एक–दूसरे का मदद कर सके।

शीर्षक/कार्य : स्वयं सहायता समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
हरियाड़ स्वयं सहायता समूह	पच्चुवाड़ा	पच्चुवाड़ा	अमड़ापाड़ा	पाकुड़

01 पुर्व की स्थिति

पहले हमारे गांव के सभी लोगों की बहुत ही दयनीय स्थिति थी क्योंकि भोजन व पानी की व्यवस्था में लगे रहते थे। हमारे गांव में सरकार की योजना बहुत–सी आयी, परंतु, किसी भी योजना से हम ग्रामीणवासी को आगे बढ़ने की राह नहीं मिली। हमारे गांव के लोग बारिश के मौसम पर ही निहित थे जिससे धान, बाजरा, मकई आदि की खेती कर 5 से 8 महीने का भोजन प्रबन्ध कर पाते थे और रोजगार की तलाश में बाहर दूसरे राज्यों में जाया करते थे। हमारे गांव में किसी प्रकार का कोई संगठन नहीं था और न ही कोई एकजुट थे व न जागरूक भी, गांव के पुरूष व कुछ महिला लोग हमेशा नशे में रहा करते थे । हमलोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण रिश्तेदार–व–साथी तथा महाजन से उधार लेने के लिए जेवर तथा अनाज आदि वस्तु गिरवी रखना होता था और डेढ़ गुणा उधार व अनाज चुकता करना पड़ता था और हमसब गरीबी रेखा से उपर उठ नहीं पाते थे, न ही कोई प्रकार का बचत का तरीका जानते थे।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

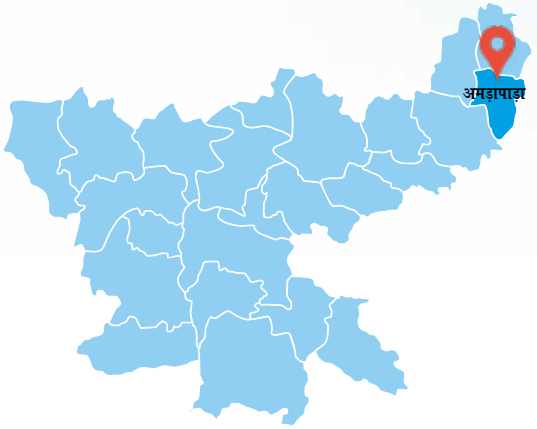

वर्श 2015 में झारखण्ड ट्राईबल डेवलपमेंट सोसाईटी (JTDS) हमारे गांव में आने के बाद सबसे पहले ग्रामसभा कर GSPEC का गठन किया तथा ग्रामीण विकास कोष बनाया गया, महिला समूह, युवा समूह तथा पुरूष वर्ग के लोगों को JTELP के विषय में चर्चा कर पूर्ण रूप से बताया गया और महिला स्वयं सहायता समूह एवं युवा समूह का गठन किया गया। हमारे हरियाड़ स्वयं सहायता समूह नामक महिला समूह है, जो JTDS के माध्यम से जानकारी के आधार पर साप्ताहिक बैठक कर 10–10 रूपये बचत करते है एवं आपस में लेन–देन भी करते है एवं JTDS के द्वारा सीड केपिटल 10000 रूपये भी प्राप्त हुआ है। हमारे महिला समूह सदस्यों को पैसों की जरूरत होने 2 रूपये ब्याज पर लोन लेते है व वापस करते है तथा खाता में संधारण करते है। इस समूह के सदस्य हस्ताक्षर करना भी सीखा है और अपने विचार को प्रकट भली भांती कर पाते है। हमारे स्वयं सहायता समूह के कुछ सदस्य ने ऋण लेकर कुछ बकरीपालन, कुछ मुर्गीपालन एवं गाय खरीदकर उसका दूध बेचने का व्यवसाय किया और समूह का ऋण भी वापस किये। इस प्रकार समूह में लगभग 28000 रूपये जमा हुआ है। जिससे हमारे समूह को आय अर्जन का साधन बना है और हमसबों को अब महाजन से भी छूटकारा मिल गया है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

हमारे हरियाड़ स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने मिलकर अच्छे कार्य कर रहे है, जिसके कारण हमसब महिलाओं के कार्य को देखते हुए पुरूष साथी भी साथ दे रहे है। जिससे की हमारे समूह व दूसरे समूह के भी सदस्य मिलकर बड़े कार्य करने में सक्षम हो रहे है एवं हमसब व गांव के लोग धीरे–धीरे जागरूक हो रहे है। यदि सरकार की योजना के बारे में जानकारी होती है तो अपने समूह व गांव में भी चर्चा व विचार विमर्श किया करते है। हमलोग अपने–अपने परिवार के आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए अपने–अपने व्यवसाय को और बड़ा करने की योजना बनाये है जिससे आय में वृद्धि हो और हमसब स्वयं सहायता समूह एवं गांववासी समृद्ध और मजबूत बने तथा बच्चों की शिक्षा ग्रहण, साफ–सफाई एवं एक–दूसरे का मदद कर सके।

शीर्षक/कार्य : समूह द्वारा प्रेरित परिवार का आय अर्जन करने का एक प्रयास

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
जुही बा महिला मंडल	बरुबेरा	अर्की	अर्की	खुँटी

01 पुर्व की स्थिति

गांव की महिला पुरूषों के अधीन थी, असहाय थी। पंचायत सभा में महिलाओं को बैठने की अनुमती नहीं थी। पारिवारिक जीवन में ही व्यस्त रहती थी। खेती के अलावें दुसरा विकल्प नहीं था। जागरूकता की कमी थी। अधिकतर परिवार मौसम के अनुरूप पलायन कर जाते थें।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

ऐसी स्थिति है अर्की ब्लॉक के ग्राम बरुबेरा के जूही बा महिला मंडल जो 2015 में JTDS के समर्थन से गठित एक समूह है, इस समूह में 12 सदस्य शामिल हैं। समूह के सदस्य नियमित रूप से बैठक करते है और महत्वपूर्ण रूप से किसी भी सदस्य द्वारा बैठक को कभी नहीं तोड़ता है। साप्ताहिक बचत करते है। इस समूह में प्रत्येक सदस्य द्वारा सप्ताह में 10/– जमा करते है । वर्तमान में इस समूह के पास की कुल बचत 26840/– है। एसएचजी में शामिल होने के बाद सदस्यों ने नियमित रूप से बचत करना शुरू कर दिया और आज तक समूह में प्रति व्यक्ति व्यक्तिगत बचत रु 1800–2000 से अधिक समूह के सदस्यों की आवश्यकता के अनुसार नियमित रूप से ऋण लेना देना करती है जो की समूह की बहुत ही फायदा हुआ है समूह की सचिव सीमाती देवी द्वारा बताया गया की हमलोग हमेशा आपस में ऋण लेना देना करते है समूह की सचिव सीमाती देवी ने बोला की हमलोग वर्ष 2017 में हमलोग ऋण से हमलोग की कमाई 1310 रुपया हुआ और वर्ष 2018 में ऋण से 1455 रुपया कमाई हुआ साथ ही वर्ष 2019 के सितम्बर माह तक 1120 रुपया कमाई हुआ है।

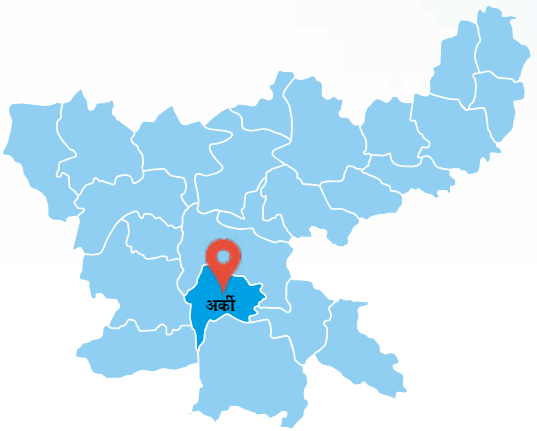

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

महिला सशक्तीकरण की ओर बढ़ने के लिए यह पहला चरण है, जब इस समूह में सचिव सीमाती देवी उत्साहित और परिया. जना से उबरीं क्योंकि उन्हें कभी समूह गतिविधि में शामिल नहीं किया गया था, उन्हें अच्छी सफलता भी मिली, जो राशि JTDS से मिली है समूह की सभी सास्यो ने बताया की हमलोग फिर सोचे की कुछ रोजगार करनी चाहिए तो फिर सभी ने सोचा की हमलोग मुर्गी तो पालते ही है क्यो न हमलोग समूह से पैसे से मुर्गी पालन किया जाय फिर क्या था सभी ने समूह से 2000 हजार रूपये से मुर्गी खरीद किया एक सदस्य द्वारा 10 मुर्गी खरीद किया इसके बाद तो लगभग हमलोग करीब 6 माह के बाद हमलोग रोजगार में वृद्धि होना चालू हो गया इसके बाद समूह द्वारा निर्णय लिया गया की हमलोग समूह से पैसे को वापस करनी चाहिए। इसके बाद सभी ने थोड़ा थोड़ा पैसे वापस करना चालू किया और फिर सभी ने समूह का पैसा वापस कर दिया। आज सभी महिलाएँ ने बताती है की हमलोग को इस रोजगार से लगभग 1–2 हजार रूपये पर महीना कमाई हो जाती है इससे समूह की सभी महिलाएँ JTDS से बहुत खुश हैं।

शीर्षक/कार्य : आजीविका हेतु समूह द्वारा चेतना का विकास

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सुरज महिला मंडल	पड़गाँव	जुरदाग	कारा	खुँटी

01 पुर्व की स्थिति

JTELP परियोजना क्षेत्र में चयानीय पांच पंचायत में एक पंचायत जुरदाग हैं जिसमे कुल 8 राजस्व ग्राम हैं जहाँ JTELP परियोजना की कार्य अप्रैल 2015 से किया जा रहा है इन्ही राजस्व ग्राम में एक ग्राम – पड़गाँव हैं जो जिला मुख्यालय से 14 KM एवं प्रखण्ड मुख्यालय से 7 KM पार स्थित है I

JTELP परियोजना के शुरुआती समय में महिला समूह के गठन को ले कर ग्राम में काफी धरनाये थी, लोग नही चाहते थे कि महिलएँ घर के कामो को छोड़ कर समाज के अन्य कामो में शामिल हो। उन्हे समाज के किसी भी प्रकार की भागीदारी से दूर रखा जाता था I यहाँ की महिलएँ अपने घर/खेत के कार्यों में लगी रहती थीं, उनके परिवार की आमदनी का एक मात्र जरिया उनके पति की मजदूरी एवं खेती द्वारा होता था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

JTELP परियोजना के शुरुआती समय में मुश्किल से यहाँ एक महिला समूह (SHG) का गठन मई 2015 में किया गया ,इस समूह के गठन के दौरान साथ JTDS/FNGO के पदाधिकारी प्रायः बैठक करते रहे ,यह देख महिलएँ के अन्दर लगा की महिला समूह (SHG) का गठन क्यों जरुरी है ग्राम पड़गाँव में 9 महिला समूह का गठन किया गया जिसमे से एक समूह सूरज महिला मण्डल हैं I समूह सूरज महिला मण्डल की साप्ताहिक बैठक प्रत्येक सोमवार को सुबह में होती हैं, जहाँ साप्ता. हिक बचत, ऋण की लेन– देन, कार्यों पर चर्चा, आदि कि जाती हैं I समूह गठन के उपरांत ग्राम में JTELP परियोजना के अंतर्गत समूह में बीज पूंजी की राशि भी समूह को दिया गया। ललिता देवी सूरज महिला मण्डल की एक सदस्या हैं जिन्हें अपने परिवार की पालन पोषण की जिम्मेवारियां हमेशा चिंता का कारण बनी रहती थी, समूह में जुड़ने के उपरांत ललिता देवी अन्य दीदियो की तरह महिला समूह से जुड़ने का निर्णय किया I समूह के सदस्या इनकी उत्साह को देखते हुए इन्हें समूह का अध्यक्ष की जिम्मेवारी दी और आज भी अपने कार्यों को करती आ रही है, सप्ताहिक बैठक में कर समूह के दीदी मासिक बचत प्रति सदस्य करती हैं, इन पैसों से ये समूह में आपसी ऋण लेन–देन करती रहती हैं, ललिता देवी भी समूह से 5000/रु० ऋण प्राप्त कर मुर्गी पालन अपने ही घर में प्रारंभ किया, समय के साथ–साथ JTELP परियोजना से इन्हें भी एक मुर्गी शेड का निर्माण हुआ, जिससे इनके आजिविका के साधन में काफी बढ़ोतरी किया । ललिता देवी मुर्गी पालन कर 35000/रु० की अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में योगदान किया I

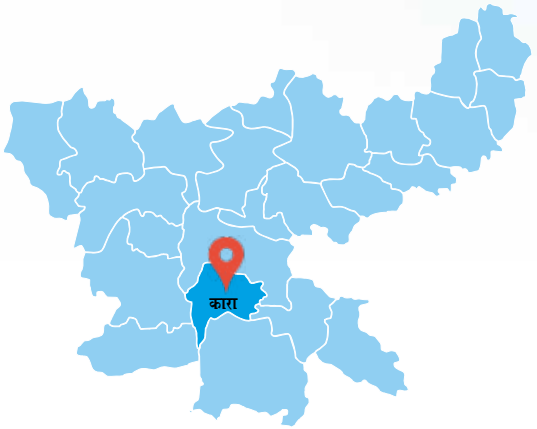

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

आज ललिता देवी मुर्गी पालन कर काफी प्रसन्न रहती हैं और अपने परिवार की चिन्ताओं से भी मुक्त होती जा रही हैं आज भी इनके शेड में 24 मुर्गियां हैं जिन्हें ये देख रेख कर रही हैं। ललिता देवी JTELP समूह से जुड़ कर काफी खुश हैं।

शीर्षक/कार्य : समूह द्वारा प्रेरित परिवार का आय अर्जन करने का एक प्रयास

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
तारा महिला मंडल	घुनसुली	घुनसुली	कारा	खुँटी

01 पुर्व की स्थिति

JTDS के JTELP परियोजना के अंतर्गत पंचायत– घुनसुली के ग्राम घुनसुली एक आदिवासी बहुल ग्राम अति ही गरीब क्षेत्र यही की महिलएँ अपने घर गृहस्ती एवं खेतों में व्यस्त रहती है। गारीबी के करण महिलएँ अपने और अपने परिवार का सही तरह से देखभाल भी नहीं कर पाती सारा समय खेतों में व्यस्त रहना जिसके करण यहाँ की महिलएँ आपस में बहुत समय दे पाती है। समाज में लोग इनकी भागीदारी भी अच्छा नहीं समझते जिसके कारण यही कि महिलएँ सामजिक कार्यों से भी अपने आप को अलग ही रखती है आपस में मिलना तो दूर की बात महिला समूह के बारे में भी आधिक जानकारी भी नहीं थी ।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

श्रज्म्स्च परियोजना के अंतर्गत ग्राम घुनसुली में 12 SHG समूहों का गठन किया, इन्ही में से एक SHG समूह – तारा महिला मण्डल हैं जिसका गठन दिनांक – 15.06.2015 को एवं बैंक खाता, BOI, हुटार, में दिनांक– 20.02.2016 को खोली गई। समूह में कुल सदस्यों की संख्या 14 है, सभी सदस्य आदिवासी परिवार के हैं। समूह की साप्ताहिक बैठक प्रत्येक सोमवार को सुबह में होती हैं, जहाँ साप्ताहिक बचत, ऋण की लेन– देन, कार्यों पर चर्चा, आदि कि जाती हैं।
इसी समूह में एक नाम – चिलगी मुण्डाईन, पति– हेमंत मुण्डा जिनके 3 बच्चे हैं, चिलगी मुण्डाईन 10वां पास हैं और उम्र 40 वर्ष। चिलगी मुण्डाईन के परिवार की आमदनी का एक मात्रा साधन खेतीबारी है बदलते समय एवं मौसम के कारण इनके परिवार के भरण पोषण करना काफी मुश्किल हुआ करता था समूह के जुड़ने के उपरांत सभी की तरह ये भी समूह की बैठक में भाग लेना, बचत करना आदि किया करती थी, JTELP परियोजना के द्वारा प्रथम बीज पूंजी की राशि से इन्होंने 2,000/रु० का ऋण लिया। ऋण की इस राशि से चिलगी मुण्डाईन ने अपने परिवार की आर्थिक मदद के लिए आस–पास के साप्ताहिक बाजार में चना, पकौड़ी, चाय आदि की एक छोटी सी होटल चलाना शुरू की।

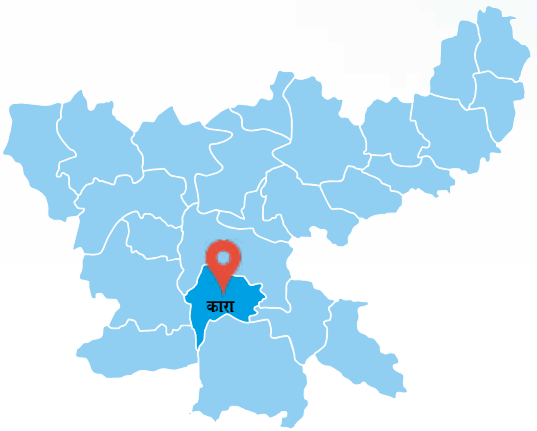

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

चिलगी मुण्डाईन बताती हैं की दुकान खोलने के प्रथम दिन उन्होंने जब बाजार जाना शुरू किया तो सोचती थी की कैसे कम कर पायेगी क्योंकि उन्हें ये काम कभी नहीं किया था और उन्हें थोड़ा लज्जा भी थी फिर भी वो बाजार गई और एक स्थान पर बोरा बिछाकर एवं एक चूल्हे पर कड़ाही चड़ा कर पकौड़ी बनाने की तैयारी करने लगी धीरे धीरे बाजार में लोग आना शुरू किए इनके ग्राम से भी लोग आये और इनके समूह के लोगो ने ये देख उनकी मदद के लिए कुछ समय इनका साथ देने लगी, पहले दिन देखते ही देखते इनके दुकान पर लोग खरीदारी करने लगे और उस दिन 5,00/रु० की आमदनी की, बाजार से घर जाने के क्रम में चिलगी मुण्डाईन ने भी बाजार की और अपने परिवार के लिए उन्हने पहली बार अपने पैसे से खाने की सामान की खरीदारी की, ये कर उन्हें काफी सुकुन लगा और तब से चिलगी मुण्डाईन हमेशा आस–पास के साप्ताहिक बाजार में अपना दुकान लगाने लगी और अपने बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन की सभी आवश्यक समानों की पूर्ति करती रहती है। चिलगी मुण्डाईन दुकान के साथ साथ अपने पति की खेतों में भी सहयोग करती रहती हैं।
चिलगी मुण्डाईन बताती हैं की दुकान से कितना आय हुआ इसका हिसाब पूरी तरह से नहीं बता सकी परन्तु बताती हैं की आज समूह का ऋण एवं दुकान की सभी उधार की उन्होंने चुका दिया हैं और नगद जमा अज 34,000/रु० की है। आगे बताती हैं की ये रोजगार को और धीरे–धीरे आगे बड़ा करेगी और अपने बच्चों की सभी आवश्यकताओं के लिए बचत करती रहेगी ताकि पुराने समय पुनः उनके परिवार को नहीं देखना पड़े।

शीर्षक/कार्य : टेंट हॉउस

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
आदर्श स्वयं सहायता समूह	एडादोन	नरौली	कैरो	लोहरदागा

01 पुर्व की स्थिति

कैरो बाज़ार के दक्षिण दिशा से लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थिति है एडादोन गाँव। इस गाँव मे लगभग 210 परिवार रहते है जिसमे अधिकतम जनसंख्या आदिवासी और मुसलिम परिवारों की है। इस गाँव के परिवारों की जीविका का मूल साधन खेती और मजदूरी है। इस गाँव की महिलाएँ ज्यादातर घरेलु कार्यों में और खेती के कार्यों मे अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाती है। समूह मे जुड़ने से पहले ज्यादातर महिलाएँ अपने घरेलु कामों में ही अपना सारा समय गुजारती थी, वह अक्सर अपने स्वयं के लिए बहुत कम वक्त निकाल पाती थी। महिलाओं में अक्सर बचत, लेनदेन, बैंक की सुविधाओं को लेकर कम जागरूकता थी। अक्सर जरूरत के समय महिलाएँ या उनके परिवार के सदस्य जमीन या गहनों को गिरवी रखकर गाँव के किसी महाजन के पास से बहुत महंगे ब्याज पर उधार लेते और कई वर्षों तक इन कर्जों में डूबे रहते हैं। स्वयं सहायता समूहों के बनने से पहले महिलाओं मे आत्मनिर्भरता और जानकारी का अभाव था। उनकी ना कोई अपनी आवाज और ना ही अपने मुददों को रखने के लिए कोई मंच था। यह महिलाएँ अक्सर अपनी पारिवारिक उलझनों में ही फसी रहती थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

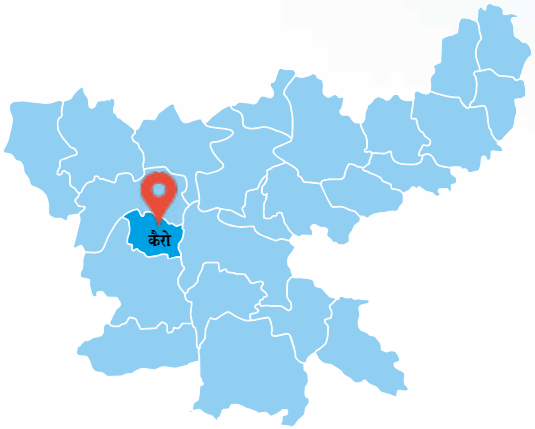

इस गाँव मे JTDS–JTELP का कार्य वर्ष 2015 से आरंभ हुआ। JTELP परियोजना के प्रथम वर्ष मे ही इस गाँव मे स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। इस गाँव की महिलाओं को समूह के बारे में जानकरी तो थी पर उसकी व्यवस्था पर विश्वास नही करती थी क्योंकि पहले भी समूह के नाम पर महिलाओं के साथ धोखा हुआ था। शुरुआत मे जब JTELP के माध्यम से समूह बनाने का कार्य आरंभ हुआ तो महिलाओं में इससे जुड़ने मे संकोच और झिझक देखा गया, पर उचित जानकारी और लाभ जानने के बाद महिलाओं ने एकत्रित होकर समूह का गठन किया। समूह मे जुड़ते ही महिलाओं को संगठित और एकजुट देखा गया। समूह से जुड़ते ही महिलाओं को पंच सूत्र, समूह व्यवस्था, नेतृत्व का प्रशिक्षण दिया गया । समूह से जुड़ते ही महिलाओं को एक मंच मिला जहां वे जानकारी का आदान प्रदान करे, उन्हें एक नयी पहचान मिली । उनमे अब बचत करने की नयी बदलाव आया है, इस एकजुटता और जानकारी से महिलाएँ ने आज खुद का एक व्यवसाय शुरू किया हैं। अब इस समूह की महिलाएँ टेंट हॉउस का व्यवसाय से जुड़ गई है। महिलाओं ने अपने ही बचत के पैसों को ऋण के रूप में समूह से 2000 रुपयों का उधार लिया और उसी उधार के पैसों से सभी सदस्यों ने व्यवसाय के लिए अपना अपना अंशदान दिया और व्यवसाय से जो मुनाफा उनका होता है उससे वो सही समय पर अपना ऋण भी वापस कर रहीं हैं और साथ ही बच्चे हुए मुनाफे को आपस में बांट कर कमाई भी कर रही हैं। इस व्यवसाय से लगभग 3 वर्ष में इन महिलाओं ने लगभग 20,000 रुपया की कमाई की है। आज इस समूह की महिलाएँ हर तरफ से आत्मनिर्भर हैं। इन सारे सदस्यों में अपने जानकारी और निर्णय लेने के क्षमता में भी बढ़ोतरी हुई है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस समूह के महिलाओं में अपने व्यवसाय को बड़े पैमानों पर करने की इच्छा है। वो न केवल ये कारोबार अपने गाँव तक सीमित रखना चाहती पर इससे बाकी के क्षैत्रों में भी फैलाना चाहती हैं। इस समूह की महिलाओं का योजना है के वो अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करे। अपने घरों को पाकक घर बनाएं और अपने जीवन स्तर में बढ़ोतरी करे।

शीर्षक/कार्य : अनाज संग्रह और वितरण

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
गयात्री झारखण्ड महिला मंडल	नरौली	नरौली	कैरो	लोहरदागा

01 पुर्व की स्थिति

कैरो बाज़ार से लगभग 3 किलो मीटर की दूरी पर स्थिति है नरौली गाँव। इस गाँव मे लगभग 320 परिवार रहते हैं जि. समे अधिकतम जनसंख्या आदिवासी और मुस्लिम समुदाय के परिवारों की है। इस गाँव के परिवारों की जीविका का साधन ज्यादातर खेती और मजदूरी से होती रही है। इस गाँव की ज्यादातर महिलाएँ घरेलू और खेती के कामों में अपने परिवारों की सहयोग करती है। समूह में जुडने से पहले ज्यादातर महिलाओं ना ही एकता था ना नही बहुत ज्यादा जागरूकता। बहुत कम ही महिलाओं में बचत बचत करने की आदत थी। वह अपने पैसों का बहुत कम ही सही उपयोग कर पाती थी । अक्सर जरूरत के समय उन्हे पैसों के लिए गाँव के किसी महाजन के पास से उधार लेना पड़ता था जो के बहुत महंगे ब्याज पर उन्हें उधार देते थे। महिलाओं मे आत्मनिर्भरता और जानकारी का अभाव था। उनकी ना कोई अपनी पहचान ना ही अपने मुददों को रखने के लिए कोई मंच था। यह महिलाएँ अक्सर अपनी पारिवारिक उलझनों मे फँसी रहती थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

इस गाँव मे JTDS & JTELP का कार्य वर्ष 2015 से आरंभ हुआ। JTELP परियोजना के प्रथम वर्ष में ही इस गाँव में स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। शुरुआत में समूह से जुड़ने मे महिलाओं के बीच संकोच और झिझक देखा गया,पर उचित जानकारी और लाभ जान ने के बाद महिलाओं मे एक अलग ही बदलाव देखा गया। समूह में जुड़ते ही महिलाओं को संगठित और एकजुट देखा गया। समूह से जुड़ते ही महिलाओं को पंचसूत्र, समूह वयवस्था, नेतृत्व का प्रशिक्षण दिया गया। समूह से जुड़ते ही महिलाओं को एक मंच मिला जहाँ वे जानकारी का आदान प्रदान करे, उन्हें एक नयी पहचान मिली । उनमे अब बचत करने की नयी बदलाव आया, अब इनके अंदर बैंक के कार्यों के लिए जो संकोच देखा जाता था वो भी अब कम हो गया है। आज इन महिलाओं के जागरुक और सजक बदलाव ने गाँव मे इन महिलाओं को अलग पहचान दी है। ये महिलाएँ अपने समूह के माध्यम से बचत को नया ढांचा दिया है। यह महिलाएँ अपने समूह में ना केवल पैसों की बचत करती है पर इस के अलावा गाँव के सभी घरों से चावल और अन्य अनाज का भी बचत करती है। साथ साथ ठंड के मौसम में ये महिलाओं घरों से गरम कपड़े भी इक्कठा करती है। और इन सारे अनाज और कपड़ो को जरूरत मंदो को देती है। आज ये महिलाएँ अपने कामों के लिए पुरे पंचायत में जानी जाती है। अक्सर जरूरतमंद लोग अपनी अपनी जरूरतों के लिए इस समूह के पास आते है। अब तक इन्होंने 40 से ज्यादा लोगों को अनाज देकर बेसहाराओं की मदद की है साथ ही 10 लोगों को गरम कपड़े और कम्बल देकर उनकी मदद की है।

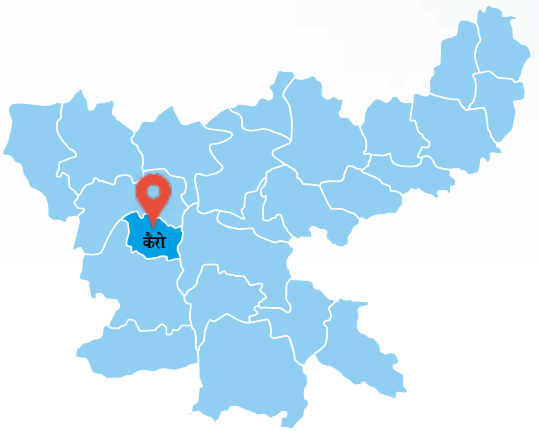

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस समूह के महिलाओं की योजना है कि वो गाँव के हर परिवार से सप्ताहिक अनाज इक्कठा करे तथा गरीबों और बेस. हाराओं को सहायता करें। इनकी ये भी सोच है के यह गाँव माँ आनाज का संग्रहण करे ताकि जब भी गाँव में किसी भी असक्षम व्यक्ति के घर में कोई कार्यक्रम हो तो उन्हें गांव वालों के तरफ से सहयोग किया जा सके। इन महिलाओं की सोच है कि गाँव का कोई भी व्यक्ति कभी भूखा नही सोना चाहिए।

शीर्षक/कार्य : स्वास्थ्य पोषण और स्वच्छता

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
झारखण्ड ज्योति महिला समूह	चरिमा	नरौली	कैरो	लोहरदागा

01 पुर्व की स्थिति

कैरो बाज़ार से लगभग 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थिति है चारिम गाँव। इस गाँव मुल्यतः आदिवासी और मुस्लिम समुदाय के परिवारों की जनसंख्या है। इस गाँव के परिवारों की जीविका का साधन मूल्य रूप से खेती और मजदूरी पर निर्भर है। इस गाँव की महिलाएँ ज्यादातर घरेलू और खेती के कार्यों में अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाती हैं। अक्सर अगर हम झारखण्ड के मूल्य ग्रामीण क्षैत्रों को देखें तो हमें आभास होगा कि महिलाओं के द्वारा किये गए घरेलू और खेती के कामों में किये गये सहयोग कि कोई मौद्रिक मूल्य नहीं है और इस वजह से उनके द्वारा किये गए कार्यों की भी बहुत कम कदर होती है। अक्सर उन्हें सिर्फ एक दायित्व के रूप में ही देखा जाता रहा है जिस वजह से महिलाएँ भी स्वयं का बहुत कम आंकलन करती है। उन्हें अक्सर अपने मूल्य का बहुत कम ही आभास होता है। इस गाँव की भी महिलाओं में स्वयं के महत्व को लेकर बहुत कम जागरूकता थी वो अपने हर अधिकार को अपने पति और बच्चों को देती रही है जिससे कि सिर्फ उनके घरों के पुरुष ही उनके लिए सारा निर्णय लेते रहे हैं।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

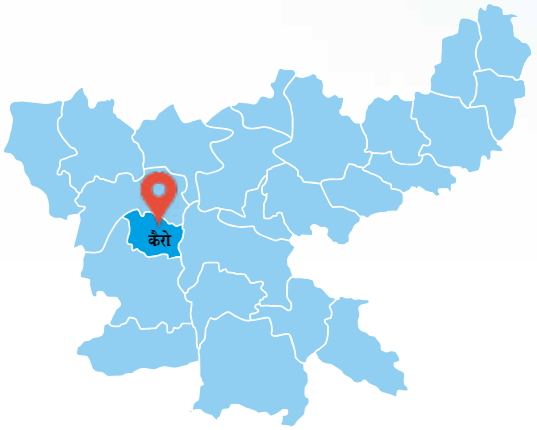

इस गाँव मे JTDS–JTELP का कार्य वर्ष 2015 से आरंभ हुआ। JTELP परियोजना के प्रथम वर्ष में ही इस गाँव में स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। इस समूह के गठन में सबसे ज्यादा रुकावट उनके परिवार वालों के द्वारा किया गया । इस समूह के सदस्यों के परिवार वालों ने इन्हें इस परियोजना से जुड़ने के लिए उन्हें साफ मना कर दिया था। पर बहुत मशक्कत के बाद इन सदस्यों के परिवार वालों ने इन्हें इस परियोजना से जुड़ने दिया। समूह में जुड़ते ही महिलाओं को संगठित और एकजुट देखा गया। उनके अंदर जो जुड़ने से पहले की झिझक थी वो खत्म हो गयी। समूह से जुड़ते ही महिलाओं को पंच सूत्र, समूह व्यवस्था, नेतृत्व का प्रशिक्षण दिया गया। समूह से जुड़ते ही महिलाओं को एक मंच मिला जहाँ वे जानकारी का आदान प्रदान करें, उन्हें एक नयी पहचान मिली, अब वह समूह से जुड़ कर अपने नाम से जानी जाती है। इस समूह की महिलाएँ एक अलग वजह से जानी जाती है, इन महिलाओं ने गाँव में एक नई पहल की है। पहले तोह अपनी स्थिति को देखते हुए उन्हें अंदाजा हो गया था के अगर उन्हें बदलाव लाना है तो इन्हें पहल अपने घरों शुरुवात करनी होगी। पहला बदलाव तो उन्हें अपने अन्दर के संकोच और झिझक को हटा कर करना होगा। इन महिलाओं ने सबसे पहले अपने अपने घरों से शुरुवात की, ये महिलाओं ने पहले अपने परिवार को पोषण, स्वस्थ और सफाई को लेकर जागरूक करना शुरू किया। विभिन्न संस्थाओं और जानकारी के स्रोत से इन महिलाओं ने पहले अपनी जानकारी को बढ़ाया और गाँव की सभी महिलाओं और युक्वाक्तियों को पोषण, स्वास्थ्य और स्वछता के बारे में जागरूक किया। इन महिलाओं ने यह निश्चय किया है वे गाँव के सभी महिलाओं को इन सारे विषयों पर जागरूक करेंगी और सारी महिलाओं को ICDS से और उसकी सारी सुविधाओ से जोड़ने के लिए कार्यबद्ध है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस समूह के सदस्यों की योजना है कि वे गाँव के सभी महिलाओं और योवक्तियों को सारे सरकारी लाभों से जोड़े चाहे वो शिक्षा, स्वास्थ्य, कुशलता प्रशिक्षण या रोजगार से सम्बंधित हो। ये महिलाएँ अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में उच्च शिक्षा प्रदान करना चाहती है। इन महिलओं की सोच है के वो महिला जागरूकता के ऊपर बड़े पैमाने पर काम करें।

शीर्षक/कार्य : सामूहिक खेती

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
रोशनी महिला मंडल	नरौली	नरौली	कैरो	लोहरदागा

01 पुर्व की स्थिति

कैरो बाज़ार से लगभग 3 किलो मीटर की दूरी पर स्थिति है नरौली गाँव। इस गाँव मे लगभग 320 परिवार रहते है जि. समे अधिक्तम जनसंख्या आदिवासी और मुस्लिम समुदाय के परिवारों की है। इस गाँव के परिवारों की जीविका का साधन ज्यादातर खेती और मजदूरी से होती रही है। इस गाँव की ज्यादातर महिलाएँ घरेलू और खेती के कामों में अपने परिवारों की सहयोग करती हैं। समूह में जुड़ने से पहले ज्यादातर महिलाओं ना ही एकता था ना नहीं बहुत ज्यादा जागरूकता। बहुत कम ही महिलाओं में बचत करने की आदत थी वह अपने पैसों का बहुत कम ही सही उपयोग कर पाती थी। अक्सर जरूरत के समय उन्हे पैसों के लिए गाँव के किसी महाजन के पास से उधार लेना पड़ता था जो के बहुत महंगे ब्याज पर उन्हे उधार देते थे। महिलाओं में आत्मनिर्भरता और जानकारी का अभाव था। उनकी ना कोई अपनी पहचान ना ही अपने मुददों को रखने के लिए कोई मंच था। यह महिलाएँ अक्सर अपनी पारिवारिक उलझनों मे फँसी रहती थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

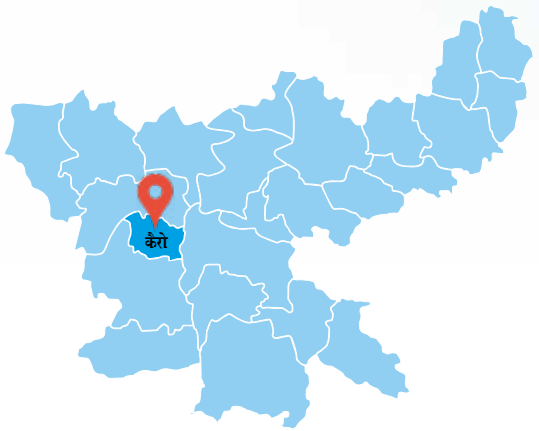

इस गाँव मे JTDS & JTELP का कार्य वर्ष 2015 से आरंभ हुआ। JTELP परियोजना के प्रथम वर्ष में ही इस गाँव में स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। शुरुआत में समूह से जुडने मे महिलाओं के बीच संकोच और झिझक देखा गया, पर उचित जानकारी और लाभ जानने के बाद महिलाओं मे एक अलग ही बदलाव देखा गया। वह समूह को ले के ज्यादा सजक और सकारात्मक विचार रखने लगी। समूह मे जुड़ते ही महिलाओं को संगठित और एकजुट देखा गया। समूह से जुड़ते ही सारे सदस्यों को पंच सूत्र, समहू व्यवस्था, नेतृत्व का प्रशिक्षण दिया गया। समूह से जुड़ते ही महिलाओं को एक मंच मिला जहाँ वे जानकारी का आदान प्रदान करें, उन्हें एक नयी पहचान मिली, अब वह सिर्फ किसी की बीवी या माँ नहीं बल्कि अपने नाम से जानी जाती है। उनमें अब बचत करने की नयी बदलाव आया, इनके अंदर बैंक के कार्यों के लिए जो संकोच देखा जाता था वो भी कम होता देखा गया है। आज इन महिलाओं के जागरुक और सकरात्मक बदलाव ने गाँव में इन महिलाओं को अलग पहचान दी है। रोशनी समूह की महिलाओं ने संगठित होकर सामूहिक खेती का कार्य शुरू किया है। इस समूह की महिलाएँ गाँव के 50 डिस्मिल के खाली जमीन पर खेती का कार्य शुरू किया है। आज ये महिलायें JTDS–JTELP परियोजना के अंतर्गत मिल रहे रबी और खरीफ फसलों का लुप्त उठा कर फसलों की सामूहिक खेती कर रही हैं। खरीफ के खेती में महिलाओं ने इस जमीन पर मकई की खेती पूरे 50 डिस्मिल में मिलकर की। इससे इन महिलाओं को लगभग 3500 रूपये की आमदनी हुई। इस राशि को सारे सदस्यों में बँटवारा किया। रबी के मौसम में महिलाओं ने इस खेत में आलू और सब्जियों की रोपाई की है।

समूह के आते ही महिलाओं मे बचत और आंतरिक ऋण का बदलाव देखा गया। महिलाएँ अब अपने सारी जरूरतों के लिए समूह से उधार लेती और समय पर इसे चुकती हैं। अब उन्हे महंगे ठेकेदारों से छुटकारा मिला गया।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस समूह के महिलाओं की सोच है की वह भविष्य में गाँव में एक बीज बैंक खोलना चाहती है। इस समूह की महिलाओं ने मिलकर सारे फसलों की जैविक उपज करके बीज बैंक को अपने गाँव में ही तैयार करे। इन महिलाओं की यह सोच है कि उनके गाँव और घरों के लोगों को हर बार बीज के लिए दुसरों पर निर्भर ना पड़े बल्कि वो अपनी खुद की बैंक तैयार करके अपने खेती को उन्नत बनाये और अपने जीवन स्तर में बढ़ोतरी करें।

शीर्षक/कार्य : समूह दिया आय का सहारा

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
ओपेरा स्वयं सहायता समूह	खैरवा	खैरवा	बोरिओ	साहिबगंज

01 पुर्व की स्थिति

गांव में संगठनात्मक दृष्टिकोण से काफी पिछड़ा गांव था। यद्यपि गांव के कुछ परिवार काफी पढ़े लिखे एवं आर्थिक रूप से सशक्त है लेकिन 50 : परिवार आर्थिक रूप से काफी पिछड़ा हैं। इन पिछड़े परिवार में परियोजना प्रारम्भ से पहले गांव में किसी प्रकार का कोई संगठन नहीं था। बाजार के निकट का गांव होने के बावजूद भी सामाजिक एवं आर्थिक रूप से यहाँ के लोग काफी पिछड़े थे गांव के सभी सामाजिक कार्यों में महिलाओं की भागीदारी बहुत कम थी। भागीदारी कम होने का कारण उनमें आत्मविश्वास की कमी तथा अवसर का न मिलना था। स्वास्थ्य कारणों मंक साफ सफाई, पर कम ध्यान देने के साथ आर्थिक संकट बराबर बना रहता था। गांव के अधिकतर लोग धान की खेती पर आधारित जीवन यापन करते हैं। गांव के लोग महाजन के चंगुल में फसे थे। पैसे की जरूरत पर घर का समान गिरवी रखकर लोन मिलता है। साहूकार द्वारा अधिक सूद वसूली किया जाता था। महिलाओं का कोई अपना बचत नहीं था। कर्ज का लेन– देन महाजन के ऊपर निर्भर था कि किस समय कितना व्याज दर पर राशि मिलना है।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

JTELP परियोजना संचालन के साथ गांव में ग्राम सभा का संचालन कर GSPEC का गठन तथा 10 स्वयं सहायता समूह का गठन कर संचालन हो रहा है। समूह गठन के बाद महिलाओं के साथ साप्ताहिक बैठक में उनके बौद्धिक विकास के लिए सबसे पहले जोड़ दिया गया। महिलाएं अपना बचत प्रारम्भ की एवं धीरे धीरे यह नियमित हो गया। परियोजना द्वारा दसों समूह को 10–10 हजार रुपया की बीज पूंजी दी गयी।

परियोजना द्वारा गांव में गठित सभी संगठनों के क्षमता वर्धन एवं नेतृत्व विकास के लिए प्रशिक्षण के माध्यम से समूह सदस्यों को जागरूक कर प्राप्त पूंजी के इस्तेमाल के लिए योजना का निर्माण कराया गया। महिलाएं बैठक में निर्णय के आधार पर बीज पूंजी का इस्तेमाल आंतरिक लोन में प्रारम्भ की। समूह नियम के अनुसार आंतरिक लोन का संचालन घरेलू कार्य, बीमारी, खेती के साथ पर्व त्योहार में होने लगा। धीरे– धीरे महिलाएं अपने छोटे छोटे कार्यों के लिए लोन लेने एवं समय पर वापस करने लगी। आंतरिक लोन संचालन के प्रभाव से समूह की कोई भी महिला छोटे लोन के लिए महाजन के पास जाने से मुक्त हो गयी। समूह बैठक का इस्तेमाल साफ सफाई के लिए काफी मददगार हो रही है क्योंकि बैठक में स्वच्छता के लिए शपथ दिलाई जाती है।

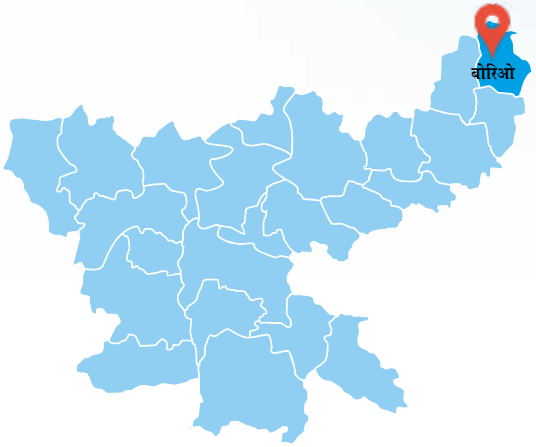

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

स्वयं सहायता समूह संचालन से महिलाओं के आत्मविश्वास में काफी वृद्धि हुई है। गांव के लोगों खासकर महिलाओं के आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में बदलाव के लिए एक मुहिम चलता हुआ दिख रहा है। 10 समूह गांव में एक नयी दिशा प्रदान करने में जूटे हैं। गांव के ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी के साथ निर्णय में सहभागिता होने लगी है। समूह प्रशिक्षण से महिलों में नेतृत्व विकास की भावना दिख रही है। सफाई एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है। समाज में महिलाओं को सम्मान की नजरिया से देखना शुरू हुआ है। महिलाओं की समस्या समूह के माध्यम से सुलझाने शुरू हो गए है। गांव के परिवार धीरे– धीरे अपने भविष्य के बारे में सोचने लगे है जिससे बचत की प्रवृति में वृद्धि हो रही है। गांव के लोगों में सबसे बड़ी बदलाव मानसिकता में परिवर्तन है जो उनके रहन– सहन से देखने को मिल रहा है। समूह में संचालित आंतरिक लोन महाजन से छुटकारा दिलाने में काफी मददगार साबित हो रही है।

भविष्य की योजना– गांव के लोगों के लिए समूह के माध्यम से निम्न योजना है –

महिलाओं के सामाजिक विकास के लिए पंचायत स्तर पर एक महिला संगठन का निर्माण।

स्वरोजगार गीतिविधि को बढ़ाना।

गाव में समूह के सभी सदस्यों के माध्यम से स्वच्छता के प्रति पूर्ण जागरूकता के साथ बीमारी एवं कुपोषण को कम करना।

शीर्षक/कार्य : बकरी पालन बना ATM

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
गुलाब बहा स्वयं सहायता समूह	कुसुम पोखर	बड़ा रक्सो	बोरिओ	साहिबगंज

01 पुर्व की स्थिति

परियोजना प्रारम्भ से पहले गांव में किसी प्रकार का कोई संगठन नहीं था। महिलाएं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से काफी पिछड़ी थी। महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी थी। पौराणिक परंपरा में लिप्त गाव के लोग महिलाओं को सामाजिक कार्यों एवं निर्णयों से दूर रखते थे। गाव के लोगो का मुख्य पेशा खरीफ में धान की खेती के साथ पशुपालन एवं दैनिक मजदूरी करना है। गांव के लोग महाजन के चंगुल में फसे थे। पैसे की जरूरत पर घर का समान गिरवी रखकर लोन मिलता है। गाव में दारू पीना अनिवार्य समझा जाता था। महिलाओं का कोई अपना बचत नहीं था साथ ही महिलाओं को अपने विचार रखने का कोई मंच नहीं था। गाव के सभी कार्य बिचौलिये के द्वारा रिश्वत लेने के बाद किया जाता था। सरकारी योजना का लाभ उसी परिवार को मिलता था जिनका बिचौलिये के साथ तालमेल सही था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

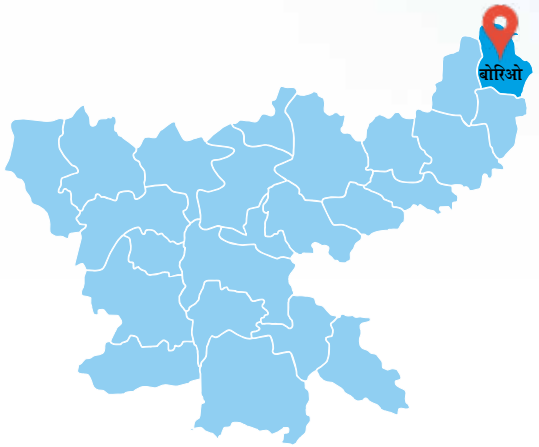

JTELP परियोजना संचालन के साथ गांव में 13 सदस्यी गुलाब बहा स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। समूह गठन के बाद महिलाओं के साथ साप्ताहिक बैठक में उनके बौद्धिक विकास के लिए सबसे पहले जोड़ दिया गया। जब महिलाए अपने बातों को निकालने लगी तब ग्राम सभा के निर्णय में भी धीरे– धीरे भागीदारी बढ़ने लगी। समूह को JTDS द्वारा बीज पूंजी के रूप में 10 हजार रुपया द्वारा दिया गया। परियोजना द्वारा वितिए वर्ष 2016–17 में आजीविका गतिविधि के अंतर्गत गाँव के स्वयं सहायता समूह का चयन बकरी पालन के लिए किया गया। प्रशिक्षण के बाद समूह में बकरी ख़रीददारी कर GSPEC द्वारा समूह को दिया गया। आदिवासी गाँव होने के कारण रोजगार के लिए बकरी पालन का कार्य समूह को वरदान सा लगा और बकरी पालन का कार्य शुरु किया गया। बकरी पालन से समूह ने अभी तक कुल 13,000/ राशि की बकरी का बिक्री किया है। वर्तमान में समूह में कुल 32 बकरियाँ है जिनका पालन पोषण अच्छे से की जा रही है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

परियोजना संचालन से समूह के माध्यम से गांव स्तर पर काफी बदलाव दिखने लगा है। गांव के लोगों खासकर महिलाओं के आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में बदलाव साफ दिखने लगा है। सरकारी योजनाओं के प्राप्ति के लिए महिलाएं आगे आकर पंचायत से प्रखण्ड कार्यालय तक पहुँच रही है। सफाई एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है। गांव के विध्यालय में बच्चों की उपस्थिती बढ़ने लगी है। समाज में महिलाओं को सम्मान की नजरिया से देखना शुरू हुआ है। गांव के परिवार धीरे धीरे अपने भविष्य के बारे में सोचने लगे है जिससे बचत की प्रवृति में वृद्धि हो रही है। गांव में महाजन से कर्ज लेना कम हो गया है। गांव के लोगों में सबसे बड़ी बदलाव मानसिकता में परिवर्तन है जो उनके रहन– सहन एवं साफ सफाई से देखने को मिल रहा है।

भविष्य की योजना – गांव के लोगों के लिए समूह के माध्यम से निम्न योजना है –

समूह बकरी पालन के रोजगार को बड़े पैमाने पर विस्तारित करना।

स्वरोजगार गीतिविधि को बढ़ाना।

बकरी एवं बकरा पालन के कार्य को बड़े स्तर पर समूहिक रूप से करना।

गांव में समूह के सभी सदस्यों को बकरी पालन कार्य से जोड़ना।

पूँजी की व्यवस्था के लिए बैंक से जुड़ाव।

शीर्षक/कार्य : महिला स्वयं समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
उषा महिला मण्डल	जमदोहर	गरजा	सादर सिमडेगा	सिमडेगा

01 पुर्व की स्थिति

जमादोहर गाँव झारखंड राज्य के सिमडेगा जिला से 20 किलोमीटर स्थित सदर प्रखण्ड मे पड़ता है, यहाँ मूलतः आदिवासी समाज के लोग निवास करते है, और आजीवीका के लिए खेती पर निर्भर है। जलवायु परिवर्तन का यहाँ की खेती पर भी असर देखने को मिलता है, इस वजह से पलायन जैसे समस्या साधारणता देखने को मिल जाती है। जमदोहर गाँव की भी यही समस्य थी, उपज मे कमी के साथ– साथ बदलते आधुनिक तरीके से खेती के प्रति जानकारी मे अभाव था और इसी कारण यहाँ के किसान अन्य किसानों से कम ज़मीन मे खेती कर रहे थे।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

2015 में जेटीडीएस के माध्यम से जेटीईएलपी योजना का आरंभ सिमडेगा जिला मे किया गया। इसी क्रम मे दिनांक 23/11/2015 में "उषा महिला मण्डल " का गठन किया गया जिसमे कुल 11 सदस्य है। प्रारंभ मे जेटीडीएस द्वारा समूह को प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन हेतु कुल 5000/– रुपए कि बीज पूंजी अनुदान स्वरूप दिया गया। वर्ष 2017 मे अपने गाँव मे कृषि कार्य बेहतर करने के लिए सभी दीदयों ने पावर टिल्लर मशीन लेने का निर्णय लिया, जो कि भूमि सरक्षण विभाग द्व ारा 200000/– रूपये के अनुदान एवं 25000/– रुपया समूह द्वारा दिये जाने पर प्राप्त किया गया। अतः सभी दीदयों ने मिल कर ग्राम वियाकस कोष से 21000/– रुपया ऋण लेने का निर्णय लिया और और जेटीडीएस द्वारा प्राप्त दूत्य किस्त के सहयोग राशि 5000/– रुपये तथा समूह के बचत खाते से 5000/– रुपये मिला कर पावर टिल्लर मशीन लिया।

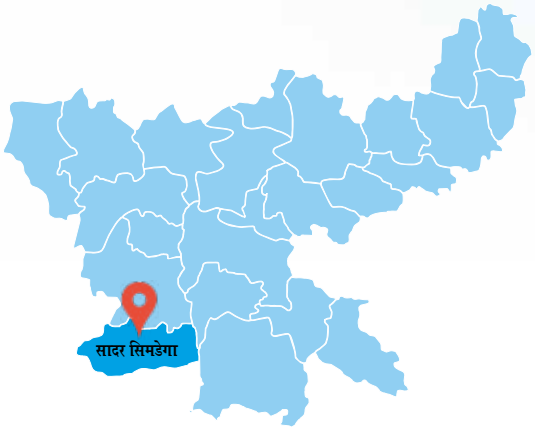

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

2017 में पावर टिल्लर के क्रय से समूह को न केवल आमदनी का श्रोत प्राप्त हुआ बल्कि गाँव के खेती बारी में भी अहम योगदान मिला, आज की तारीख मे समूह ने कुल 37300 /– रुपए की आमदानी कि, है जिसे गाँव मे आम किसान के लिए 400 रुपये प्रति घंटा के हिसाब से भाड़ा मे दिया जाता है जो कि अन्य जगह मे 700 से 800 रुपए प्रति घंटा के दर पर उपलब्ध है, इस प्रकार गाँव मे समूह के पास पावर टिल्लर आ जाने से सभी किसानो को बहुत लाभ हुआ है ,साथ ही समूह द्वारा पावन दान कुल्लू जो कि गाड़ी चलाने का काम करते है उन्हें भी अपने ही गाँव मे रोजगार दिलाया है , समहू इन्हे प्रति दिन गाड़ी चलाने का 200 रुपए भुगतना करती है। सुषमा डुंग–डुंग ने भी निजि जीवन मे सुधार कि सोच से महिला समूह में जुडने का निर्णय लिया, पूर्व मे इन का परिवार केवल वर्षा आधारित कृषि करता था परंतु जेटीडीएस द्वारा 40 • 40 • 10 का तलाब मिलने से जल संरक्षण कि सुविधा हुई और अब इन का परिवार साल भर सब्जी कि खेती कर सब्जी का व्यवसाय कर रहे है और सप्ताहिक बाजार में प्रत्येक बाजार 1500 से 2000 रुपये कि कमाई कर लेते है। इस तरह उनकी आर्थिक स्थिती मे भी काफी बदलावों आया है, और उन्होने अपने कच्चे मकान को आप पक्का मकान मे बदल दिया है, इस न उनका आत्मविश्वास बढ़ा है और हर प्रकार कि आर्थिक चुनौती के लिए खुद को स्वावलंबी में बनाया है।

शीर्षक/कार्य : महिला स्वयं समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
रोशनी स्वयं सहायता समूह	गरजा	गरजा	सादर सिमडेगा	सिमडेगा

01 पुर्व की स्थिति

ग्राम गरजा जिला मुख्यालय से 8कि0मी0 दुर है। इस गाँव में कुल 14 टोला है तथा कुल 427 परिवार है।
पूरे झारखंड मे डायन प्रथा एवं अंधविश्वास में हर वर्ष कई महिलाओं की हत्या कर दी जाती है। गरजा में डायन प्रथा एवं अंधविश्वास को लेकर काफी परेशानी थी, इसी अंधविश्वास का शिकार रोशनी स्वयं सहायता समूह की महिला कमला देवी एवं सविता देवी को भी होने पड़ा जिन्हे सार्वजनिक हैन्डपम्प से पिने के पानी लेने से गाँव की कुछ अन्य महिलाओं ने उन्हें मना कर दिया। उनके साथ दुरव्यवहार किया गया, तथा उन दोनो के नाम से थाना में नामजद रिपोर्ट कर दिया गया। जिसमें उनके नाम से गलत–गलत अफवाह के तहत् डायन प्रथा का आरोप लगाया गया, उन्हे पुलिस पकड़ सिमडेगा पुलिस मुख्यालय में ले, उनके बच्चे को भी साथ ले जाया गया।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

जेटीईएलपी परियोजना के तहत गठित रोशनी स्वयं सहायता समूह ने इस समस्या का सामना करते हुए अपनी समूह की दीदी को इस परेशानी से मुक्त करने के लिए एकजुटता दिखाई।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

समुह की एक दिदि रोजालिया कुल्लु के नेतृत्व में गाँव के अन्य समूह के महिलाओं से से बातचित करके कुल 40 से ज्यादा महिलाएं पुलिस मुख्यालय में गई और सारी बातों को झुठा बतया और पुलिस द्वारा उन्हे छोड़ दिया गया।
यह एकता और जागरूकता जेटीडीएस से जुड़ कर सभी महिलाओं मे रोजाना बैठक कर के आइए ,अब सभी महिलाओं मे आत्मविश्वास के साथ साथ उन पर होने वाली सामाजिक कुरीतियों के प्रति पूरे गाँव मे अंधविश्वास एवं भेदभाव को दूर करने के लिए कृत संकल्प है और लोगो मे जागरूक का कार्य कर रही है।

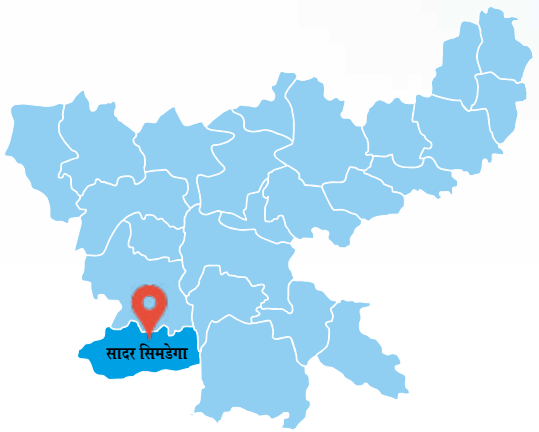

शीर्षक/कार्य : महिला स्वयं समूह

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
पायल महिला समूह	बड़कीछापर	पिथरा	सादर सिमडेगा	सिमडेगा

01 पुर्व की स्थिति

बड़कीछापर ग्राम सिमडेगा जिला मुख्यालय से 35 किलोमीटर स्थित है ,यह छोटा सा गाँव कुल 67 परिवार का है ,जो की उराओं एवं रौतिया जाती के लोगों से बना है। जिला के अन्य गाँव के अनुरूप यहाँ के लोग भी कृषि पर हे आधारित जीवनयपान करते है, दूसरे मुख्य आजीवीका पशुपालन एवं रोजगार के लिए पलायन करना आमतौर में देखा जाता है।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

पलायन जैसे गंभीर समस्या को देखते हुए 2015 मे जेटीडीएस द्वारा जेटीईएलपी योजना लाया गया जो की ऐसे समस्या को दूर करने के लिए कृषि एव पशुपालन आधारित गतिविधियों से ग्रामीणो के जीवनयापन मे सुधार ला पाये। इसी उदेश्य के साथ महिला समूह का गठन किया गया जिससे की महिलाएं बचत के साथ – साथ स्वयं के लिए रोजगार उत्पन्न कर आय में वृद्धि कर सके।

पायल स्वयं सहायता का गठन 2.3.2016 मे इसी उदेश्य से किया गया और सहयोग के रूप मे अब तक कुल 10000/– रुपये की बीज पूंजी जेटीडीएस द्वारा दिया गया है। सभी दीदियों को समय समय में नित्रित्व विकास , बैठक पुस्तिका, book & Keeping जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया।

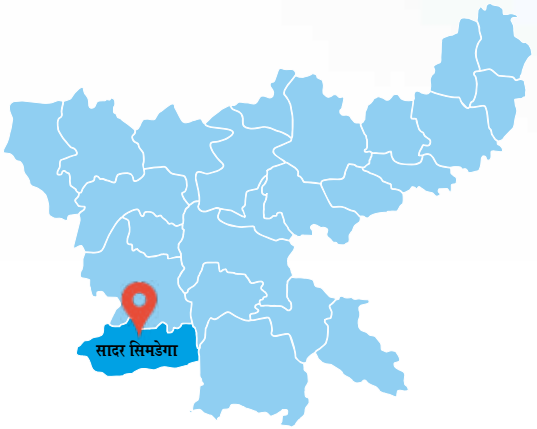

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

समूह की द्वारा पाँच सूत्र का पालन देखते हुए सुकर पालन हेतु प्रजनन केंद्र खोलने के निर्णय लिया गया , जिसे की न केवल बड़कीछापर गाँव लेकिन आस पास के सभी गाँव मे सुकर पालन जैसी व्यासाय को बढ़ावा मिलेगा। ऐसे केंद्र को चलाने के क्रम में चार दीदियाँ साफ सफाई, चार दीदियाँ सुकर के रखरखावों एवं, चार दीदियाँ बाजार संबन्धित गतिविधि एवं उनके दना पानी का खयाल रखते हैं। अब तक जेटीडीएस के माध्यम से टीएनडी प्रजाति के 6 सुकर 2 नर और 5 मादा सुकर दिलाया गया, जिसमें अब तक कुल 19 नए सुकर बच्चे से यह केंद्र बढ़ रहा है और आने वाले समय मे अच्छा मुनाफा एवं अजीवका में है सुधार की उम्मीद है।

झारखण्ड सरकार

JHARKHAND TRIBAL DEVELOPMENT SOCIETY

(A society of Scheduled Tribe, Scheduled Caste, Minority and Backward Class Welfare Department, Government of Jharkhand)

Dr. Ramdayal Munda Tribal Welfare Research Institute Campus,
Tagore Hill Road, Morabadi, Ranchi-834008
Website: www.jtdsjharkhand.org | E-mail: spd.jtds@gmail.com
Phone/Fax: 0651-2552088